श्री गुरु तेग बहादर साहिब विशेषांक

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४३
वर्ष ४ अंक १२ अगस्त 2011

संपादक : सिमरजीत सिंघ, *एम. ए, एम. एस. सी.*
सहायक संपादक :
सुरिंदर सिंघ निमाणा *एम. ए (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.*
जगजीत सिंघ *एम. एस. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ *(पन्ना ६३३)*

नौंवे पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब राग सोरठि में अंकित इस पावन शबद के माध्यम से अकाल पुरख परमात्मा के साथ एकाकार करने वाले विलक्षण सौभाग्य-जन के मुख्य गुणों की निशानदेही करते हुए मनुष्य-मात्र को दुर्लभ मानस-जन्म में इस रूहानी मंजिल को प्राप्त करने के लिए उसका आदर्श मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि परमात्मा से उस मनुष्य का ही एकाकार हुआ माना जा सकता है जो मनुष्य दुख की स्थिति में दुखी नहीं होता अथवा घबराता नहीं। ऐसा मनुष्य सुख के साथ लगाव ही नहीं रखता, उसके मन में डर भी नहीं होता; वह सोने को भी माटी करके मानता है अथवा संसार की दृष्टि में सबसे मूल्यवान वस्तुओं को वह स्थिर न रहने वाली समझता है।

परमात्मा के साथ एकाकार हुआ व्यक्ति किसी की बुराई करने से ऊपर होता है तथा वह स्वयं की दूसरों द्वारा स्तुति किये जाने की चाहत से भी बचा होता है। साथ ही उसमें लालच, लगाव एवं अहंकार भी नहीं होता। वह खुशी और गमी दोनों में ही निर्लेप रहता है अर्थात् समतोल बनाये रखता है। वह अपने सम्मान का इच्छुक नहीं होता और न ही किसी द्वारा अपमानित किये जाने अथवा अपशब्द बोले जाने पर दुख महसूस करता है। वह आशा तथा मनोकामना का परित्याग कर देता है और संसार से अर्थात् सीमा से बढ़कर सांसारिकता से उदासीन रहता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जो मनुष्य काम और क्रोध को हृदय में आने की अनुमति ही नहीं देता उस हृदय में परमात्मा का निवास होता है। जिस मनुष्य पर सच्चे गुरु की कृपा हो जाती है वही रूहानी मंजिल को पाने की ऊपर वर्णित युक्ति को पहचानता है। गुरु जी कथन करते हैं कि वह मनुष्य परमात्मा के साथ इस प्रकार लीन हो जाता है जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है अर्थात् उसमें तथा मालिक परमात्मा में तनिक-सा भी अंतर नहीं रहता। निष्कर्ष रूप में सतिगुरु के पावन कथनों का तत्व-सार यह है कि मनुष्य-जन्म में ही परमात्मा के साथ पूर्ण मिलाप हो सकता है। इसके लिए ऊंचे रूहानी गुणों का संचार करने का गुरमति मार्ग अपनाना होगा!

प्रेरणा-स्रोत बने धैर्य, संयम और दृढ़ता के गुणों से भरपूर नौवें पातशाह का लासानी जीवन

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब का सारा जीवन एक बेहद विस्मादी वृत्तांत है जिसे पढ़-सुन कर आश्चर्य-मंडल में पहुंचना स्वाभाविक है। यह जीवन पढ़ने-सुनने वाले को सद्गुणों की निर्मल प्रेरणा प्रदान करता है। गुरु जी के जीवन तथा व्यक्तित्व में विद्यमान अनेक गुणों में से धैर्य, संयम और दृढ़ता के गुण अधिक स्पष्ट रूप में परिलक्षित होते हैं। धैर्य एवं संयम जैसे गुण आपके पावन गुरगद्दी पर विराजमान होने से पूर्बले जीवन में विशेष रूप में प्रकट होकर हमें विस्माद में ले जाते हैं। ये गुण गुरगद्दी पर विराजमान होने के बाद भी आपके व्यक्तित्व तथा प्रकृति के साथ रहे। फिर भी यह स्मरणीय है कि जीवन के इस पहले चरण में आपने विशेष रूप से असीम धैर्य एवं संयम दिखाया। इतना हौंसला! इतनी सहनशीलता! इतनी अडोलता! मन की इतनी शांति! इतना समतोल! जब परिस्थितियां अति विकट, जटिल, दुष्वार तथा टेढ़ी-मेढ़ी हों, जब आस-पास में इन गुणों का अकाल पड़ा तो उन परिस्थितियों में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के धैर्य एवं संयम को पूर्ण समतोल में देखकर हैरानी होती है कि क्या कोई मनुष्य-मात्र ऐसी परिस्थितियों में भी अडोल तथा अडिग रह सकता है? आपने एक वृक्ष की भांति सब कुछ स्वयं पर सहन् कर लिया और सभी को सुहावनी छाया तथा मीठे फल ही बांटे, कभी असंतुष्टि महसूस ही न की। फिर इसका प्रगटावा कैसे करते? यह सहन्शीलता हमें और भी अधिक हैरान करती है जब हम पढ़ते-सुनते हैं कि जीवन के प्रारंभिक चरण किशोर आयु में उनमें शारीरिक बल तथा साहस भी कमाल का था। आप ने करतारपुर के युद्ध में अपूर्व साहस तथा बहादुरी दिखाई थी, इसी लिए तो गुरु-पिता ने आपको 'तेग बहादर' खिताब से निवाजा था। 'तिआग मल' नाम की जगह आप 'तेग बहादर' के साथ-साथ 'धर्म की चादर' तथा 'हिंद की चादर' के रूप में संसार में जाने-माने गए।

आपका जीवन-साथ माता गुजरी जी के साथ बना, जिनका व्यक्तित्व और पवित्र नाम की सुगंधि विश्व में फैली हुई है। परमात्मा ने इस दंपत्ति को ऐसा बाल 'गोबिंद' बख्शा जो मर्द अगंमड़ा, कलगीधर पातशाह, नीले दा सवार, बाजां वाला प्रीतम बनकर प्रकट हुआ। माता गुजरी जी के साथ जीवन-साथ बनने के बाद लंबे समय तक इस दंपत्ति को संतान की प्राप्ति न हुई। यह इस दंपति के धैर्य तथा संयम की एक बहुत कड़ी परीक्षा मानी जा सकती है। फिर जब संतान-प्राप्ति की उम्मीद बंधी तो सतिगुरु जी माता गुजरी जी को उनके भ्राता भाई किरपाल चंद की निगरानी में छोड़कर लंबी प्रचार-यात्रा पर चल दिये। राजाओं में संधि कराकर अन्य कई प्रकार से देश-कौम का कल्याण करते रहे। इतनी देर बाद हुए सपुत्र के जन्म का समाचार मिल गया परंतु फिर भी लंबे समय तक घर न लौट सके। जब प्रथम बार सपुत्र बाल गोबिंद राय को आकर मिले तो सपुत्र की आयु लगभग साढ़े तीन वर्ष हो चुकी थी। इतना धैर्य! इतना संयम! धैर्य तथा संयम की शिखर!

फिर धीरमल जैसे मंद इरादे वाले व्यक्ति के साथ गुरु जी का बर्ताव तथा व्यवहार भी उनके धैर्य एवं संयम की शिखर ही है। उसको गुरु जी का गुरगद्दी पर विराजमान होना अच्छा न लगा। शीहें मसंद द्वारा सतिगुरु जी पर जानलेवा आक्रमण कराया गया। परमात्मा ने आपके प्राणों की रक्षा की। आपने इस समय पर भी शांत स्वभाव ही कायम रखा। धीरमल ने लूटमार मचाई। भाई मक्खण शाह ने उसको उसके कुकर्मों का फल देना चाहा परंतु आपने भाई जी को रोक दिया। यहां तक कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बीड़, जिसे वह बलपूर्वक ले गया था, पुनः उसको वापिस लौटा दी, चाहे यह गुरु-घर की संपदा ही थी।

गुरगद्दी कोई सुख-सुविधाएं भोगने की चीज नहीं, यह तो महान जिम्मेदारियों को निभाने का दायित्व है। इस सरोकार को सम्मुख रखते हुए सतिगुरु जी ने गुरगद्दी पर विराजमान होते ही सिक्खी लहर को जन-कल्याण हेतु आगे बढ़ाने के लिए विशेष क्रियाशीलता दर्शायी। तत्कालीन बादशाह औरंगजेब धर्मांध तथा हठधर्मी था। वह भीतर ही भीतर आप जी द्वारा किये जा रहे सिक्खी प्रचार तथा जनचेतना की लहर से बेचैन एवं बौखलाहट में था। जब बादशाह ने लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता बिलकुल ही छीन ली तो कशमीरी ब्राह्मण हिंदू धर्म के प्रतिनिधियों के रूप में गुरु जी के पास अनंदपुर साहिब आये तथा अपना दुख रोये तो सतिगुरु जी ने उनका दुख तहेदिल से महसूस करते हुए उनके दुख अपने पर ले लिये। आपने अपने व्यक्तिगत लाभ-हानि का कभी ख्याल नहीं किया और धैर्य तथा संयम ही दर्शाते रहे। इस प्रश्न पर आपने हठधर्मी तथा धर्मांध बादशाह औरंगजेब को जुल्म करने से रोकने का संकल्प लिया। आपने दुखी ब्राह्मणों को कह दिया कि 'जाओ, बादशाह को कह दो कि पहले वो हमें (गुरु जी) मुसलमान बना ले, फिर हम सब (कशमीरी ब्राह्मण) स्वतः मुसलमान बन जाएंगे।' बादशाह आपके धैर्य एवं संयम में से विकसित इस दृढ़ता से अंजान था। उसे भ्रम था कि वह गुरु जी को मुसलमान बना ही लेगा। गुरु जी ने बादशाह को एक आदर्श शासक का दायित्व चेताया और बताया कि धार्मिक स्वतंत्रता लोगों का मूल अधिकार है। गुरु जी की दृढ़ता को विचलित करने के लिए उनकी आंखों के सामने उनके तीन अति प्रिय सिक्ख--भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी को निर्दयता के साथ शहीद किया गया, परंतु गुरु जी फिर भी अडोल रहे। गुरु जी का शीश चांदनी चौंक में उतार दिया गया परंतु उन्होंने अपनी दृढ़ता को कायम रखा। आपकी दृढ़ता से दी गयी कुर्बानी से बादशाह औरंगजेब द्वारा करवाया जाता बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन सचमुच रुक गया। आज यदि हिंदू धर्म अपना अस्तित्व रखता है तो मात्र गुरु जी द्वारा दर्शायी दृढ़ता तथा उनके अद्वितीय बलिदान का सदका ही। भारतवासियों को उनका यह परोपकार कदापि नहीं भूलना चाहिए। गुरु जी का धैर्य, संयम और दृढ़ता के गुणों वाला लासानी जीवन तथा व्यक्तित्व हम सबके लिए भी प्रेरणा-स्रोत बने! आज हम धैर्य, संयम और दृढ़ता जैसे गुणों से विहीन हो रहे हैं। असल में अवगुणों का परित्याग और गुणों को ग्रहण करना ही गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख का स्वाभाविक कर्म तथा दायित्व है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का गुणों के साथ मालामाल जीवन तथा व्यक्तित्व हम सबके लिए एक उज्जवल मीनार है। आओ! धैर्य, संयम तथा दृढ़ता के गुणों से भरपूर गुरु जी के जीवन तथा व्यक्तित्व को अपना प्रेरणा-स्रोत बनाते हुए सरबत्त का भला सुनिश्चित करें!

सलतनते नमह-पातशाही नौवीं : श्री गुरु तेग बहादर साहिब

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

सलतनते नहमश नौ आईनि तर
व सरवरे सरवराने हक्क परवर।

नौवीं पातशाही श्री गुरु तेग बहादर साहिब (आईनि-constitution-a book of rules for how to be governed) आईनि तर=सदाचार के नियमों के गुरु जी ख़जाना हैं। हक्क=इंसाफ, न्याय-पालना करने वाले सरदारों के सरदार हैं।

सलतानुल दुनीआ वल आख़िरत
व तख़त आरा ए इअज़ाज़ वल मुफाखिरत।

गुरु जी सुलतानुल=दुनिया संसार पर हकूमत (राज) करने वाले बादशाह नहीं बल्कि संसार की रूह यानि कि इंसानों के दिलो-दिमाग पर प्रभाव रखने वाले वल आखिरत=सबके ऊपर से हैं। आखिरत का मतलब यहां अंतिम नहीं बल्कि ऊंची से ऊंची ऊंचाई के वे आखिरत-अंतिम ऊंचाई हैं भाव यह कि गुरु जी बुलंदियों में से बुलंद स्थान के मालिक हैं और गुरु जी का तख़्त-स्थान सबसे ऊंचा है और सिफती तथा करामातें उनके दर्जे से कहीं नीचे हैं। यहां याद रहे कि सिक्ख दर्शन में करामात तथा निजी मानव सिफति-सलाह का कोई स्थान नहीं है। करामात को सिक्ख धर्म नहीं मानता। यह बात श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन तथा शहादत से भी जुड़ी हुई है। जैसे काजी ने गुरु जी से सवाल किया था कि "अगर तुम शक्तिशाली गुरु हो तो करामात करके दिखाओ।" गुरु जी का उत्तर था कि "करामात तथा सृजना अकाल पुरख के हाथ में है। अगर कोई आदमी करामात की बात करता है तो वह कपटी अथवा जादूगर या मदारी हो सकता है . . . और अगर ईश्वरीय-कृपा किसी पर है तो वह कृपा अथवा शक्ति चमत्कार दिखाने के लिये नहीं होती।" फिर काजी ने सवाल किया कि "फिर इसलाम कबूल कर लो।" इस पर गुरु जी का उत्तर था कि "क्या अल्लाह को एक ही हरा रंग पसंद है? क्या अल्लाह को एक ही विचार, जो इसलाम का है, वही पसंद है? अल्लाह ने हरे रंग के सिवाए दूसरे रंग पैदा ही क्यों होने दिये? अगर वे हो ही गये तो अल्लाह ने उन्हें नष्ट क्यों न कर दिया। तुम लोग आवाम को गुमराह कर अन्याय कर रहे हो।" इस पर काजी ने हुक्म दिया कि इनका सर कलम कर दिया जाए। दूसरे काजी का कहना था कि सर कलम मत करो। इससे इनका खून जमीं पर गिर जाएगा जिससे वह भयानक रूप धारण कर सकता है, क्योंकि मुझे ये आम आदमी नहीं कोई औलिया लगते हैं और औलिया का खून जमीं पर नहीं गिरना चाहिए वरना ऐसे हजारों विचारवान पैदा हो जाएंगे। बड़े काजी ने छोटे की बात ठुकरा दी और कहा, "ये कोई चमत्कार करके नहीं दिखा पाए, इसलिये इनका खून जमीं पर गिरने से कुछ नहीं होगा। इनका सर कलम इसलिये किया जाए कि इनकी सोचने की शक्ति का केंद्र 'सर' इनके जिस्म की शक्ति से छिन्न-भिन्न किया जाना जरूरी है। इनका

***१४-सी, रेस कोर्स रोड, श्री अमृतसर, मो : ९८१५१८८८१०*

मृत्यु-दंड केवल इनके जिस्म-ओ-जिहन को जुदा करता है। इस शख्स के जिस्म-ओ-जिहन एक साथ रहने से इसलाम को खतरा है। छोटे काजी ने फिर कहा कि इन्हीं के एक सिक्ख गुरु को लाहौर में उनके शरीर से बिना खून बहाए, शहीद कर दिया गया था। उनका खून भट्‌ठी पर बिठा कर सुखा दिया गया था। ये भी उसी लड़ी के गुरु हैं।" इस पर बड़े काजी ने फिर कहा कि "उन्होंने कुरान के बराबर किताब (श्री आदि ग्रंथ साहिब) लिखकर संसार के गुरु होने की कोशिश की थी। याद रहे कि मुहम्मद साहिब फरमा गये हैं कि उनके बाद संसार में और कोई पैगंबर पैदा नहीं होगा। मुहम्मद साहिब खुदा के आखिरी पैगंबर थे और रहेंगे। अन्य कोई किसी पुराने अथवा नये धर्म में ऐसा करने की हरकत करता है तो वह इसलाम को मंजूर नहीं। या तो उसे इसलाम कबूल करना होगा या उसे खत्म कर देना होगा। इसलिये बिना देरी के इनका सर कलम कर दिया जाए।" गुरु साहिब का सर कलम कर दिया गया। खून जमीं पर जा गिरा। जिस चमत्कार को काजी दिखाने के लिये कह रहा था वह अब होने लगा, रक्त-बीज पैदा होने लगे। एक रक्त-बीज उनका सर उठाकर ले गया, दूसरे रक्त-बीज ने उनका जिस्म उठाया और घर को आग लगा उसे सपुर्द-ए-आतिश कर दिया। देखते ही देखते हजारों की संख्या में रक्त-बीज पैदा होने लगे।

व सरवरे (सरदार) सरवराने (सरदारों) के हक्क इंसाफ की पालना करने वाले सरदारों के सरदार थे गुरु जी।

बावजूद कदरे कुदरते वाला
सर निहादहए तसलीम व रजा।

गुरु जी सरदारों के सरदार, तख्तों के मालिक, कदरे-कुदरते अकाल पुरख की क्रिया कुदरत के कद्रदान होने के बावजूद हुक्म-रजा, सर-निहादहए = अकाल पुरख के आगे सर झुका कर उसकी रजा को तसलीम-मंजूर करने वाले थे।

व पिनहां साजे अजमत व अजलाले कुबरा
अजमाइश गरे इरादत गुजी नाने बासफा।

गुरु जी अकाल पुरखी (खुदाई) हकीकतों और अच्छाइयों के रहस्य को अपने में छुपाए हुए हैं यानि कि अकाल पुरख का पूर्ण गुप्त ज्ञान गुरु जी में समाया हुआ है।

व जां परवरे अकीदत आईनाते बे रिपा
जबरुतीआं मुताअ लाहूतीयां इरतफाअ।

गुरु जी अच्छाई-बुराई की आजमाइश (पहचान) करने वाले हैं और बिना स्वार्थ साफ-सुथरे अच्छे लोगों को अपने पास रखने वाले हैं।

काइम बिलजाते हक्कुल कदीम
व दाइम नदीमे सुबहान-उल-अजीम।

सबसे ऊपर अकाल पुरख (खुदाबंद करीम) है। उसके (अकाल पुरख के) रास्ते के राही (अकाल पुरख के रास्ते यानी कि उसकी रजा में चलने वाले) और उसके संसार के लोग उन्हीं के कारण वहां कायम हैं जिसका आधार सच्चाई है। वह सुबहान है। सतिनाम, वाहिगुरु असल में ये शबद हैं, वाह! wonderous गुरु Master of my mind and body-thought and actions. गुरु जो 'वाह हे गुरु' जो मेरी देखने की सुरति से बाहर है। वह विशाल है। वह अद्‌भुत है जिसे मैं बयान नहीं कर सकता। मैं जान गया हूं मगर उसका पूरा ज्ञान नहीं कर पा रहा। वह सत्य और केवल सत्य है अथाह शक्तियों का मालिक है। मेरे पास उसे बयान करने के शब्द नहीं, भाषा नहीं, इसलिये मैंने

कहा, वाह! मगर यह 'वाह' कौन? मेरा 'गुरु' जो widest wondrous है, वह मेरा 'गुरु' है। 'वाह! हे' शब्द को जोड़ा गया 'तू' और 'तू' के पश्चात 'गुरु' और यह हमारे बोलने में उच्चारा जाने लगा। 'वाह! हे गुरु' की बजाए 'वाहिगुरु'। यह भी याद रखना चाहिये कि जिससे हम सबसे अधिक प्यार करते हैं या हमारा लगाव हो जाता है उसके लिए शब्द 'आप' खत्म जो जाता है और हम प्रयोग करते हैं 'तुम' या 'तू'। 'तू' शब्द अलग न होने वाले संबंधों के बीच प्रयोग होता है। 'वाहिगुरु' शब्द के बराबर का शब्द है 'सुबहान-अल्लाह'। सुबहान तेरी कुदरत, न बयान कर सकने वाला नजारा। पंजाबी-हिंदी और चालू उर्दू में 'सुबाहनुल' या 'हुसनुल' लिख दिया जाता है, मगर ध्यान रखा जाए कि यह शब्द अरबी से आया है और यह शब्द असल में यूं लिखा जाना चाहिए 'सुबहान-उल-अज़ीम', 'हुसन-उल-चराग' आदि और बोला भी इसे तोड़कर ही जाना चाहिए। इसे स्पष्ट इसलिये करना पड़ा क्योंकि जो कुछ सिक्ख धर्म के बारे में फारसी में लिखा गया वह एक बड़े सागर के बराबर है और उसमें ऐसे शब्द बार-बार आते हैं जिनकी सही जानकारी जरूरी है। हमारे पाठ में यहां भाई नंद लाल जी ने 'सुबहान-उल-अज़ीम' लिखा है, जिसे 'सुबहानुल' लिखा जा रहा है।

अफसरे बर गुजीदगाने खास व ताजे
हक्क परवराने हकीकत इखतसास।

जैसे सरकार का एक बड़ा अफसर (पदाधिकारी) सरकार की बात प्रजा तक और प्रजा के दुख-दर्द सरकार तक पहुंचाता है, उसी तरह अकाल पुरख की 'धुर की बाणी' संगत तक और संगत की बिरती तथा मानसिक रीझ (तमन्ना) का वाहन अकाल पुरख की रजा तक पहुंचाने वाले हैं और चुनिंदा भक्तों में वह प्रमुख सरदार-सतिगुरु है जिन पर अकाल पुरख का ज्योति प्रकाश सरताज गुरु जी के सर पर है।

ताए नामे मैमनत इलतियमश, तजईने तवक्कल व तसलीम
व याए फारसीअश यकीने कामिल-उल-अजीम।

यहां से आगे गुरु जी ने नाम में आए अक्षरों के आधार पर कि उन लफ्जों (अक्षरों) का क्या मतलब (भावार्थ) बनता है, बयान किया गया है। यहां यह ख्याल रखा जाए कि जैसे गुरु जी के नाम में अक्षर आए हैं और जो उन अक्षरों के साथ लगा-मात्राओं को लगाया गया है उन सबको भी बयान किया गया है, जैसे शब्द 'तेग' में त-मात्रा 'इ' तथा 'ग' तीनों का भावार्थ किया गया है। गुरु जी के नाम में आए अक्षर 'त' को मुबारक 'त' से तसलीम-हुक्म=रजा को मानना, मंजूर करना, तसलीम करना यानि कि सिक्ख को अकाल पुरख पर भरोसा कायम रखते हुए उसकी रजा में चलने से है।

मात्रा 'ए' (ॆ), जो फारसी-उर्दू भाषा में 'ये' लिखा जाता है, इस 'ये' की मात्रा से 'यकीनन', वाकिया ही इस मात्रा के प्रभाव से गुरु जी के नाम पर भरोसा (यकीन) करने का अमल बताता है।

काफे मुबारके अजमीअश
करीम-उल-नफसे सरापा हिलम।
बा बाए बा-हाईश बज़्म
आराए हदाइत व इलम।

गुरु जी के नाम में आया अक्षर 'ग' जो फारसी 'काफ' (क), मगर 'गाफ' की आवाज है, उससे भावार्थ बनता है 'करीम-उल-नफसे'। जैसे अकाल पुरख करता पुरख है वैसे ही खुदा अरबी में खुदाबंद करीम यानि कि कुदरत करतार है। कुदरत करती है, अल्लाह करवाता

है। वाहिगुरु करता पुरख है। इस तरह गुरु जी के नाम में शब्द 'ग' से भावार्थ हुआ कि गुरु जी इस सबके बावजूद 'सर' से (सरापा=सर से पा=पांव तक) हिलम=हलीम, सहनशीलता यानि कि अकाल पुरख की रजा में रहने वाले हैं।

गुरु जी के नाम में आए अक्षर 'ब' और 'ह' से बनता है, बजम आराए, हदाइत व इलम बजम-महफिल-संगत, हदाइत-सदाचार को प्रवान करना, जैसे कुरान के अलावा इसलाम में दूसरा दर्जा 'शरा' तथा तीसरा दर्जा 'हदाइत' का है, इस तरह यहूदिओं में उन्हें मूसा के अलाही फरमान को कहते हैं। सिक्ख धर्म में ये 'हुकमनामे' कहे जाते हैं। जैसे 'शरा' और 'हदाइतें' कुरान का हिस्सा नहीं हैं उसी तरह सिक्ख धर्म के 'हुकमनामे' भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भाग नहीं हैं, मगर इन्हें माना धर्म-ग्रंथ की तरह ही जाता है। इसी तरह गुरु जी के नाम में आए 'ये' अक्षर गुरु जी को सिखलाई और मान्यताओं के ज्ञान का सागर कह कर शृंगारते हैं।

अलफे हक्क मूलफश आराइशे हक्क इकां
व दाले एजदी जमालश दावरे कौन व मकां।
राए अखरश रमज शनासे राहे तरीकत
व हक्क असासे वाला हकीकत।

गुरु जी के नाम में आया अलफ यानि कि मात्रा (ा) (अ) इंसाफ और यकीन (निश्चय) से उसे शृंगार रहा है। उनके नाम में आया अक्षर (द) ('दाल' फारसी में) दोनों जहां (लोक-परलोक) में ईशवरीये दर्शन करवाने वाली है और गुरु जी के नाम का आखिरी अक्षर 'र' फारसी में (रे) 'रमज' यानि कि तरीकत के रास्ते की रमज की असलियत पहचानने वाली हकीकत का गुरु जी सच्चा रूप हैं।

वाहिगुरू जीओ सति = अकाल पुरख सत्य है।

गुरू तेग बहादर आं सरापा अफजाल
जीनत-आराइ महिफिलि जाहो जलाल।९९।
(गंजनामा)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब (सरापा) सर से पांव तक यानि कि सर सोचने का (पांव) जिस्म करने वाला गुरु जी (अफजाल) अच्छाइयों और जीवन के ऊंचे मियार के भंडार हैं और वे जीनत-आराए=ईश्वरीय नुहार से (महिफलि जाहो जलाल) और शानो-शौकत (अनवरि हक्क) सच्चाई और परमात्मा की स्तुति को यहां इस लोक में बढ़ा रहे हैं।

अनवारि हक्क अज वजूदि पाकिश रौशन
हर दो आलम जि फैजि फजलश रौशन।१००।

गुरु जी में अकाल पुरख ज्योति कारण (अनवरि हक्क) उनके वजूद से जो प्रभा (ललाट) पैदा हो रही है उससे दोनों जहां लोक-परलोक रोशन हो रहे हैं। इसका भाव इस प्रकार होगा कि अगर इस लोक के सभी जन अच्छे हो जाते हैं तो जब वे परलोक में जाएंगे तो परलोक भी अच्छा हो जाएगा। इस तरह गुरु-कृपा से अगर इस संसार का सुधार हो जाता है तो दूसरी दुनिया-परलोक स्वयं सुधर जाएंगे। इस तरह गहर गंभीरता से भाई जी को समझने की जरूरत है न कि छलांगें लगाते हुए पढ़ने की।

हक्क अज हमा बर-गुजीदगां बरगुजीदश
तसलीमो रिजा रा निकोसंजीदश।१०१।

अज हमा=सबसे, बर-गुजीदगां=चुनिंदा लोग, बरगुजीदश=मापदंडों के मुताबिक चुन लिये गये। तसलीमो-रजा=उसकी इच्छा के अनुसार मंजूर कर लिये गये। इसका भावार्थ यह हुआ कि अकाल पुरख ने चुनिंदा (खास-उम्दा=अच्छे) लोगों में से उन्हें चुना है यानि कि सैंकड़े साधू

आसन लगाकर बाबा बकाला में बैठ गये थे और अपने आप को आठवीं पातशाही श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बाद 'गुरु' घोषित कर गुरु-पदवी पाने की इच्छा बना बैठे थे। अकाल पुरख को जो मंजूर था उसके मुताबिक भाई मक्खण शाह के माध्यम से 'गुरु' प्रकट हो गये। उसने शोर मचा दिया, "गुरु लाधो रे" और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की अकाल पुरख द्वारा स्थापना कर दी गई। 'तसलीमो रजा' कि गुरु तेग बहादर साहिब की सहनशीलता यानि कि रजा को स्वीकार करने वालों में से सबसे ऊंचा पाया।

बर हर मुकबल कबूलि खुद अरजूदश
मसजूदुल आलमीं जि फजलि खुद फरमूदश।१०२।

कबूलि खुद=अकाल पुरख द्वारा स्वीकार कर लिये गये। बर हर मुकबल=तसलीम कर लिये गये लोगों में से। जि फजलि खुद=अकाल पुरख की कृपा से। मसजूदुल आलमीं=लोक-परलोक दोनों में से। फरमूदश=पूजा करने योग्य। इसका भावार्थ यह हुआ कि अकाल पुरख ने अपने पास प्रवान किये जा चुके चुनिंदा लोगों में से सबसे ऊपर स्थापित किया है . . . गुरु जी के आगे दोनों जहां को फरमूदश (सिजदा) करने को फरमाया है।

दसति हमा-गां बजैलि अफजालि ऊ
बसरि अनवारि इलमि हक्क कालि ऊ।१०३।

दसति=हाथ, हमा-गां=सभी का, बजैलि अफजालि ऊ=सरोपाऊ का लड़, जिसका भाव यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति का हाथ उनके दामन को छूकर मन की मुरादें (इच्छा-पूर्ति) पा लेने में तत्पर है। गुरु जी का एक स्पर्श सांसारिक लोगों का कल्याण कर देने के लिये काफी है और गुरु जी के शबद (गुरबाणी) संसार को अच्छाई और सच्चाई द्वारा उन्हें अकाल पुरख की दिव्य रोशनी से रौशन कर सकती है। गुरु जी की गुरबाणी सभी प्रकार की विद्याओं के नूर से ऊंची और उत्तम है।

पपीहे की पुकार

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

प्रभु के द्वारे, मिलते हैं सब सहारे।
बिगड़ी हुई तकदीर एक वही संवारे।
वे लोग होते हैं सभी के प्यारे,
जो लोग होते हैं प्रभु को प्यारे।
सच्ची श्रद्धा से जो आए प्रभु के द्वारे,
बुलंद हों उसके भाग्य के सितारे।
वाहिगुरु नाम जहाज है भक्तजनों!
भवसागर से यह पार उतारे।
आओ! प्रभुसागर में डुबकी लगाओ!
क्यों खड़े हो दुविधा के किनारे?
गुरु-दर्शन-सा सुंदर न कोई नज़ारा,
जिसके तुल्य फीके सभी नज़ारे।
श्री गुरु ग्रंथ साहिब को है 'गुरु' मानना,
श्री गुरु ग्रंथ साहिब सबके तारनहारे।
इसकी शरण में आने से दुख सब मिटें,
श्री गुरु ग्रंथ साहिब दुख निवारनहारे।
तन, मन, धन सब उसी को हम सौंप दें!
प्रभु ही हैं इस जगत के सिरजनहारे।
मेहरबान की मेहर के मेघ बरसें,
मन का पपीहा जब पीहू-पीहू पुकारे।

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन और व्यक्तित्व

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-चरित्र को भाई संतोख सिंघ ने "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" की रास ११ तथा १२ में वर्णन किया है। गुरु जी के गरिमामय जीवन की गुरगद्दी से पूर्व की घटनायें इससे पहले की रासों में दी गई हैं। रास ११ में बकाला से सम्बंधित घटनायें, अनंदपुर साहिब बसाये जाने का वृत्तांत तथा पूर्व की यात्रा का वर्णन है। रास १२ में गुरु जी की जीवन-गाथा, आसाम-यात्रा और वहां से लौटकर अनंदपुर साहिब निवास तथा दिल्ली में बलिदान पर केंद्रित है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन-चरित्र की रास ५ के उल्लेखनीय अध्याय ५३ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के श्री अमृतसर में जन्म लेने का वर्णन है। इस अध्याय से "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में वीर-रस का आरंभ होता है। रास ७ में बाबा सूरज मल की शादी के अवसर पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब की सगाई श्री लाल चंद खत्री की कन्या से किये जाने का वर्णन है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के विवाह का वृत्तांत रास ८ के आरंभ के अध्यायों में है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने करतारपुर के युद्ध में भाग लिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आशीर्वाद दिया :

अजर जरन जग धीर धुरंधर।
इस मानिंद न को जग अंदरि।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के परलोक-गमन के बाद माता नानकी जी के साथ गांव बकाला में रह रहे थे। रास ११ के प्रथम २० अध्यायों में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की वैराग्यमयी वृत्ति और गुरगद्दी के सम्बंध में पावन व्यवहार की सुंदर झांकियां भाई संतोख सिंघ ने प्रस्तुत की हैं। गुरु जी ने माता जी के आग्रह पर गुरगद्दी की रस्म द्वारका दास के द्वारा किया जाना स्वीकार कर लिया, किंतु सार्वजनिक प्रसिद्धि के लिए तैयार नहीं हुए। भाई मक्खण शाह की श्रद्धा के सामने श्री गुरु तेग बहादर साहिब साक्षात्कार के लिए विवश हो गए :

शरधा श्री हरिक्रिशन बाक परि।
प्रान तजन को साहस इम करि।
जो न बतावहिगे इस ताई।
होइ निरास को संकट पाई ॥३३॥

भाई मक्खण शाह ने गुरु जी से सभा में दर्शन देने का निवेदन किया। भक्त (हरि-जन) अपने इष्ट हरि से वांछित फल प्राप्त करते हैं। प्रभु महान कामों को संवार देते हैं। यह नियम गुरु और सिक्ख पर भी लागू होता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भाई मक्खण शाह के अनुरोध पर सिक्ख की प्रेम-डोर से बंधना स्वीकार किया। भाई मक्खण शाह को इससे आनंद हुआ :

निज भगतनि सुख देवनि कारनि।
संसै अपदा महद बिदारनि।
स्री प्रभु आप धरहि अवतारा।
निज दासनि के मन अनुसारा ॥४७॥

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६, फोन : ०५३२-२६५७९६९*

महद करम को करहि बनाइ।
हरि ते हरिजन बांछा पाइ।
तिम सतिगुर के घर महिं अहै।
पूरन करहिं सिक्ख जो चहै ॥४८॥
प्रेम डोर ते बंधनि होइ।
किरत करहिं जिम बांछहि सोइ।
इम गुरु तेग बहादर मानी।
अति अनंदता मक्खण ठानी ॥४९॥ (रास ११/९)

भाई मक्खण शाह की घोषणा ने धीरमल और उसके मसंद शीहा के विरोध को भड़काया। शीहा मसंद ने २५ सैनिक लेकर गुरु जी पर गोली चलाई। भाई मक्खण शाह ने शीहा मसंद को दंड दिया। ताड़ना के बाद भाई मक्खण शाह गुरु जी के सम्मुख उपस्थित हुआ। गुरु जी शांत मुद्रा में थे--*"करुणा भरे विलोचन रूरे। आसन पर बैठे गुरू पूरे।"* गुरु जी ने भाई मक्खण शाह को मन के उद्वेगों पर संयम बरतने का उपदेश दिया। व्यापक परिभाषा में काम से अभिप्राय सभी प्रकार की लालसा (सकल चाह) है जो क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार जैसे विकारों का मूल है। कामनाओं के निरसन से अवगुण दूर होंगे और सद्‌गुण प्रवेश करेंगे :

जबहि मूल को देहिं उखेर।
शाखा पत्र न फल है फेर।
इम अवगुन उर ते परहरै।
सदगुन आनि प्रवेशनि करैं ॥४२॥

(रास ११/१७)

गुरु जी ने भाई मक्खण शाह को शीहा को क्षमा करने का उपदेश दिया :

करनी छिमा महां तप जान।
छिमा करनि ही दैबो दान।
छिमा सकल तीरथ अशनान।
छिमा करति नर की कलिआन ॥४३॥
छिमा समान आन गुन नांही।
यां ते छिमा धरहु मन मांही।
सद गुन को नहिं त्यागनि कीजै।
सदा रिदै महिं इसथिर कीजै ॥४४॥

(रास ११/१७)

धीरमल की वस्तुएं लौटा दी गईं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का उदात्त चरित्र देख कर माता नानकी जी को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का वचन याद आया कि वीत राग रहित श्री गुरु तेग बहादर साहिब का तेजस्वी पुत्र होगा।

'बकाला' प्रसंग के अंत में धीरमल के पश्चाताप का चित्र है :

पशचाताप करति बहु बारी।
सोचति संकट प्रापति भारी।
इम बिरलापति बहुत बिसूरति।
अचल रहति जनु चित्री मूरति ॥३९॥

(रास ११/२०)

बकाला-विवाद के बाद गुरु जी श्री अमृतसर दर्शन करने गये। गुरु जी ने मसंदों के कपट को पहचाना। कवि भाई संतोख सिंघ ने श्री अमृतसर का विग्रह 'अमृत सरोवर' न करके थोड़े परिवर्तन से मसंदों के सम्बंध में 'अंतर सर' रूप में किया। गुरु जी वस्तुतः दुख व्यक्त कर रहे थे कि अमृत के सर के इतने करीब रह कर भी ये लोग अपनी अंतरात्मा को स्वच्छ नहीं कर पाये।

गुरु जी ने धीरमल को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ भी लौटा दी। धीरमल के हृदय में गुरु जी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। यदि सिक्ख के मन की सीपी में गुरु-यश पड़ जावे तो वह स्वाति नक्षत्र की बूंद के समान मोती बन जाता है:

गुर जसु स्वांती बूंद समान।
सिख मन सुकता परहि जि आन।
मुकता अनंद अमोलक होइ।

दारिद चिंता सभि दे खोइ ॥३७॥ (अध्याय २५)

गुरु जी लौटकर अनंदपुर साहिब के स्थान पर आये। भाई मक्खण शाह को विदाई दी गई और अनंदपुर साहिब बसाया गया।

अनंदपुर साहिब बसाने के बाद अध्याय ३३ से ४५ तक श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पंजाब (वर्तमान हरियाणा सहित) यात्राओं का वर्णन है। यात्रा के विविध प्रसंगों में पंजाब के लोक-जीवन की झांकी के रोचक प्रसंग हैं।

यात्रा के आरंभ में मूलोवाल ग्राम में पेय-जल व्यवस्था किये जाने का वर्णन है। ग्राम हडियाणा में रोग निवारण का उल्लेख है। ग्राम भिखी में देसराज या देसू के अंधविश्वास के खंडन की गाथा है। देसराज गले में सरवर की खूंडी (छड़ी) लटकाए रहता था। गुरु जी ने उसे पांच तीर दिये जिससे उसकी कृषि में समृद्धि हुई। देसू की पत्नी ने पुन: खूंडी बंधवा दी। देसू की भूमि पुन: क्षारीय हो गयी, उसके कुल का नाश हो गया।

गुरु जी के ध्यान में पशुओं से भी सद्‌व्यवहार सुनिश्चित करना था। बांगर में ग्राम धमधान में गुरु जी ने भैंस का दूध लौटा दिया, क्योंकि लोग कठोर हैं और जानवरों पर जुल्म करते हैं :

बैठनि देति नहीं सो तरे।
मूड़ी दीनि गोडबो करे।
तबि तिस ने तर दुगध उतारा।
दुहि आन्यो मैं तबि ही सारा ॥४४॥

(अध्याय ४१)

धमधान ग्राम में सोहने कृषक के पुत्र नंदलाल को जल-सेवा के कारण आरोग्य प्रदान किया। गुरु जी आगे चलकर कैथल रुके। एक बढ़ई के पास रहकर एक वृक्ष लगाया। उस स्थान पर गुरुद्वारा साहिब स्थित है जिसमें भाई संतोख सिंघ को कालांतर में गुरु-यश कहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ :

तिस कैंथलपुरि महिं कवि बसै।
गुरजसु करति रहयो अघ नसै ॥४२॥

(अध्याय ४३)

कैथल से चलकर गुरु जी ने बारने के कृषक से तंबाकू छुड़वाया। कवि ने वहां जाकर उस वंश की स्थिति का पता लगाया। बारने से गुरु जी थानेश्वर मेला पहुंचे। बनी बदरपुर में कूप बनवाया।

निकटवर्ती क्षेत्रों की यात्रा के बाद पूरब की संगत के आग्रह पर गुरु जी की पटना तक की यात्रा का वर्णन रास ११ के अंतिम अध्यायों में है। यमुना के पश्चिमी क्षेत्र से ६०० किलोमीटर दूर वर्तमान इलाहाबाद जनपद में कड़ा नाम का स्थान है जो अकबर के समय में कड़ा प्रांत का मुख्यालय था। निर्गुण मत का संत मलूक दास कड़ा निवासी था। कड़ा से गुरु जी त्रिवेणी गए। प्रयाग में उन्होंने छ: मास निवास किया। इस अवधि में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश सम्बंधी सूचना हेमकुंड में तपस्या-माध्यम से दी गई है।

प्रयाग से गुरु जी काशी तथा काशी से सासाराम पहुंचे। सासाराम में चाचा फागू (फागो) के घर में रुके। फागू गुरु जी का श्रद्धालु था। उसने अपने भवन में बड़ा गेट बनवाया जिससे गुरु जी सवारी सहित अंदर जा सकें। फागू के उपवन में एक बेर का पेड़ था। भाई संतोख सिंघ ने बदरी बेर के पेड़ का आख्यान मनोरंजक रूप से दिया है। बेर की गुठली एक महिला द्वारा उपहार में दिये कूड़े से प्राप्त हुई :

जे करि छूछा गमनति नांहि।
कूरा परयो अजर ले जाहि।

अपर कहां देवौं तुम हाथ।
ल्याइ कमाइ न घर को नाथ ॥१२॥
मैं सुनि बिनै कीनि:- तबि एहो।
रिदे भावना सों तुम देहो।
भरि अंजुल रिस ते उर पूरा।
मम अंचल संग बांध्यो कूरा ॥१३॥
सो मैं तिसी रीति ले आयो।
ग्रिह महिं खोल्यो अवनि गिरायो।
तिस महिं एक परी मैं हेरी।
बदरी फल की गिटक बिडेरी ॥१४॥
सो मैं इहां बोइ करि दीनि।
तिस ते बदरी को तरु चीनि।
तुम अंतरजामी सभि जानी।
कार आप की इहै निशानी ॥१५॥ (अध्याय ५६)

गुरु जी सासाराम (बिहार) से गया होते हुए पटना पहुंचे। पटना में परिवार छोड़कर आसाम की यात्रा पर गये जिसका वर्णन रास १२ में किया गया है।

आसाम-यात्रा की पृष्ठभूमि में मुगल सम्राटों की कूटनीति का वर्णन है। अकबर के समय में जोधपुर नरेश मान सिंह को आसाम-विजय का कार्य सौंपा गया था, जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। औरंगजेब के समय में मान सिंह के पौत्र बिशन सिंह को यह कार्य सौंपा गया। बिशन सिंह ने अपनी पत्नी की प्रेरणा से गुरु-घर की शरण ली। गुरु जी ने उसके अनुरोध को स्वीकार किया तथा वे ढाका की यात्रा के बाद आसाम गये।

आसाम के राजा ने युद्ध की तैयारी की। गुरु जी ने राजा बिशन सिंह की सेना को बाढ़ में बहने से बचाया। फिर आसाम के राजा ने मंत्र-शक्ति से परास्त करने का यत्न किया। गुरु जी ने एक पेड़ पर मंत्र की अधिष्ठात्री धोबिन को देखा तथा उसे प्रभावहीन कर दिया। धोबिन ने गुरु जी पर तुर्क राजा की सहायता का आरोप लगाया। गुरु जी ने अपने को शरण-वत्सल बतलाया। उन्होंने धोबिन को स्थायी निवास का सुझाव दिया :

बसि हैं अपर लोक समुदाइ।
तोहि नाम पर ग्राम बसाइं।
जग महिं कीरति तेरी रहै।
जबि लगि ग्राम बसति थल अहै ॥२३॥ (अध्याय ८)

आसाम की देवी ने राजा को गुरु-शरण लेने की प्रेरणा दी तथा वह गुरु जी की शरण में आया। गुरु जी ने अपनी कृपा से उसे कृत-कृत्य कर दिया :

सुनि बिनती गुर भए क्रिपाल।
ले दसतार आप कर नाल।
न्रिप के सीस धरी जिस काला।
जागे जिस के भाग बिसाला ॥७॥
मोह भरम के जटति कपाट।
छुटक गए भा औरै ठाट। . . . ८॥
(अध्याय १०)

गुरु जी ने रतन राय को आशीर्वाद दिया। विजय के साथ गुरु जी को पटना से पुत्र-जन्म (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) का भी समाचार प्राप्त हुआ। पटना में पुत्र-जन्म के समाचार के साथ रास १२ के १२ अध्यायों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाल-जीवन का काव्यमय वर्णन है। यथा-समय गुरु जी पटना पहुंचे। साथ में राजा बिशन सिंह भी थे। उन्होंने अपने हाथों से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को रत्न-जड़ित कंगन पहनाये। राजा को विदाई दी गई। गुरु जी परिवार छोड़कर अनंदपुर साहिब के लिए विदा हुए। माता नानकी जी भावविह्वल हैं। वे विदाई के समय आशीष देना चाहती हैं, अत: आंसू गिराने से अपने को बरबस रोक रही हैं :

बारि बारि सुत को मुख देखि।
बिछुरयो चहै न प्रेम विशेख।
आशिख देती पौर थिरी है।
चहति श्रेय, नहिं अश्रु ढरी हैं ॥२५॥

(रास १२/२६)

गुरु जी कीरतपुर साहिब में बाबा गुरदित्ता जी और बाबा सूरज मल जी से मिलकर अनंदपुर साहिब पहुंचे। कीरतपुर साहिब में गुलाब राय और श्याम दास को गहने अर्पित किये।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पारिवारिक जीवन से कथा का मोड़ औरंगजेब की कट्टरता की ओर बढ़ता है। कशमीर के ब्राह्मणों ने कशमीर के सूबेदार शेर अफगान से धर्म-परिवर्तन पर निर्णय लेने के लिए छ: महीने की अवधि मांगी। फलत: राजौरी और भिंबर के ब्राह्मण गुरु जी से मिलने आये।

उधर दिल्ली से दो सैनिक बुलाने आये। गुरु जी चार महीने पटियाला के पास सैफाबाद रहे। समाणा गढ़ी में रहने के बाद करहाली और चिहका गये। गुरु जी खटकर और जींद होते हुए आगरा पहुंचे। आगरा में कोतवाल ने हिरासत में लेने का नाटक किया और सुरक्षा-व्यवस्था में गुरु जी को दिल्ली लाया गया। दिल्ली में गुरु जी को एक भुतही हवेली में रखा गया। गुरु जी पिंजरे के अंदर बंद किये गए। वे इच्छानुसार पिंजरे से अंतरध्यान हो जाते थे। पहरेदारों की भी उन पर श्रद्धा थी। गुरु जी में वैर-भावना नहीं थी। जो-जो अपने धर्म का पालन करेगा वही उत्तम गति को प्राप्त होगा :

पूरब हिंदू तुरक जग दोइ।
अबि ते तीन जानीए होइं ॥३५॥ . . .
निज निज धरम राखही जोइ।
उत्तम गति सो प्रापति होइ। . . . ३८॥
होइ न एको, दोइ न रहै।
बनहिं तीन, पुन थिरता लहैं ॥४१॥

(अध्याय ४८)

गुरु जी ने अनंदपुर साहिब में संदेश भेजा और नौ गुरु साहिबान की ज्योति को अपने सपुत्र में उदय किया :

नौ तन महिं जो बरती जोति।
सुत महिं करी प्रवेश उदोत। . . . ४२॥

(अध्याय ६३)

गुरु जी की शहादत सम्पन्न हुई :

मग्घ्र पंचमी सुदी पछानहुं।
सुरगुरवार तबहि पहिचानहुं ॥३५॥
संमत सत्तरां सै बत्तीसा।
भाणा वरतायो जगदीशा।
सीस दीयो पर सिरर न दीना।
धरम सु राख्यो सरब प्रबीना ॥३६॥

(अध्याय ६५)

गुरु जी ने सचखंड प्रवेश किया। उनका शीश अनंदपुर साहिब भेजा गयाा। एक सिक्ख ने धड़ का संस्कार किया। भयग्रस्त औरंगजेब के वर्णन के साथ रास १२ का समापन होता है।

सूचना : 'गुरमति ज्ञान' के कुछ लेखक साहिबान, जहां वे सेवारत हैं, केवल वहां का ही पता अपनी रचनाओं में दे देते हैं। ऐसा करना 'गुरमति ज्ञान' की नीतियों के अनुसार उचित नहीं है। लेखक साहिबान से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाएं भेजते समय उसमें अपने घर का पूरा पता, पिन कोड तथा टेलीफोन/मोबाइल नंबर सहित अवश्य लिखा करें। -संपादक।

"तवारीख गुरू खालसा" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब सम्बंधी विवरण

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

दुनिया के इतिहास में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का व्यक्तित्व अद्वितीय है। सिक्ख धर्म अध्ययन के स्रोतों में उनको 'जगत की चादर' माना जाता है। भारतवासी उनको 'हिंद की चादर' के रूप में स्मरण करते हैं। नवम पातशाह ने सेवा, सिमरन, भक्ति तथा परोपकार के बेमिसाल कीर्तिमान स्थापित करते हुए गुरु नानक साहिब द्वारा आरंभ किये मिशन का प्रचार भारत भर में किया। अंत में उसी मिशन की पूर्ति हेतु उन्होंने दिल्ली के चांदनी चौंक में अपना शीश दे दिया। उनकी शहादत का वर्णन करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कहते हैं :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥ . . .
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपना शीश देकर अपने उसूलों पर चलने का प्रण निभाया। उन्होंने मानवता को संदेश दिया कि यदि धर्म की भावना को जीवन में दृढ़तापूर्वक धारण कर लिया जाए तो जब्र तथा जुल्म करने वाले कभी भी अपने मंद इरादों में सफल नहीं हो सकते। आप जी ने लोगों को एक नई दृष्टि प्रदान की कि शुभ कार्यों के लिए आपा कुर्बान करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए तभी अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध सफलता प्राप्त हो सकती है। गुरु जी के जीवन से प्रभावित होकर सिक्ख और गैरसिक्ख लेखकों ने बहुत कुछ लिखा। यहां ज्ञानी गिआन सिंघ द्वारा लिखित "तवारीख गुरु खालसा" में प्रस्तुत गुरु जी के जीवन एवं व्यक्तित्व के बारे में जानने का प्रयास किया जा रहा है।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के व्यक्तित्व का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। गुरु साहिब बालपन से ही निर्लेप वृत्ति के धारक थे। गुरु-घर की निर्मल उक्ति *"थोड़ा सवणा खावणा थोड़ा बोलनु गुरमति पाए"* का सहज प्रकटावा उनके व्यक्तित्व द्वारा होता था। गुरु जी को खान, पान, पहिरान, मान का कभी ख्याल तक न आता था। सेवक प्रसाद लाकर रखते। गुरु जी को कई-कई बार कहते, तो ही वे छकते तथा प्रभु के प्रेम में ही मस्त बैठे रहते। दुनियादारी के कार-विहार उनके चित्त में कभी न आये थे। शीत, गर्मी, दुख, भूख, प्यास आपने कभी नहीं मानी थी। मायक पदार्थ कोई न भाता था। माया से निर्लेप रहते तथा निरभउ और निरवैर जीवन-युक्ति इनके जीवन का हिस्सा थी।

जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने इनको गुरगद्दी सौंपी तो बाबा बकाला में कितने तथाकथित 'गुरु' सामने आये थे। आप जी शांतचित्त रहे। आपने ज्ञान का प्रकटावा सहज स्वभाव ही किया, जब गुरु की खोज में लगे भाई मक्खण शाह ने सच्चे गुरु के ढूंढे जाने का ऐलान कर दिया। धीरमल और उसके साथियों ने गुरु जी को नीचा दिखाने और मारने तक का यत्न किया। भाई मक्खण शाह (लुबाणा)

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

तथा अन्य सिक्खों ने यह सब सफल न होने दिया। लेखक बताता है कि *"शींहे दुशट ने ओस निरवैर, सतपुरख, ब्रहम गयानी, दया दे सागर सच्चे सतिगुरू उत्ते बंदूक चलाई जो मत्थे दे पास जरा कु निशान करके गोली कंध विच जा धस्सी। तद भी शांती दे भंडार सत्त धरम दे रक्खयक गुरू जी ने कौड़ा बचन ना कीता। बंदूक चली दे मगरों माता नानकी जी नूं खबर होई। ओनां शींहे नूं वेख के रौला पाइआ तां होर सिक्ख आए ते लुटेरे लोक पदारथ लुट्ट के धीरमल्ल समेत राह पए, मक्खण शाह, जो पिंडों बाहर उतरिआ होया सी, एह खबर सुण के आपणे आदमी ते सिक्खां नूं लै के झट्ट चढ़ बैठा। धीरमल्ल नूं दौड़ के जा रोकिआ, मामे क्रिपाल चंद, गुरदित्ते, लालचंद, मक्खण शाह आदिक गुरू के बहादरां ने तीरां गोलीआं दी अजेही बरखा कीती जो धीरमल्ल सहि ना सकिआ, घोड़ा भजा के निकल गिआ। भला फेर सरदार बिना कौण लड़े, ओसदे आदमी नट्ठ गए। गुरू के सिक्ख समेत श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी, दे सभ सामान ओन्हां दा धूह लिआए, पर जद गुरू तेग बहादर जी ने एह सुणिआ तां ओनां ने मक्खण शाह ते क्रिपाल चंद नूं कहि के धीरमल्ल दा सभ सामान मुड़ा दित्ता।"*

इस प्रकार किसी भी स्थिति में लूट-खसूट न करना और न ही सिक्खों को इसकी अनुमति देना गुरु जी के व्यक्तित्व में से धर्मी होने के तथा न्यायशीलता के गुणों का प्रकटावा करता है। लेखक बताता है कि इस घटना से *"गुरू साहिब दी महिमा जगत विच चंद दी चानणी वांङूं बड़ी छेती प्रकाश हो गई, जिस करके दूरों-दूरों संगतां गुरां दे दरशनां नूं उमड़-उमड़ के मेघां दी तरां आउण लग्गीआं। जेठ हाड़ दी तिहाई ते तपी होई धरती वांङूं संगत दे तन मन विच गुरू जी दे अंम्रित उपदेश दी बरखा ने, जो उन्हां दे शबदां सलोकां तों सिध है, ठंड पा दित्ती।"*

सति, संतोष, दया, क्षमा, नम्रता, सेवा, संयम और परोपकार धर्म के अंग माने गए हैं। धर्मी पुरुष हरेक स्थिति में धर्म के इन गुणों का पालन करता है। जो संकट के समय नैतिक आदर्शों का पालन करते हैं वे समाज के लिए रोशनी के मीनार का रूप धारण कर जाते हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म के इन गुणों की प्रतिमा थे। उनका सारा जीवन निरभउ और निरवैर रहने का संदेश देता है। इस संदेश का प्रकटावा करते हुए गुरु जी कथन करते हैं:

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
(पन्ना १४२७)

निरभउ और निरवैर रह कर उन्होंने समूह धर्मों को मानने वालों को गले लगाया, संकट आने पर उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने धर्म की भावना को बचाने के लिए अपना आप कुर्बान कर दिया। उन्होंने धर्म के गुणों को अपने जीवन में सदैव उजागर किये रखा।

गुरु जी के समय मुगल बादशाह औरंगजेब का राज्य था। उसने बादशाह बनते ही भारत में बस रहे विभिन्न धर्मों के लोगों को एक-मजहबी राज्य बनाने का यत्न आरंभ कर दिया था। समय के आगे चलते इसमें तीव्रता आ गई थी। लेखक लिखता है कि उसने भारत पर मुहम्मदी झंडा फहराने में कोई कमी न रहने दी। उसने ऐसी योजना बनाई कि दूसरे धर्मों को मानने वाले इसलाम स्वीकार कर लें नहीं तो उम्र भर मुसलमानों की गुलामी करने के लिए तैयार रहें। बादशाह की इस नीति के पांच भागों का वर्णन करता हुआ लेखक लिखता है :

१. सिविल और सैनिक कामों में बिना मुसलमान के ओहदा किसी को न दिया जाए।

२. नंबरदारी तथा जमींदारी मुसलमानों के बिना किसी अन्य के पास न रहे।
३. जजिया लगा दिया गया।
४. हिंदुओं का शास्त्र पढ़ना, पूजा-पाठ करना, तीर्थ-यात्रा आदि सब बंद किये गए।
५. जो इन यत्नों के साथ तुर्क नहीं हुए उनको अब बलपूर्वक मुहम्मदी करने का हुक्म चढ़ा दिया गया। मौत से डरते अनेकों गांव सारे के सारे मुसलमान हो गए थे। पूरे भारत में अब गैर-मुसलमानों पर जब्र व जुल्म की आंधी चल पड़ी थी। वे बिलख रहे थे, धर्म-स्थानों पर जाकर पूजा-अर्चना कर रहे थे कि ऐसी करामात हो जाए कि वे धर्म-परिवर्तन से बच सकें।

कश्मीर के विश्वासी पंडितों ने इस कार्य के लिए अमरनाथ जाकर मंदिर में यज्ञ-हवन करने आरंभ कर दिये परंतु कोई शक्ति प्रकट न हुई। अंत में पंडित किरपा राम की अगवाई में लगभग पांच सौ ब्राह्मणों का एक जत्था अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में आ उपस्थित हुआ और बचाव के लिए विनती की।

गुरु साहिब उनके बचाव के लिए सोच ही रहे थे तभी उनके सपुत्र बाल श्री गोबिंद राय (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) गुरु-पिता जी के पास आ गये। उन्होंने उनसे गहन सोच में पड़े होने का कारण पूछा। गुरु जी ने बताया कि "इन फरियादी ब्राह्मणों का बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन किया जा रहा है जिसको किसी सत्य-पुरुष के बलिदान से ही रोका जा सकता है।" इस घटना को बाल गोबिंद राय जी की परख के रूप में भी देखा जाना चाहिए। बाल गोबिंद राय जी ने कहा, "पिता जी! इस समय आप से बढ़ कर और कौन धर्मात्मा तथा सत्य-पुरुष हो सकता है?" लेखक बताता है कि "गुरु जी ने अपने सपुत्र को सभी प्रकार से लायक तथा प्रभु की रज़ा पर दृढ़ भरोसा रखने वाला पूरा पुरख देख-जांच कर ब्राह्मणों को तसल्ली देते हुए कहा कि आप जाओ औरंगे के पास। उसे इस प्रकार की विनय-पत्र दो कि "हमारे गुरु पीर गुरु तेग बहादर जी हैं। यदि आप उनको मुहम्मदी बना लें तो फिर हम सब स्वत: ही मुहम्मदी दीन स्वीकार कर लेंगे और यदि वे मुहम्मदी न हुए तो फिर हमें भी क्षमा करें।" उन लोगों ने बहुत जल्दी पंजाब के हाकिम जालिम खां के पास विनय-पत्र दे दिया।

जब यह विनय-पत्र हाकिमों तक पहुंचा तो गुरु जी को गिरफ्तार करने का हुक्म हो गया। गुरु जी गिरफ्तारी से पूर्व जनसाधारण के मनों में जब्र तथा जुल्म के विरुद्ध दृढ़ता पैदा करना चाहते थे। इस कार्य के लिए गुरु जी मालवा के उपक्षेत्र में चले गए। लेखक गुरु जी के वहां जाने का विशेष कारण देता हुआ कहता है कि श्रद्धा में रमी हुई एक माता भागो ने बहुत ही प्यार सहित एक थान कपड़ा बुना हुआ था और स्वयं गुरु जी के दर्शन करके उनको वह थान भेंट करना चाहती थी। इस माता की स्मृति में 'गुरुद्वारा माईथान' आगरा में सुशोभित है। वहां जाने का दूसरा विशेष कारण लेखक यह बताता है कि हकूमत ने गुरु जी को पकड़ने के लिए एक हजार रुपये का इनाम रखा हुआ था और वहां रहने वाला एक बुजुर्ग सैयद हसन अली यह इनाम लेने का इच्छुक था ताकि उसकी वृद्धावस्था अच्छी प्रकार से बीत जाए। कुछ समय पहले इस नगर में जाकर गुरुद्वारा माईथान, हाथी घाट, दमदमा साहिब और गुरू का ताल आदि स्थानों को देखने का अवसर मिला तो ज्ञात हुआ कि वहां की स्थानीय परंपरा में उपर्युक्त साखियां आज भी प्रचलित

हैं। लेखक गुरु जी का आगरा से गिरफ्तार होना बताता है।

गुरु जी को गिरफ्तार करके दिल्ली ले जाया गया। इस समय भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी भी उनके साथ थे। दिल्ली में गुरु जी सहित समूह सिक्खों को धर्म से डोलाने का यत्न किया गया परंतु हकूमत अपने मंसूबों में सफल न हो सकी। पहले इन सिक्खों को और फिर गुरु जी को यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। सब ने शहीद होना स्वीकार किया परंतु धर्म की भावना और दृढ़ता को कायम रखा। कैद के समय गुरु जी को दारोगा अब्दुल्ला की निगरानी तले रखा गया था। गुरु जी तथा अन्य गुरसिक्खों की शहादत से वह इतना प्रभावित हुआ कि उस दिन से नौकरी छोड़कर अनंदपुर साहिब आ गया। लेखक उसकी होनी (भावी, तकदीर) का जिक्र करते हुए बताता है कि *"अबदुल्ला दरोगे नूं गुरू जी दे बचनां दा अजेहा असर होइआ कि नौवें गुरू जी दे चोला छड्डण तों पिच्छों आपणे साथी सिपाहीआं समेत गुरू जी दे शसत्र-बसत्र, अंगूठी जो मोहर वाली थी आदि, लै के दसम गुरू जी पास अनंदपुर आ रिहा, धरम दी किरत हकीमी करके सारी उमर गुरू जी दी सेवा कीती। फेर उस दा बेटा गुलाम अब्बास नवाब कपूर सिंघ पास खालसे दे दल विच हिकमत करदा रिहा। उस दा पड़ोता हकीम सैद मुहंमद खां हुण कसबे खरड़ जिले अंबाले विच है। बाकी दरोगे दे नाल आए मेमू खां, मैद खां आदिक गुरू जी दे नौकर रसालदार बने रहे।"*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत ने मानवीय संवेदना रखने वाले हर धर्म, मजहब, देश आदि के बाशिंदे के मन पर गहरा प्रभाव डाला है। गुरु जी की शहादत का वृत्तांत ऐसा है जो उनके प्रति हम सबकी निष्ठा, श्रद्धा को बढ़ाता है। इससे पाठक-श्रोता में धार्मिक दृढ़ता, निर्भीकता और निरवैरता की भावना पैदा होती है। लेखक लिखता है :

"जद ऐस वेले भी औरंगे दे जुलम ते हिंदूआं दे कलेश सानूं याद आउंदे हन तां नेत्र डबडबा के अत्थरू सुट्ट दिंदे हन। कंठ रुदन नाल रुक जांदा है, हत्थ कंबदे लिख नहीं सकदे, कलम चलदी नहीं, जबान हिलदी नहीं, छाती फरकदी है, रूह घटदी है, हिरदा दलील नहीं दिंदा तां ओस वेले दे इतिहास करता कीकूं ओस दे अतुल जुलम लिख सकदे? तां ही ओन्हां तों उतने नहीं लिखे गए जितने जुलम ओन कीते सी।"

प्रचार-यात्राएं एवं शिक्षाएं : गुरु जी ने अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान रथ, डोला, गाड़ी, ऊंट, बैल आदि साधनों का प्रयोग करते हुए भारत के अनेकों स्थानों की यात्रा की थी। लेखक ने गुरु जी के चरण-स्पर्श-प्राप्त जिन स्थानों का जिक्र किया है वे प्रमुखत: इस प्रकार हैं--उगाणा, अटावा, अनंदपुर (माखोवाल), अयोध्या, अली शेर, आगरा, आरा, अमृतसर, समाउं, समाणा, साहिब चंद, साखी गोपाल, साबो की तलवंडी (दमदमा साहिब), सेखा, सैफाबाद (बहादरगढ़, पटियाला), सोहीवाल, सुसराम, सुढैल, सूलीसर, सिंग्रेड़ी, हरिद्वार, हंडिआइआ, कहिलगाउं, कटक, कनौड़, कबूलपुर, करहाली, कलौड़, काशी (बनारस), कानपुर, कामरूप, कांची पुरी, कीरतपुर, कुंतल नगर, कैंथल, कट्टू, कररा, खटकड़, खडूर, खरक, खयाला, खाना, खीना, गया, गटना, गढगंगा, गागा, गुरखंजपुर, गोइंदवाल, गोकल, गोबिंदपुरा, गंडू, घनौली, चीका, छपरा, जगननाथ पुरी (उड़ीसा), जींद, टहलपुरा, टेक, डिक्ख, ढाका, ढिल्लवां, तरनतारन साहिब, थनेसर, दमदमा (ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा हुआ रंगामाढ़ी नगर के समीप), दादू माजरा, धमधाण,

धरमकोट, धोबीआ बंदर, ननहेड़ी, नलहट्टी, नौलक्खा पहोआ, पटना, प्रागराज, फरवाही, फरुक्खाबाद, बकसर, बकाला (बाबा), बनी बदर, बररा, बलेउ, बारना, बालेश्वर, ब्रिंदाबन, बच्छोआणा, भरतगढ़, भागलपुर, भंदेहर, भीखी ढाब, भुपाल, भुवनेश्वर, मकसूदाबाद (मुरशदाबाद), मकौरड़, मथरा, मदरापुर, माईसरखाना, माणकपुर (कड़ा), माल दो, मेदनी पुर, मुकारांपुर, मुंघेर, मुरादाबाद, मूणक, मूलोवाल, मिरजापुर, मोरभंज, मोतीबाग (पटियाला), मौड़, रहेला, राजमहल, रोहतक, रोपड़, लखनऊ, लखनौर (अंबाला), लंग, लक्खण माजरा, लेल, वल्ला। गुरु जी जहां भी दीवान लगाते वहां संगत आ जुड़ती। दूर-नजदीक से उपस्थित होती संगत को गुरु पातशाह सदा सुखी रहने एवं परमार्थ पर चलने का मार्ग दृढ़ कराते हुए कहते :

"मनुक्खा जनम अमोलक रतन वांगूं दुरलब्भ है, एस नूं विषे विकारां विच नहीं गवाणा चाहीए। स्वास-स्वास वाहिगुरू दा सिमरन, संत सेवा, ईशवर दी भगती करदे होए धरम दी किरत करके खाणी, ईशवर दी रजा विच प्रसंन रहिणा एहो मनुक्खा देह दा धरम है। ऐसे आचरण रक्खण वाले पुरुष संसार के संपूरन सुख भोग के अंत नूं सचखंड दे निवासी हुंदे हन।"

नशों के विरुद्ध गुरु जी ने बहुत प्रचार एवं कार्य किया। उन दिनों मालवा क्षेत्र के लोगों में तंबाकू खाने तथा पीने की लत आम थी। गुरु जी जानते थे कि यह जगत-जूठ चीज समाज को नरक बना देगी। बारने ग्राम की एक घटना से पता चलता है कि तंबाकू जैसी गंदी चीज से गुरु जी ने लोगों को कैसे मुक्त कराया था। लोग अब फिर इसके आदी हुए जा रहे हैं, जो कि गहन चिंता का विषय है। लेखक बताता है कि उस ग्राम में गुरु जी गये तथा एक जट्ट सिक्ख ने उनकी बहुत सेवा की। गुरु जी ने उनको उपदेश देते हुए कहा, *"गंदा धूआं ना घुटणा (रोकना) सगों धूम्रपान करने वाले बिप्र नूं दान भी नहीं देणा, किउं जो उस नूं दान देण वाला नरक विच जांदा है ते उह बिप्र ग्राम दा सूकर हुंदा है। एस गंदे धूएं तों कोई धरमातमा ही बचणगे, बाकी बहुत लोक भ्रिशट हो जाणगे। जे तेरी संतान ना पीएगी तां सरब प्रकार सुख संपती भोगेगी, जे तंमाकू वरतेगी तां कंगाल हो जाऊ।"*

गुरु नानक साहिब ने अपनी प्रचार-उदासियों के दौरान उन सिक्खों को प्रचार का कार्य सौंपा था जो गुरु साहिब के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सिक्ख बने थे, जिन्होंने गुरमति शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ परोपकार हेतु सेवा का कार्य किया था। बाद में सभी गुरु साहिबान ने इसको निरंतरता बख्शी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बहुत-से ऐसे उपक्षेत्रों की यात्रा की जहां लोग पशुओं की भांति व्यवहार करते थे। गुरु जी की अमृत-दृष्टि ने ऐसे लोगों के मन में कोमलता, नम्रता, सेवा, परोपकार, प्रभु-भक्ति आदि गुणों को प्रकट किया। लोगों के जीवन में आया ऐसा बदलाव निरंतर कायम रहे इसलिए गुरु जी वहां एक प्रचारक नियुक्त कर देते थे। भाई नंद लाल सोहणू के पुत्र भाई मींहे का उदाहरण हमारे सामने है। उसकी सेवा से खुश होकर उसको मसंद की उपाधि बख्शी। वह पूरब की तरफ गया। उसने सिक्खी प्रचार में बड़ा योगदान डाला। लेखक लिखता है :

"हुण तक्क मुरादाबाद, लखनऊ, बाराबंकी, नवाबगंज आदि प्रगणिआं विच मेहां साहिब दे उपदेशी गुरु जी दे सिक्ख उजागर हन। उस दे पिच्छों ओसदे चेले लखमीर ते मगनी राम आदि कई जपी तपी होए जिन्हां ने राजा परजा नूं चिता के गुरू जी दी सिक्खी बहुत फैलाई।"

लेखक गुरु जी को अपने इष्ट के रूप में प्रस्तुत करता है। गुरु जी मनुष्य-जन्म में प्रभु-ज्योति हैं। समूह सांसारिक एवं दैवी शक्तियां उनके आगे सिर झुकाती हैं। लेखक गुरु जी को इन शक्तियों से ऊपर मानता हुआ कहता है कि जहां गुरु का स्थान हो वहां इनकी स्थिति भीगी बिल्ली की तरह होती है। लेखक बताता है कि गुरु तेग बहादर साहिब जब मौड़ी ग्राम में एक जंड के तले जा उतरे तो लोगों ने कहा :

"एस जंड विच भूत, प्रेत, पिसाच रहिंदे हन, आप एथे ना उतरो, किउं जो ओन्हां ने एथे उतरन वाले अनेकां पुरष मार छड्डे हन। . . . ओन्हां विचों कई डरदे मारे दहिल के मर गए। एसे तरहां मुसलमानां दा इक पीर सय्यद आया, ओह आखे मैं एन्हां नूं एथों कड्ढ के जावांगा, ओड़क आप ही जान दे के गिआ। एह बातां सुण गुरू जी बोले, ओन्हां प्रेतां दे भले वासते करतार सानूं एथे लिआया है। ओस जंड हेठ तंबू तणवा के गुरू जी बिराज रहे, अद्धी रात होई तां ओही पिसाच ते देउ दोवें गुरू जी अग्गे हत्थ जोड़ के आ खलोते। गुरू जी दे हुकम नाल ओह अगले दिन सरहंद वल्ल चले गए।"

इसी प्रकार की एक अन्य घटना का जिक्र लेखक गुरु जी की आगरा में हुई गिरफ्तारी के समय करता है। वह बताता है कि हाकिमों ने गुरु जी को एक ऐसी हवेली में रखा जहां भूतों-प्रेतों का आवास माना जाता था तथा यह विश्वास किया जाता था कि वे रात समय मनुष्यों की जान ले लेते हैं। लेखक लिखता है:

"इक देउ ने गुरू जी दे चरनां पुर मत्था टेकिआ। गुरू जी ने पुच्छिआ तूं कौण हैं ते एह प्रेत जोनी किस करके पाई है? ओन बेनती कीती, मैं अनेक भूतां, प्रेतां, खवीसां दा सरदार देउ हां . . . असीं दूजिआं नूं मार सकदे हां जिवा नहीं सकदे। आपणे प्रेतां दे बादशाह दे हुकम नाल एथे रहिंदे हां, जिस नूं बादशाह मारण लई या कुछ मनाउण लई एथे भेजदा है ओहो कंम असीं कर छड्डदे हां। हुण तुहाडे अते एन्हां सिक्खां दे दरशन करके सानूं ठंड पै गई है, नहीं तां बड़े दुखी सां। . . . फेर ओन बहुत दीन हो के प्रारथना कीती कि अज्ज तुसीं साडे वस्सण दे घर साडे पराहुणे हो, हुकम दिओ तां कुछ लिआईए? एतनां कहि के आप चला गिआ, पल कु विच संगतरे, तरबूज, बदाम, अंगूर, अनार, सेउ, छुहारे, मेवा, पिसता, मिसरी आदिक मिट्ठे खट्टे अनेक प्रकार दे स्वादीक पदारथ गुरू जी अग्गे लिआ रक्खे। . . . गुरू जी दा सीत प्रसाद गुरू जी दे हुकम नाल जद प्रेत ने परवार समेत छकिआ तां ओह प्रेत देह तिआग के देवता बण गुरू जी दा जैकार करदे देव लोक नूं चले गए।"

लेखक गुरु जी की आध्यात्मिक शक्ति को इन शक्तियों से ऊपर बताता है। वह साथ ही यह भी कहना चाहता है कि सच्चा गुरु न तो इन शक्तियों का दिखावा करके लोगों को डराता है और न ही प्रभु के हुक्म से बाहर जाता है। प्रभु के हुक्म में रह कर गुरु कई प्रकार के कौतुक करता है जो कई बार सामान्य लोगों की समझ से परे होते हैं। गुरु सामान्य मनुष्य को दैवी गुणों वाला (परोपकारी) मनुष्य बनाने के सक्षम होता है।

गुरु जी के समय के प्रमुख सिक्ख : ऊदा (रठौड़), ऊदा (दिलवाली सिक्ख), सयाम दास साहिब चंद, साधू (गुरु गोबिंद सिंघ जी का बालपन का साथी), साधू मुलतानी, सैफ अली खां, संगतीआ, सद्दा मुलतानी, सुखानंद, सुच्चा, हरजस राइ (लाहौर का सुभिखिआ खत्री), हजूरी सिंघ बहिल (कलकत्ते का हाकिम), क्रिपाल चंद (मामा), गढ़ीआ, गुरदित्ता, गुरिया (शाह

पुरिया), गुलबराइ, गुरसरन, गुरबखश, गुरबखश (मुंशी), गोंदा, घनसयाम, चरनदास (साधु), जवाहर मल अरोड़ा (दिलवाली सिक्ख), जेठा (अंबाला परगने का मसंद), जैता (भाई जीवन सिंघ), जीत मल, तखता बखता (पोठोहारी), दयाला (भाई), द्वारका दास (बावा), देस राज, दिआला (वजीराबादिया), दीप चंद (गुरदासपुरिया), दग्गा, धंमा (चौधरी), निधा पशौरी, नंद चंद संघा, नत्था शाह (आसाम के एक प्रदेस का राजा), पीर मुहम्मद (गुरु गोबिंद सिंघ जी को फारसी पढ़ाने वाला उस्ताद, काजी), फेरू (नक्के का मसंद), बहिलो के, बखत मल, बुलाकी दास, बिशन सिंघ जोधपुरिया (राजा), ब्रज सिंघ (शस्त्र-विद्या सिखाने वाला, गुरु गोबिंद सिंघ जी का राजपूत शिक्षक), भागू, भागो (इसकी सेवा के कारण आगरा में गुरुद्वारा माईथान सुशोभित है), मती राम (दीवान), मनीआ (भाई मनी सिंघ), मलूका, माईआं, मींहा, मुहम्मद बखश, मुगलू, मक्खण शाह, राजा राम (आसाम के एक प्रदेस का राजा), रामा संधू, रूप चंद (मालवा में सिक्खी का एक प्रचारक), रूपा (कर्रे का मसंद), लालचंद, लक्खी शाह वणजारा।

लोगों को कोई बात समझाने के लिए स्थानीय भाषा और टोटके रूपी मुहावरे बहुत ही कारगर साबित होते हैं। लेखक के अनुसार गुरु साहिब ने प्रचार-यात्राओं में मुहावरों का भी सदुपयोग किया, जैसे--*काठ दीआं बिल्लीआं तां बणे पर मिआऊं कौण करे; माईआं गुरू रजाईआं भगती लाईआं; इआणा गल्ल करे सिआणा किआस करे; जो करेगा सो भरेगा; जवंदे अकल दे अंधे एना दा बाईआ तेईआ होसी थेहीआ थेहीआ, मंगतिआं तों मंगणा लानतीआं दा कंम; संत नदी अर मेघुला चलैं भुयंगम चाल--रजब जहिं जहिं पग धरे तहि तहि करे निहाल; जोगा रले अली शेरे--धीआं दे बणजारे हेरे; जिस नूं सुण गुरू उचरयो वाका--मम सिखी का कोठा ढाका; जंगल गुरू का मंगल; छुरी-ककड़ी ते घड़े-वट्टे वाला जोड़; विनाश काले विप्रीत बुद्धी।*

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि ज्ञानी गिआन सिंघ ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के व्यक्तित्व को उजागर करने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान डाला है। चाहे कि बहुत-से समकालीन इतिहासकारों और आधुनिक खोजों ने गुरु जी के संबंध में नयी दृष्टि से बहुत-सा कार्य किया है परंतु यहां ध्यान देने योग्य विचार-बिंदु यह है कि समकालीन इतिहासकार और लेखक समकालीन बादशाहों की नीतियों से प्रभावित थे और उन्होंने बहुत सारे तथ्यों को छिपाने या उनको तोड़-मरोड़ कर पेश करने का कार्य किया है। लोक-मनों पर गुरु जी का जो प्रभाव था उसको बिना पक्षपात वाले ढंग से पेश किया जाना अनिवार्य था और इस कार्य को सरअंजाम देने में ज्ञानी जी की खोज बहुत ही अर्थपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने दूर-दराज के उपक्षेत्रों में जाकर गुरु जी के संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य एकत्रित करके पाठकों तक पहुंचाए हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के संबंध में उनकी खोज पर विचार हो सकती है परंतु दीर्घ खोज और घूम-फिर कर उन्होंने गुरु जी के संबंध में जो खोज की है वह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है जो कि वर्तमान पीढ़ी को गुरु-इतिहास के साथ जोड़ने का कार्य करती है।

"पंथ प्रकाश" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब का नूरानी जीवन-वृत्तांत

-डॉ. मनजीत कौर*

तेग के धनी, महान तपस्वी, धर्म के रखवाले, अद्वितीय बलिदानी, हिंद की चादर, धीर-वीर-गंभीर प्रवृत्ति के मालिक श्री गुरु तेग बहादर साहिब का आलौकिक जीवन-वृत्तांत "पंथ प्रकाश" में पृष्ठ संख्या १५६ से १७० तक अलंकृत है।

ज्ञानी गिआन सिंघ ने नवम् गुरु साहिब के विलक्षण जीवन को श्रद्धावत नमन कर काव्यबद्ध किया है :

दोहरा

सांति सरूप अनूप गुर धरम रखयो हिंद खूप।
ध्यान नवम गुर ठान उर गाथ बखान अनूप ॥१॥
(पृष्ठ १५६)

ज्ञानी जी लिखते हैं कि शांतचित्त अनुपम गुरु जी, जिन्होंने हिंदू धर्म की क्या खूब रक्षा की, ऐसे महान गुरु जी का ध्यान हृदय में रखकर उनके नूरानी जीवन को बयान करता हूं।

जन्म एवं माता-पिता : ज्ञानी जी के चिंतनानुसार संवत् १६७८ में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के गृह में माता नानकी जी की पावन कोख से श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब का जन्म हुआ। शांत प्रवृत्ति के ये बालक पूर्ण ब्रह्मज्ञानी अनुपम अवस्था के मालिक थे :

चौपई

संवत सोलां सै अठात्र। . . .
मात नानकी सैं प्रगटाए। . . .
पूरन गिआन विगआन अनूपं। . . . (पृष्ठ १५६)

बकाला ग्राम में तपस्या में लीन वैराग्ययुक्त जीवन : जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ज्योति-जोत समा गए तो जगत और परिवार के झमेले इन्हें रुचिकर नहीं लगे, अतः श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब अपनी सुपत्नी एवं माता जी को साथ लेकर कीरतपुर से विरक्त होकर अपने नाना जी की नगरी (ननिहाल) बकाला ग्राम में आकर सुखपूर्वक निवास करने लगे। बीस वर्ष तक गुरु जी ने वहीं निवास किया। श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब प्रभु-प्रेम में मग्न विरक्त भाव से जीवन व्यतीत करते रहे:

जग बिवहार कार दुखदाई।
समझ छूहे नहि ताहि कदाई।
हरि गुबिंद गुर जब तन तज। . . .
अपनि सवाणी अर निजमाता। . . .
पिंड बकाले माझे देसै।
बसे जाइ सुख संग बसेसै। . . .
पर इह प्रभू प्रेम मै पागे।
रहित रैन दिन ऐन विरागे। (पृष्ठ १५७)

अष्टम गुरु जी द्वारा भावी गुरु का संकेत: श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब द्वारा नौंवे गुरु का निवास बकाला ग्राम में होने का संकेत देते ही वहां अनेक सोढियों ने स्वयं को गुरगद्दी का मालिक होने का ढोंग किया। ज्ञानी जी ने उस वृत्तांत का वर्णन किया है। आठवें गुरु जी जो उस समय दिल्ली में थे, उन्होंने वचन किया कि "बाबा है ग्राम बकाले। अब संगत उनकी शरण में जाए।" (रिश्ते में श्री गुरु तेग बहादर साहिब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दादा लगते थे।)

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३

यह वचन सुनते ही सोढियों ने सलाह-मशविरा करके बकाला गांव में अपनी गद्दियां स्थापित कर लीं। अष्ठम गुरु जी का फरमान सुनकर संगत भी वहां पहुंच गई। ढोंगी और लालची स्वयं को 'गुरु' कहलवा कर मसंदों से अपनी खूब खातिरदारी करवा रहे हैं, 'गुरु' बनने हेतु स्वयं को सोढी बता रहे हैं, बढ़-चढ़ कर संगत को प्रसाद वितरित कर रहे हैं। संगत भी प्रसाद लेकर आगे बढ़ जाती और वे ढोंगी गुरु देखते ही रह जाते। वहां पर मेला लग गया और बहुत संगत एकत्र हुई। मसंदों को जिस सोढी से अधिक रिश्वत मिलती वहीं अपनी संगत को ले जाते, उनके चरणों में माथा टिकवाते। नादिर शाह के समय की तरह लूट मची हुई थी। जांझी-मांझी अर्थात् दोनों पक्षों के लोग (जैसे शादी में वर एवं वधू पक्ष के सम्बंधी एकत्र होते हैं) भारी संख्या में घूम रहे हैं। आगे ज्ञानी जी लोक-प्रचलित कहावत द्वारा मामले को स्पष्ट कर रहे हैं--"अंधी पीसे कुत्ता खाए" वाली स्थिति बन गई थी। बहरा व्यक्ति सुन नहीं सकता और अंधा देख नहीं सकता। इस भाव को स्पष्ट करते हुए कि "बहरा घूसे अंधली पीसे। उसे न सुणीऐ उसे न दीसे।" अत: स्पष्ट है कि वहां माहौल इस तरह का बन गया जहां लोभी गुरु बने बैठे थे और शिष्य लालची (दोनों की मनोवृत्तियां एक जैसी) दोनों दांवपेच लड़ा रहे थे। बिना सही मालिक के रखवाली कौन करे? जैसे वन के मृग मालिक के बिना खेत उजाड़ देते हैं, उसी तरह वहां तो धीरमल जैसे बाईस सोढी बने बैठे थे, जो स्वयं को पूर्ण सतिगुरु स्थापित करना चाहते थे, लेकिन वहां किसी में पूर्ण गुरु जैसी योग्यता नहीं थी। वहां पर आए सूझवान सिक्ख उन ढोंगी गुरुओं की करतूतें देख रहे थे, लेकिन किसी को 'गुरु' मान कर उनकी पूजा नहीं कर रहे थे। इसी विश्वास के साथ कि वास्तविक पूर्ण चंद्रमा रूपी गुरु अवश्य प्रकट होंगे अर्थात् श्री गुरु नानक देव जी की गुरगद्दी के असली वारिस के दीदार अवश्य होंगे। ज्ञानी जी ने "पंथ प्रकाश" में इस सारे बिंब को स्पष्ट शब्दावली में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है जिसमें ढोंगी गुरुओं एवं उनके शिष्यों की मनोवृत्तियों की छवि साकार हो उठती है, यथा:

जब गुर असटम दिली माही।
कह्यो गुरू होणा है जाही। . . .
हिरसी सरब सोढीअन गुनकै।
जाइ गद्दीआं तहां लगाई।
सोढी हुते तबै सभ बाई। . . .
जब सिखन तहि आइ निहारी।
बैठे लोभी गुरू छनारी। . . .
सोढी उकस उकस करबैंही।
सिखन को प्रसाद बहुदैहीं। . . .
रिशवत मिलै मसंदन तांई।
बारां पक्के परे तिनांई।
जिसतै धन मसंद बहु पावै।
निज संगत कै तितै झुकावें। . . .
जांञी मांञी चोरो आही।
बहिरा धूसे अंधली पीसे। . . .
बिन मालक रखवारे नेतैं।
बनचर म्रिग उजारत खेतैं। . . .
राही तै जो सिख सिआणे।
बैठे पेखन गुरु के भाणे।
नाहि किसी को मानै पूजैं।
कहि प्रगटैगो गुरु ससि दूजै। (पृष्ठ १५७-१५९)

भाई मक्खण शाह की मन्नत : आगे ज्ञानी जी ने सौदागर भाई मक्खण शाह का जिक्र किया है जिसने अपना जहाज डूबने से बचाने हेतु ५०० सोने की मुहरें गुरु-घर में भेंट करने

की मन्नत मांगी थी और गुरु-कृपा से जब उसका जहाज किनारे लग गया तो वह अपना वचन निभाने गुरु-दर्शनार्थ पहुंचा। उसने ढोंगी गुरुओं में से सच्चे गुरु को खोज लिया।

भाई मक्खण शाह ने बनावटी गुरुओं को देखकर सबके समक्ष एक-एक मुहर रखी, लेकिन उसे तसल्ली नहीं हुई। फिर वहां के लोगों से पूछा कि कोई और भी 'गुरु' है? तब लोगों ने बताया कि छठे गुरु के साहिबजादे श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब हैं, जो कि संत-स्वभाव के करुणामयी हृदय वाले हैं। भाई मक्खण शाह तुरंत वहां गया जिस कोठे (कमरे) में श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब विराजमान थे। उनके समक्ष भी केवल एक मुहर भेंट-स्वरूप रखी। गुरु जी बोले, "मेरी पांच सौ मुहरें हैं।" यह सुनकर भाई मक्खण शाह अत्यधिक प्रसन्न हुआ। गुरु जी को अपना मन-तन-धन सब अर्पित कर दिया और ऊंची आवाज में गाने लगा, "गुरु लाधो रे।" बाणी के प्रवाह चल पड़े। भाई मक्खण शाह की मेघ रूपी गर्जना सुनकर सिक्खों के मन रूपी मयूर खुशी से झूम उठे। बाबा बुड्ढा जी के वंश से भाई गुरदित्ता जी ने श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब को गुरतागद्दी देने सम्बंधी सारी रस्में पूरी कीं। फिर संगत सहित मसंदों ने भी गुरु-चरणों में पहुंचकर भेंटें अर्पित कीं। ज्ञानी जी ने सुंदर शब्दावली में इस दृश्य को काव्यबद्ध किया है :

तबै लवांणां सिख सुदागर।
आइओ तहां धनी बढनाद्र।
मखणशाह नाम जगजाहर। . . .
नाहि तसल्ली भई किसी ते।
बूझे जन पुन तांहि किसी ते। . . .
कोठे अंदर थे गुरु जहां।
भेट धरी ध्रफी इक जाहै।
गुरू कहयो पंज सौ मम आहै। . . .
मेघ मखण की गजन सुनकै।
सिक्ख मयूर भए खुशि गुनकै। . . .
संगत साथ मसंदन आई।
पूजे गुर बहु भेट चढाई।२। (पृष्ठ १५९-१६०)

ढोंगी गुरुओं का प्रस्थान : आगे दोहिरा में (मानवीकरण एवं रूपक) अलंकार से सुसज्जित मनोरम शब्दावली में नवम् गुरु जी के प्रकट होने के बाद ढोंगी गुरुओं की पोल खुल जाने पर उनके वहां से रफूचक्कर हो जाने का वर्णन किया है कि किस प्रकार उत्तरांचल से चंद्रमा रूपी गुरु प्रकट हुए, सब तरह का अंधकार मिट गया, दीन-दुनी के मालिक नौंवे गुरदेव ने सिक्ख पंथ को संभाल लिया।

गुरु जी का श्री अमृतसर दर्शनार्थ आगमन: गुरु साहिब कुछ समय बकाला में रहकर संगत को मनवांछित फल देते रहे। तत्पश्चात गुरदेव श्री अमृतसर पहुंचे। आगे श्री हरिमंदर साहिब के पुजारियों ने गुरु साहिब की अवहेलना की। दर्शनी ड्योढ़ी पर ताला लगाकर वे अपने-अपने घरों को चले गए। गुरु साहिब वल्ला ग्राम जा विराजे और वहीं जाकर आनंदपूर्वक अन्न-जल ग्रहण किया। गुरु साहिब के आगमन की खबर जब सिक्ख स्त्रियों को मिली तो वे यथायोग्य भेंटें लेकर गुरु जी के दर्शनार्थ पहुंची। सभी ने गुरु-चरणों में नमस्कार की। गुरु पातशाह ने उनके प्रति वचन किए कि तुम्हारे प्रेम और भक्ति के प्रताप से यह गुरु की नगरी बसती रहेगी। यह वरदान लेकर स्त्रियां घरों को गईं और गुरु जी ने पुजारियों को फिटकारा। इसके पश्चात् गुरु जी ने बकाला में आकर निवास किया :

थिर फिर गुरू बकाले मै है।
संगत को बांछित फल दै है।
फिर अंम्रितसर चल कर आए। . . .

करी करतूत पुजारिओं वेई।
ताला लाइ दरशनी दर को। . . .
एह खबर जब माईअन पाई।
जथा जोग लै भेटा धाई। . . .
लै बर इत माइआं घर आईआं।
पुजारिआं तईं लाणतां पाईआं।
आइ थिरे तब गुरू बकाले। (पृष्ठ १६०-१६१)

माता किशन कौर जी के बुलाने पर गुरु जी का कीरतपुर पहुंचना : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की माता किशन कौर जी ने (अष्टम गुरु जी के ज्योति-जोत समा जाने के पश्चात्) कीरतपुर में चार माह तक गुरगद्दी संभाली तथा जो कुछ संगत द्वारा भेंट स्वरूप आता वो लंगर में लगा देते। उनकी शोभा को देखकर शरीक दुख देने लगे, अत: माता जी ने अपनी सुरक्षा हेतु अपने खास सेवक को भेजकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कीरतपुर अपने पास बुलवा लिया :

उत कीरतपुर माहि बिसाले।
गुर हरि क्रिशन देव की माता। . . .
मानन लगे सिख समुदाई।
चार मास निज सुत की ठौरैं। . . .
तिसकी मंनत रौणक देख।
श्रीक लगे दुख देन बसेख।६।
दोहरा
स्वै रख्या हित मात जी भेज मातबर खास।
नौमे गुर बुलवा लए कीरतपुर निज पास।७।
(पृष्ठ १६१-१६२)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का कीरतपुर आगमन तथा गुरगद्दी पर विराजमान होना: आगे ज्ञानी जी ने गुरु साहिब के कीरतपुर पहुंचने पर माता किशन कौर द्वारा गुरुता का दायित्व गुरु जी को समर्पित करने का वर्णन दिया है। माता जी गुरु जी के आगमन पर अति प्रसन्न हुईं। गुरु जी गुरगद्दी पर विराजमान हुए। राग-द्वेष से रहित समभाव के दर्शन कर संगत देश-विदेश से अपार भेंटें लेकर गुरु-दर्शनार्थ आती तथा वहां लंगर के अटूट प्रवाह चलते। उपरोक्त प्रसंग को ज्ञानी जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

कीरत पुर गुर नौमे आए।
क्रिशन कौर माता मुद थाए। . . .
दए नौम गुर को लख पूखन।
तखत उपर गुरू नौम बिराजै। . . . (पृष्ठ १६२)

गुरु जी द्वारा अनंदपुर नगर बसाना : ज्ञानी जी ने गुरु साहिब द्वारा एक उजड़े हुए गांव माखोवाल की जमीन दीपचंद से खरीद कर अनंदपुर नगर की नींव रखी। वहां की रौनक को देखकर भी विरोधियों ने ईर्ष्या की।

गुरु जी ने अनंदपुर नगर में अपना निवास-स्थान भी निर्मित किया। तमाम संगत वहां आने लगी। शीघ्र ही सुखदाई नगर बस गया। दिन दुगुनी रात चौगुनी संगत से वहां रौनक बढ़ने लगी। जंगल में मंगल हो गया। शरीकों को कहां धैर्य? धीरमलीए और प्रिथीचंद के समर्थक ईर्ष्यावश अत्यधिक विरोध करने लगे। उन्होंने रामराय को भी साथ मिला लिया। हकूमत के पास वाद ला खड़ा किया। गुरु जी उनकी बदनीति को ताड़ते हुए तीर्थ-यात्रा हेतु रवाना हो गए, यथा :

भूपति दीप चंद कहिलूरी। . . .
सो न्रिप तै सब लै कर मोल।
गुर आनंद पुर ठटिओ अमोल।
सीघ्र बसे तहां रच धाम। . . .
सेवा करत सिक्ख गुर पिआरे।
फिर भी श्रीकन करयो न सबरैं।
मतसर लगे राखने जबरैं। . . .
रामराइ को संग मिलायो।

पास हाकमन झगड़ा चाइओ।
सतगुरु देख तिनै बदनीती।
तीरथ रटन तिआरी कीती। (पृष्ठ १६२-१६३)

अनेक धार्मिक स्थलों की यात्रा : ज्ञानी जी ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा अनेक तीर्थ-स्थलों की यात्रा का वर्णन किया है। जहां-जहां गुरु साहिब ने चरण डाले (निवास किया), वहां-वहां अब गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं। वहां के सिक्ख सेवकों ने श्रद्धापूर्वक गुरु साहिब की सेवा करके अपना जीवन सफल किया। पहले मालवा क्षेत्र में, तत्पश्चात कुरुक्षेत्र, गढ़मुक्तेश्वर, मथुरा, वृंदावन आदि तीर्थ-स्थानों पर जाकर लोगों के दुख दूर किए। गुरु साहिब ने त्रिवेणी में स्नान किया और प्रयागराज (इलाहाबाद) विश्राम किया :

सुन मलवई सिख बहु आए।
कर इनती गिनती बहु भाए। . . .
विचर मालवे देस मझारे।
फिर गुर पूरब ओर पधारे। . . .
गढ़ मुकतेश्वर मथरा हेरी।
ब्रिंदाबन कर सैल बधेरी। . . .
विचर देस दासन दुख भाने।८।
(पृष्ठ १६३-६४)

प्रयागराज निवास : ज्ञानी जी ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की तीर्थ-यात्राओं का विस्तृत वर्णन किया है। जिस स्थान पर गुरु साहिब का निवास था वहां सुंदर गुरुद्वारा साहिब निर्मित है, जो गुरुद्वारा पक्की संगत के नाम से प्रसिद्ध है। फिर गुरु साहिब काशी गए और जब से काशी में भाई गुरदास जी रह कर आए वहां उन्होंने सिक्खी का बहुत प्रचार किया। वहां गुरु साहिब प्रेमपूर्वक बहुत समय तक रहे। जौनपुरी से संगत श्रद्धापूर्वक भेंटें लेकर गुरु जी के दर्शनार्थ आई। उसी संगत में भाई गुरबख्श नाम का एक सिक्ख था जिसने बहुत सुंदर कीर्तन गायन किया। गुरु जी ने प्रसन्न होकर उसे चोला तथा मृदंग बख्शे। वह चोला तो उसी स्थान पर रखा है लेकिन मृदंग लेकर वह जौनपुर गया, जो अब तक उसके गृह में रखा है। इसके आगे चाचा फगोचंद, जो कि मसंद भी थे, उन्हें दर्शन दिए, जहां 'गुरुद्वारा गुरू का बाग' सुशोभित है। फिर गुरु जी गया पहुंचे। वहां बिशन सिंह नाम का राजा भी गुरु जी के दर्शनार्थ आया। सर्वशक्ति-सम्पन्न गुरु जी के दीदार करके चरणों में गिर पड़ा और दीनतापूर्वक विनती की कि आसाम का राजा कामरूप औरंगजेब को सरकारी मामला नहीं भेजता, फलस्वरूप अपनी ईन मनाने हेतु औरंगजेब ने अपनी फौजें भेज दी हैं। कामरूप और आसाम जीता नहीं गया, लेकिन तमाम फौजें मारी गईं। मान सिंह जैसे बलशाली कितने ही योद्धा मारे गए। मैं भी अब मरने के लिए जा रहा हूं क्योंकि औरंगजेब का हुक्म मोड़ा नहीं जा सकता। आगे दोहिरा में गुरु जी ने उसे साथ चलने एवं विजय का आश्वासन दिया। इस सारे घटनाक्रम को ज्ञानी जी ने सुंदर शब्दावली में काव्यबद्ध किया है, यथा :

हुकम अकाल पुरख के साथ।
दसमे गुरू पंथ के नाथ।
तहीं मात गुजरी के उदरैं। . . .
दरीआ पुर मध शहिर परागै।
प्रगट गुरू थल आहि सभागैं। . . .
स्री सतगुरु तब तेग बहादुर।
कांसी वीच रहे बहुसादर।
जौनपुरी संगत चल आई। . . .
चोला रहिन दयो तिस ठांहि।
जो गुरु थल कै कांसी माहि। . . .
चाचे फगो नाम मसंद। . . .
गुर का बाग तहां गुरद्वारा। . . .

हुतो जोध पर को भट भायो।
देस कामरू के सर करने। . . .
सुन महिमा न्रिप गुरु के चरन।
फड़ कर कहयो चलयो मै मरन। . . .
मान सिंघ न्रिप से बलकारे।
जाइ मरे तिस देस अपारे।
मैं भी चलयो मरन अब तैहै।
शाहि हुकम फेरयो ना जैहै।११। (पृष्ठ १६४-१६६)
दोहिरा
दीन बचन सुन भूप के गुर उर करना छाइ।
कहयो संग हम चलै तुव फते अकाल दिवाए।१२।

गुरु जी का पटना शहर में निवास : इस प्रकार गुरु जी के अमृतमयी वचन सुनकर मृतप्राय राजा में मानो प्राणों का संचार हो गया। इसके पश्चात ज्ञानी जी ने गुरु जी के पटना शहर पहुंचने का मनोरम शैली में वर्णन किया है। जब शहर में गुरु जी के आगमन की खबर फैली तो संगत प्रसाद और भेंटें लेकर दर्शनार्थ आई। जब राजा फौज लेकर आ गया तो गुरु साहिब अपने परिवार को छोड़कर राजा के साथ रवाना हो गए।

बचन गुरू का सुधा समाना।
जन न्रिप मरे परे फिर प्राना। . . .
खबर शहिर मै जबै बिथरी।
संतति जहुरी साल सरा की। . . .
तज परवार गुरू तिस थाए।
आप गुरू न्रिप संग सिधाए। (पृष्ठ १६६-१६७)

गुरु जी द्वारा कामरूप के राजा एवं राजा राम सिंह में संधि करवाना : ज्ञानी जी ने गुरु साहिब का राजा के साथ प्रस्थान एवं सिक्ख संगत का उद्धार करते हुए युद्ध-स्थल पर पहुंचने का वर्णन किया है। जब आसाम के राजा को सेना पहुंचने की सूचना मिली तो उसने ब्रह्मपुत्र दरिया को उलटा दिया। इधर अंतरयामी गुरदेव ने पहले ही राजा को सेना हटा लेने का संकेत कर दिया। इस प्रकार राजा का माल-धन-सेना सब कुछ सुरक्षित बच गया। तुर्कों की फौज वहीं रही। वो सब ब्रह्मपुत्र नदी में बह गई। जब आसाम के राजा को गुरु जी की सर्वज्ञता एवं शक्ति की खबर हुई तो उसने वैर-भाव त्याग कर गुरु जी की शरण ले ली। निश्चय से गुरु जी से मिलने के लिए आया तो गुरु जी ने दोनों राजाओं के बीच संधि करवा दी। गुरु जी का अहसान मानते हुए दोनों राजाओं ने गुरु जी की बहुत सेवा की। ज्ञानी गिआन सिंघ ने इस सारे प्रसंग को इस प्रकार मूरत रूप दिया है :

सने सने बहु नगर निहारत।
दासन के गन कौ गुर तारत। . . .
खबर असामपती जब पाई।
न्रिप की सैना पर दरिआइ। . . .
गुर सरबग न्रिपै कहि पठा।
सैना पीछे लेहु हटा। . . .
फौज तुरकानी परी जु रही।
सो सभ ब्रहम पुत्र मै बही। . . .
मेल करन की गुर ठहिराई।
बिशन सिंघ सुन अति खुशि थीओ। . . .
मान हिसांन गुरू का भारी।
सेवा निरपन करी अपारी। (पृष्ठ १६७)

इसी दौरान पटना शहर में दशमेश जी का आगमन हुआ। यह खुशखबरी जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को मिली तब गुरु साहिब एवं राजाओं ने अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक उत्सव मनाया। इसके पश्चात गुरु साहिब ने आसाम के राजा को आशीर्वाद दिया जो कि विजयी होकर दिल्ली गया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पुन: पटना आगमन : गुरु जी का पटना आकर बाल गोबिंद राय को निहारने एवं प्रसन्नतापूर्वक

दान-पुण्य करने सम्बंधी ज्ञानी जी ने अपने हृदयोदगारों को मनोरम शैली में अभिव्यक्त किया है। इसके पश्चात गुरु साहिब सुखपूर्वक वापिस पटना आये। वहां आकर साहिबजादे को देखा। याचकों को अपार दान दिया। वहां से चलकर अनंदपुर साहिब आये। इस दौरान परिवार पटना में ही रहा। सब संगत में खबर फैल गई कि गुरु साहिब तीर्थ-यात्रा पर आए हैं। दर्शन से पाप विनिष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार गुरदेव की महिमा का गुणगान करते हुए लोग गुरु साहिब के दर्शनार्थ आने लगे। जैसे नदियां आकर सागर में मिल जाती है वैसे ही समस्त दिशाओं से संगत आकर गुरु जी से मिलती, दर्शन करके निहाल होती। पहाड़ी राजा दीपचंद भी दर्शन करने आया। इस प्रकार तीन वर्ष व्यतीत हो गए और नगर में विशेष रौनक (चहल-पहल) बनी रही:

आए मुड़ पटने सुखकारा।
साहिबजादे तईं निहारा। . . .
जिनके दरसे पाप नसाए।
या बिधि महिमा गुरु की करते। . . .
धन अनगिनत नितगुरु ढिग आवै।
असन बसन बांछित सब पावैं। . . .
तीनक साल बिते बिधि ऐसे ॥
पुर मैं रौणक भई बसेसै।१५। (पृष्ठ १६८-१६९)

आगे दोहिरा में ज्ञानी जी ने बाल गोबिंद राय जी के अनंदपुर आगमन और उनके दर्शनार्थ आई संगत का जिक्र किया है :

तब लौ पटने तै आए आनंद पुर दसमेस।
उनका दरशन करन हित संगत आई बसेस।१६।
(पृष्ठ १६९)

औरंगजेब के जुल्म : ज्ञानी गिआन सिंघ ने संक्षेप में बाल गोबिंद राय जी की लीलाओं, विद्या और विवाह का उल्लेख कर औरंगजेब के जुल्मों का वर्णन किया है कि किस प्रकार दुष्ट औरंगजेब ने जबरदस्ती हिंदुओं को मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। अत्यधिक दुखी होकर ब्राह्मण गुरु जी के पास आए और बोले कि हमारा धर्म बचा लो, हमारे धर्म की रक्षा करो।

उन्होंने गुरु साहिब से कहा कि अगर कोई सत्यपुरुष अपना बलिदान दे तभी यह हिंदू धर्म बच सकता है। इस वार्तालाप के दौरान साहिबजादा बाल गोबिंद राय जी खेलते हुए वहां गए। उन्हें प्रश्नोतर करते हुए देखकर बाल गोबिंद राय जी बोले कि "पिता जी, इस समय आप से महान परोपकारी और जगत में समर्थ महापुरुष तथा धर्मात्मा कौन हो सकता है? अगर शीश देने से प्रजा बच सकती है तो अविलंभ क्यों? शीश भेंट कर दीजिए, क्योंकि इससे लाभदायक सौदा और कोई नहीं हो सकता। बाल गोबिंद राय जी के मुख से ये वचन सुनकर नवम् गुरु अति प्रसन्न हुए तथा उन्हें गुरु नानक साहिब की गुरगद्दी हेतु सर्वसमर्थ जानकर बोले, "अब तुम भयभीत मत होवो। औरंगजेब को संदेश भेज दो कि गुरु साहिब की गद्दी पर इस समय तेग बहादर हैं, अगर वे इसलाम धर्म कबूल कर लें तो हम भी इसे अपना लेंगे। अब तुम निर्भय होकर जाओ।" जैसा गुरु साहिब ने कहा उन्होंने वैसा ही किया। इस वृत्तांत को ज्ञानी जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

लीला अनक भांत की होवत सबै पड़ाई विदया।
संमत सत्रां सै तीहे विच बिआहि करिओ परसिधया। . . .
हुकम अकाल पुरख का तुमको राखो धरम हमारे।
बोले गुर सत पुरख जे कोई सीस बली देवै। . . .
ऐस समें रावर सम जग मैं समरथ परउपकारी।

ना महातमा है धरमातमा पूरन पुरख अवतारी।. . .
सुन गुरु नौमि खुशी मन थीए सरमत्थ लख दसमेसैं।
कह्यो हिंदूअन डरो न अब तुम इम लिख पठो दिलेसैं। . . .
धरम कल पतरु सबज रखैं हम अपना रत सिंचाई।
इहु सुन करी हिंदूअन सोई जो सतगुर फुरमाई।
(पृष्ठ १६९-१७०)

औरंगजेब का श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली बुलाना : इसके बाद औरंगजेब ने गुरु साहिब को दिल्ली बुलवा लिया। गुरु जी पांच सिक्खों के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गए। वहां जाकर किस प्रकार औरंगजेब ने गुरु जी को इसलाम धर्म में लाने के प्रयत्न किए उन सबका वर्णन करते हुए औरंगजेब की दुष्ट प्रवृत्ति को कड़े शब्दों में फटकारा गया है :

नौमि गुरू को तुरकेश्वर नैं दिल्ली लयो बुलाई।
पांच सिक्ख गुर संग गए जिन धरम उपर सिर वारे। . . .
हार हटिओ झख मार कुपत्ता चौकत्ता बहु भत्ता। (पृष्ठ १७०)

सिक्खों सहित श्री गुरु तेग बहादर साहिब की अद्वितीय शहादत : ज्ञानी जी ने स्पष्ट किया है कि दुष्ट औरंगजेब झख मारकर थक गया लेकिन गुरु जी ने इसलाम धर्म कबूल नहीं किया। पहले भाई मतीदास जी को, फिर भाई दिआला जी को अनेक कष्ट देकर शहीद किया गया। तत्पश्चात अगले दिन गुरु जी ने भाई गुरदित्ता जी को गुरता के चिन्ह देकर अनंदपुर साहिब दसवें गुरु की स्थापना हेतु भेज दिया। मार्गशीर्ष सुदी पंचमी १७३२ की दोपहर गुरु नवम् पातशाह ने अद्वितीय शहादत दी। शहर में कोहराम मच गया। सारा जगत है-है कर उठा अर्थात् अत्यधिक शोकमग्न हो गया और देवलोक में जय-जयकार के नाद गूंज उठे। (उसी भयावह समय में) भाई जैता जी गुरु जी का पावन शीश लेकर अनंदपुर साहिब आ गए। भाई ऊदा जी और भाई लक्खी शाह जी ने मिलकर गुरु जी के पावन धड़ का दाह संस्कार किया। ज्ञानी गिआन सिंघ ने गुरु पातशाह की शहादत को शब्दों के श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए इस प्रकार काव्यबद्ध किया है :

मांनिओ नाहि दीन तिस केरा चीन अधक बेसत्ता।
सिक्खन सहित जबै नौरंग का कहिआ न गुर उर धारिओ।
मतीराम भाई दिआले को नौरंग दुखदै मारिओ।. . .
मग्र सुदी पंचमी सत्रा सै बतीस दोपहिर।
भये शहीद नौमे गुरु जब तब मचयो शहिर मै कहिरैं।
है है सभ जग माहि शबद भा जै जै जै सुर लोकैं। . . .
भाई ऊदे लक्खी सो मिल गुर तन दाह कराइओ।१५। (पृष्ठ १७०)

इस प्रकार ज्ञानी जी ने "पंथ प्रकाश" में गुरु नवम् पातशाह की पावन कथा श्रद्धापूर्वक बयान कर उनकी बेमिसाल शहादत एवं ज्योति-जोत समाने का वर्णन भावपूर्ण शब्दावली में किया है :

नम सतगुर की कथा जथा जग सुख दाइ।
गाइ धिआइ उनीसमो इती भयो गुर ध्याइ।१६।
इति स्री गुर पंथ प्रकाशे ग्यान सिंघ विरचिते नौमे गुर का जोती जोत वरननं नाम उनीसवो बिसराम।१९। (पृष्ठ १७०)

ऐसे महापुरुष, जिनके त्याग और बलिदान से दीन और दुनिया कायम है, उनको कोटि-कोटि नमन!

"गुरबिलास पातसाही १०" कृत भाई सुक्खा सिंघ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-इतिहास

-डॉ. जगजीत कौर*

सागर सीह धउल धरि धरता।
तेग बहादर स्री गुर करता।८३।१।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के गृह माता नानकी जी की कोख से वैसाख वदी पंचमी संवत् १६७८ तद्नुसार १ अप्रैल, सन् १६२१ ई को श्री अमृतसर में हुआ तब पांचवें सपुत्र के दर्शन कर परोपकारी गुरदेव जी ने शीश झुकाकर वंदना की और भाई बिधीचंद जी के पूछने पर कहा, बालक कोई साधारण आत्मा नहीं है, यह तो परम तेजस्वी, आध्यात्मिक ज्योति, दीनों का रक्षक और साधारण जन-मात्र के संकट, दुखों-कष्टों का हरण करने वाला होगा: *"दीन रछ संकट हरै।"*

तब गुर सिस को बंदन कीनी अति हित लाइ।
बिधीआ कहि कस बिनति की कहो मोहि सति भाइ। *(गुरबिलास पा: ६, अध्याय ९)*

इसी लिए ज्ञानी गिआन सिंघ ने "पंथ प्रकाश" में कहा:

तेग बहादर चादर हिंद, दनिंद मनिंद भए अवतारो।

और गुरु दशमेश जी के दरबारी कवि सैनापति के अनुसार :

प्रगट भए गुरू तेग बहादर।
सगल स्रिसटि पै ढापी चादर।
करम धरम की जिन पति राखी।
अटल करी कलजुग मै साखी।

वस्तुत: कलियुग में एक अनोखी विलक्षण साखी व गाथा का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले गुरदेव जी का बलिदान अपूर्व है, इस दृष्टि से कि जीवन की आहुति उन विश्वासों के लिए दी जा रही है जिनमें उनकी अपनी आस्था है ही नहीं और जिनका विरोध वे पहली ज्योति में कर चुके हैं। *"एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु"* के द्वारा जनेऊ-तिलक का विरोध करने वाले गुरदेव नवम रूप में उसी *"तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥ कीनो बडो कलू महि साका ॥"* स्वयं कातिल के द्वार पर जाकर स्वइच्छित बलिदान के लिए अपना शीश भेंट कर रहे हैं।

ऐसे अनोखे बलिदान की तेज व शौर्यपूर्ण गाथा का अनेक इतिहासकारों ने श्रद्धावनत हो वर्णन किया है, जिनमें भाई सुक्खा सिंघ कृत "गुरबिलास" भी एक विशेष स्थान रखती है। "गुरबिलास" का रचना-काल संवत् १८५४ है, जैसा कि कवि ने स्वयं संकेत दिया है :

संमत सहस पुरान कहत तब।
अरध सहस फुन चार गनत सब।
कुआर वदी पंचम रविवारा।
गुरबिलास लीनो अवतारा।४७।१।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार भाई सुक्खा सिंघ का जन्म संवत् १८२५ (सन् १७६८ ई) में हुआ और मृत्यु संवत् १८९५ में हुई। वैसे इस सम्बंध में कोई अन्य लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अपने जीवन के सम्बंध में कवि बताता है कि इनके माता-पिता की मृत्यु बाल्य-काल में ही हो गई थी और इनके बड़े

1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur (U.P.)-247001, Mob. : 92197-87756

भाई ने ही बड़े प्यार से इनका पालन-पोषण तथा इनकी शिक्षा का प्रबंध किया। अपने भाई के साथ ही एक बार जब ये पटना साहिब की यात्रा कर नानकमता साहिब की यात्रा पर पहुंचे तो वहीं नानकमता में ही भाई का देहांत हो गया। भाई ने मरते समय इन्हें संसार के सभी नश्वर सम्बंध त्याग कर गुरु की शरण में रहने की आज्ञा दी। तभी वे भाई की आज्ञा का पालन करते हुए पटना साहिब आ गए। इक्कीस महीने यहां रहकर गुरबाणी पाठ-अध्ययन किया, अमृत-पान कर खालसा सजे, तब स्वप्न में दशम पातशाह के दर्शन हुए और स्वप्न में "शस्त्रनाममाला" का ज्ञान वरदान रूप में प्राप्त हुआ। वहां से कवि अनंदपुर साहिब, केसगढ़ साहिब आ गए। यहां रहकर ग्रंथी की सेवा करते हुए दशम पातशाह के संपूर्ण जीवन चरित्र को लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई, नाम भी निश्चित कर लिया :

धरो नाम ताको इहै गुर बिलासं।
पढ़ै जो सुनै को पुरै ताहि आसं।१०४।३०।

गुरु-चरणों से अनन्य प्रेम के कारण ही इस ग्रंथ की रचना की है, किसी अन्य धन आदि की इच्छा से नहीं :

प्रेम कथा के कारने बरनत है इह कीर।५०।१।

"गुरबिलास" मुख्य रूप से दसवीं पातशाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन-चरित्र से ही सम्बंधित है। इसमें गुरु साहिब के प्रकाश-अवतार, बाल्य-काल और उनकी समूची जीवन-गाथा का ओजपूर्ण चित्रण है, परंतु ग्रंथ के आरंभ में चरित-काव्यों की परंपरा के अनुसार मंगलाचरण के रूप में गुरु नानक साहिब के पारब्रह्म रूप और सभी गुरु साहिबान की एक ज्योति-रूपता का वर्णन किया गया है।

कथानक का प्रारंभ श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की दिल्ली यात्रा से किया गया है, जिसमें गुरु साहिब ने औरंगजेब से न मिलने का निर्णय लिया और अल्प आयु होते हुए भी दृढ़ इरादे का परिचय दिया :

स्री मुख बचन कहे इह भाइ।
हम नही मसतक लगना जाइ।
ना मलेछ को दरसन देना।
आप जाइ ताको नही लेना।७५।१।

तब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के अंतिम क्षणों का वर्णन है :

संगति कही प्रभू जग नाथा।
संगति कहां निवावै माथा।
बाबा सही बकालै आहि।
ढूंड लहु ता कौ कर चाहि।७९।
छपि कैसो नही रहगि दिआला।
कोटि सूर जिम करग उजाला।
यौं कहि कर सतिगुर बच धाइ।
निज सुख भीतर गए समाइ।८०।१।

आगे श्री गुरु तेग बहादर साहिब की गाथा प्रारंभ करते हुए कवि कहता है :

श्री हरिक्रिशन क्रिपानिध ते पुन तेग बहादर पै छबि छाई।
दीपक दीप सिरोमणि साहिब आदि अनादि महा सुखदाई।
भारत खंड को जात रसातल राख लयो जिह सीस चढाई।
ता गुर की बरनो कबि सुंदर संत मन मोद बढाई। (८२/१)

कवि अब बकाला नगर का वर्णन करता है:

सहर बकाला जहां बिराजै।
अमरावती निरख दुति लाजै।
नदी बिपासा तीर बसत बर।
अप्रमान उपमा ताकी धर।८४।३।

बकाला नगर की नैसर्गिक सुषमा का

सुहावना वर्णन भक्ति-तप के अनुकूल सुखद वातावरण प्रस्तुत करता है, जहां नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब एकांत शांत स्थल पर बैठ कर तपलीन हैं। माता नानकी जी तप-स्थान के बाहर मानो अत्यंत सावधान रहकर पहरा देती रहती हैं। माता गुजरी जी पति की तप-साधना को निर्बाध चलते रहने में सहयोग देती रहती हैं। जब बाल-गुरु जी ने बकाला का नाम लिया तो यह सुन कर सभी मुख्य सोढी **'गुरु'** बन बैठ गए :

बाल सरूप गुरू की कथा।
बाबा सही बकाले जथा।
यौ सुन कर सोढी सभ सारे।
आए मधि सु नगर निहारे।८७।
सरब गुरू निज को कहवाई।
बाई बैठ मंजीअन लाई।
सिख सखा जे को चल आवै।
बाई ठवर सु भेट चढ़ावै।८८।१।

बाईस **'गुरु'** अपना-अपना डेरा जमा कर बैठ गए। इसी बीच कवि बताता है कि दक्षिण भारत से व्यापार करके आता हुआ गुरु नानक पंथ का एक श्रद्धालु, जिसका नाम भाई मक्खण शाह था, जब दिल्ली पहुंचा तो उसे समाचार मिला कि अष्टम पातशाह **'बाबा बकाला'** का संकेत दे गए हैं, तो वह भी अपनी श्रद्धा-भावना पूर्ण करने हेतु बकाला आ पहुंचा। वहां पहुंचने पर उसने देखा कि यहां तो बाईस **'गुरु'** बने बैठे हैं। इनमें से असली **'गुरु'** कौन है यह कैसे पहचाना जाए? तब उस कुशल व्यापारी और श्रद्धावान गुरसिक्ख ने सोचा कि बुद्धि विवेक से पहचान करनी चाहिए :

दो बिस गुरू न होइगे गुरू होइ है एक।
ता को कैस पछानीऐ करके बुधि बबेक।९४।१।

तब उसने निर्णय लिया कि मन्नत का जो धन भेंट करने के लिए मैं आया हूं वही मेरा भ्रम दूर करेगा : *"आतम दरसी गुरू जु होइ। मांग लेइगो मुख ते सोइ।"* उसने पांच-पांच मुहरें भेखी गुरुओं के सम्मुख रखनी शुरू कर दीं। जब बाईस मंजियों को पांच-पांच मुहरें भेंट हो चुकीं तो उसने लोगों से पूछा कि "और भी कोई मंजी बाकी है?" एक बालक ने कहा, *"पुन बालक भाखे इम बैन। बाबा तेगा है इक ऐन।"* परंतु वे मंजी लगाकर नहीं बैठते, वे तो अपने घर के अंदर एकांत स्थान पर बैठकर प्रात: से सांझ तक तप-समाधि में लीन रहते हैं : *"भली बुरी का लहै न भेव। ना काहू सिउ लेउ न देव।"* तब भाई मक्खण शाह उस स्थान पर चल कर आया। द्वार पर ही माता नानकी जी ने रोक लिया, "नहीं, तुम अंदर नहीं जा सकते। मेरे पुत्र को धन की कामना नहीं है उसका ध्यान भंग मत करो।"

स्री माता जग नानकी उचरै इह बिधि बैन।
मेरो ही वहु पूत निज मसत रहे दिन रैन।१०६।१। . . .
हीरा सु लाल कौडी रु दाम।
नही कनक रूप तां कौ सु काम।

माता जी के वचन सुनकर उसे तभी खटका हुआ और उसने माता जी से विनम्र प्रार्थना की, "दक्षिण से आया हूं, लंबा मार्ग तय कर दर्शन करना चाहता हूं, आज्ञा दें!" गृह के अंदर प्रवेश करते ही वह विस्मित हो उठा। *"अचुत पुरख प्रभू भगवाना"* के दर्शन कर चित्त शांत हो गया। चरण-कमलों पर शीश झुकाया, परंतु परीक्षण हेतु चरणों पर केवल पांच मुहरें ही भेंट कीं। गुरु साहिब की समाधि खुली, नेत्र खोले, गंभीर वाणी में पूछा, "क्यों भाई गुरसिक्ख! सुख-चैन से तो हो?" गुरसिक्ख का तो मानो तन-मन शांत हो गया, चिंता, बला सभ दूर हो

गई। गुरदेव जी ने पांच मुहरों की ओर देखा और कहा, "क्यों भाई गुरसिक्ख! उस समय जब विपत्ति में फंसे थे तब तो अपना तन-मन, प्राण समस्त अर्पण करने चले थे, पांच सौ पांच मुहरों की मन्नत मानी थी, अब क्या हो गया?"

तवन समै अस गत हुतो तन मन अरपन प्रान।
अब कारज पूरन भयो अजमत मांगत आन।२९।
मुहर पांच सौ पांच जो मनत हमारी देहु। . . .।३०।१।

उस समय अंधड़-तूफान में, जब व्यापारिक बेड़े का डोलना, भयानक संकट में फंसे बेड़े को कंधा देकर पार लगाना जैसी गुप्त रहस्य की बातें गुरु साहिब ने बताईं तब :

अवर गुपत कथ अनिक प्रकारा।
क्रिपा सिंध मुख मांहि उचारा।
सुनत बचन सिख गद गद भयो।
भरम निवार सुध है गयो।१३१।
सरफी काढ अग्र गुर धरी।
भांति भांति बिनती पुन करी।
धन्य धन्य सतिगुर करतारा।
सगल घटा की जान नहारा।१३२।१।

भेंट चढ़ाने के बाद गुरसिक्ख दौड़कर बाहर आया, महल की ऊतरी छत पर चढ़ कर ऊंचे स्वर से घोषणा की, *"लाधा गुरू संगति जी टोरी। जिन कउ भरमो अन जा होरी।"* "गुरु ढूंढ लिया गया है। अब अन्य किसी के पास भटकने की आवश्यकता नहीं है।" यह सुनते ही संगत उत्साह से उमड़ कर गुरु-दर्शन के लिए इकट्ठी होने लगी : *"भलो कुलाहल मेला भारी। आवत उमंड संगतां सारी।"* गुरु तेग बहादर साहिब को गुरु रूप में संगत द्वारा स्थापित किया जाना धीरमल को सहन नहीं हुआ। वह अपने पक्ष के अन्य सोढी सरदार इकट्ठे कर गुरु साहिब से लड़ने-झगड़ने आ पहुंचा। उसने अनेक शस्त्रों सहित बंदूक कमर में बांध ली और हाथ में तलवार लेकर गुरु साहिब पर वार करने को पहुंच गया तथा अहंकारपूर्ण वचन बोलने लगा। गुरु साहिब ने सारी संगत को शांत रहने को कहा। गुरु जी के घर से उसने अनेक कीमती पदार्थ उठा लिए और जो चढ़ावा आया था वह भी ले लिया, यहां तक कि पावन श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ भी उठाकर ले गया। गुरु साहिब ने अत्यंत शांत-स्थिरचित्त संगत को उपदेश दिया :

कहा पुन भयो जउ लै गयो चढ़त वह, नही कुछ चिंत हम को सु राई।
दरब के काज कछु गुरू महाराज ने, नही इह बैठ दुकान पाई।
रिध जो सिध पुन उसतती निंदका, संत को एक सम है जताई। . . .।१४५।१।

इस प्रकार संगत को उपदेश कर गुरु साहिब ने कीरतपुर जाने की तैयारी की। कीरतपुर माता जी को ठहराकर गुरु साहिब ने माखोवाल की भूमि खरीदी और वहां एक सुंदर नगर बसाया। कुछ दिन यहां विश्राम कर गुरु साहिब तीर्थ-यात्रा के नाम पर पूरब की ओर चल पड़े जिसका उद्देश्य लोक-उद्धार था :

तारने संसार सागर कीओ ऐस उपाइ।
नाम लैकर तीरथन को चले पूरब धाइ।१।२।

इस यात्रा का एक मकसद यह भी था कि उन गुरु-प्रेमियों की खबरसार लेनी थी जो पूर्व गुरु साहिबान के समय से प्रेम, श्रद्धा सहित संगत कायम कर गुरु नानक मत के प्रचार-प्रसार में लगे थे। उनमें से कुछ वृद्धावस्था के कारण दर्शनार्थ नहीं आ सकते थे और कुछ सुदूर स्थानों पर होने के कारण गुरु-दर्शनों से वंचित थे। कीरतपुर से कुरुक्षेत्र पहुंचे और तब नानकमता साहिब आदि अनेक

स्थानों से होते हुए इलाहाबाद (प्रयाग) त्रिवेणी के संगम पर पहुंचे :

त्रिबेणी सतिगुर जब गए।
सिख सखा दरसन कह धए।१३।

पुन: काशी बनारस होते हुए पटना नगर में प्रवेश किया और :

बहुत काल निज बसे तराही।
पटना पुर संगत के माही।३५।२।

यहां "गुर बिलास" का रचयिता जिक्र करता है कि गुरु जी जब पटना में थे तो वहीं उन्हें राजा मान सिंह का विनय-पत्र प्राप्त हुआ कि बादशाह औरंगजेब ने राजा मान सिंह को आसाम (पूरब) की ओर भेजा है, जहां उस समय मुगल विरोधी वारदातें चल रही थीं। यह एक प्रकार की सजा थी, क्योंकि औरंगजेब दक्षिण भारत और आसाम आदि क्षेत्रों में हिंदू राजाओं की बढ़ती विद्रोही शक्ति को सहन नहीं, कर सका था और उसके दरबारियों ने निर्णय लिया कि मान सिंह को आसाम भेजा जाये जहां वह लड़-भिड़ कर जायेगा। राजा मान सिंह गुरु जी को अपने साथ ले गया। यहां कुछ इतिहासकार 'राजा जी' से संकेत 'मान सिंह का नहीं लेते, कुछ बिशन सिंह जोधपुरीआ', कुछ राजा जै सिंह बताते हैं। मैकालिफ राजा राम सिंह अंबर बताते हैं और अधिकांश इतिहासकार इसे ही ठीक समझते हैं, क्योंकि इसी के पारिवारिक सम्बंध गुरु-घर के साथ कई पीढ़ियों से चल रहे थे। भाई सुक्खा सिंघ ने 'राजा मान सिंह' नाम दिया है। गुरु साहिब ने अपने हुकमनामों में 'राजा जी' लिखा है : *"असीं परै राजा जी के साथ गए हां।"* 'राजा जी' का नाम नहीं है। इन्हीं 'राजा जी' के साथ गुरदेव आसाम गए, जहां दोनों राजाओं में संधि करवा दी, जिससे शांति स्थापित हुई।

"गुर बिलास" का रचयिता अध्याय तीन और चार में दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश और उनके अद्भुत तेज व प्रतापपूर्ण बाल-लीलाओं का वर्णन करता है। पूरबी देश आसाम, बंगाल, ढाका आदि की यात्रा पर जाते समय गुरदेव जी अपने परिवार को पटना में ही छोड़ गए। पटना की संगत अति प्रेमवान श्रद्धालु थी, धनधान्य से पूर्ण समृद्ध संगत थी। माता गुजरी जी, माता नानकी जी, मामा किरपाल जी और अन्य श्रद्धालु सिक्खों को वहीं छोड़ दिया गया :

औ डेरा साहिब का जेता।
पटणे बीच बसयो सब तेता।
माता आदि जितक परवारा।१४६।
इह बिधि राजत सहर मंझारा।
पटणे सम संगति बर भारी।
है नही अवरु सु नगर मंझारी।
लाख करोड़ी सिक्ख भणिजै।
भगति भाव मै साबत लहिजै।१४७।२।

गुरु साहिब ढाका में थे, तभी मामा किरपाल जी द्वारा लिखा पत्र एक श्रद्धालु सिक्ख ने उन्हें लाकर दिया और परम तेजस्वी पुत्र-रत्न के प्रकाश का समाचार जा सुनाया :

संबत सतरह सहज भणिजै।
बीस तीन संग बरख गणिजै।
माहि पौख पुन अधिक सु चीनै।
जगत प्रवेस क्रिपा निधि कीने।४५।३।

तभी माता नानकी जी ने सभी को उचित दान-दक्षिणा-उपहार दिए और :

क्रिपालं बुलाई। कही बात भाई।
लिखो बेग पाती। हजूरं सुहाती।५२।
इसो सिख जाई। मनो पउन धाई।
सुनयो यों क्रिपालं। लिख्यो ततकालं।५३। . . .
सु ढाके बंगाला। सुनयो दीन दयाला।

दई जाइ पाती। भई सीत छाती।५५।
कहा सीस निआई। प्रभू जी बधाई।
चिरंजीव तातं। अयो सुख सातं।५६।३।

गुरु साहिब ने सारी संगत को यह शुभ समाचार सुनाया। सारी संगत आनंद-विभोर हो उठी और अकाल पुरख का धन्यवाद किया। भाई सुक्खा सिंघ गुरु साहिब के पटना आने का जिक्र नहीं करता, बल्कि गुरु साहिब द्वारा भेजे गए हुकमनामे का वर्णन करता है जब बाल गोबिंद राय जी अनेक भांति की बाल-क्रीड़ाएं करते सुखपूर्वक दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का हुक्म प्राप्त हुआ कि "राजा ने उन्हें पटना नहीं आने दिया है, आवश्यक कार्यवश वे पश्चिम भाव पंजाब की ओर जा रहे हैं। साधसंगत जी को हुक्म है कि परिवार को सुरक्षित ढंग से अनंदपुर साहिब पहुंचा दिया जाए।

कई स्थानों पर टिकते हुए तेजस्वी बाल-रूप से संगत को दर्शन देकर तृप्त करते हुए भावी दसवें पातशाह जी अनंदपुर साहिब प्रवेश करते हैं :

इह बिधि मिलियौ सकल परवारा।
जह तह गावत मंगलचारा।
बडि मात अति चित अधिकाई।
सुत सुत निरख बदन बिगसाई।१।५।

बड़ी मां माता नानकी जी पुत्र और पौत्र को मिलते देख अति प्रसन्न हो रही हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का अनंदपुर साहिब में निवास करना, संगत को उपदेश देना और बाल रूप श्री गोबिंद राय जी का अनंदपुर साहिब आना सुनकर संगत बड़ी संख्या में गुरु-दर्शन को आने लगी :

संगति दूर दूर की आवै।
कै दरसन मन तन त्रिपतावै।९।५।

इसी बीच कशमीर से भी एक दल गुरु जी के दर्शन को आता है और वे कशमीरी अपनी दर्दनाक व्यथा गुरु जी को सुनाते हैं। वे बताते हैं कि तुर्कों ने जुल्म की अति कर रखी है :

इक कसमीर सुसंग जु आयो।
तिन ब्रितांत हजूर सुनायो।
तुरकन अधिक अनीत उठाई।
हिंदू कीय सभ तुरक बनाई।१०।
एक दिवस ओहु ठोर मंझारा।
तग सवा मण प्रगट उतारा। . . . ११।५।

सभी हिंदुओं को मुसलमान बनाया जा रहा है। एक-एक दिन में सवा-सवा मण (मण=४० कि. ग्र.) जनेऊ उतारा जा रहा है। काशी, गया और कशमीर, जो हिंदुओं के मुख्य तीर्थ हैं, गढ़ हैं, यहीं ज्यादा आग लगाई जा रही है। सबसे पहले कशमीरी हिंदुओं को भ्रष्ट किया जा रहा है और बाद में पूरा हिंदुस्तान स्वयं ही भ्रष्ट हो जायेगा, ऐसा सोच कर मलेच्छों ने कशमीर में अनेकों हिंदुओं को मुसलमान बनाया है :

प्रिथमै गहि इन कौ सु मिलीजै।
बहुरौ और जगत भ्रिसटीजै।
ऐस बिचार मलेछन मनै।
हिंदू करे तुरक तिन घने।१३।५। . . .
तुरकन भार दुखत भई लोई।
छत्री जगत न दिखीअत कोई। . . . १५।५।

देश-कौम तथा समाज का ऐसा पतन सुनकर गुरदेव कुछ देर गंभीर मुद्रा में रहे और तब कुछ सोच कर बोले कि अब समय आ गया है, कोई महापुरुष अपना बलिदान करे और धरती पर हो रहे इस पाप के बोझ को दूर करे:

जो निज अपनो सीस चढावै।
निघरत धरन भार ठहरावै।१५।५।

जब यह वार्तालाप हो रहा था तो बाल

गोबिंद राय जी वहां आ पहुंचे और पिता-गुरु की बातें सुनकर कहा, "पिता जी! आपसे बढ़ कर तेजस्वी महापुरुष इस समय और कौन है जो तप-त्याग का धनी हो, देग-तेग दोनों की रक्षा करने में समर्थ हो?"

यौ सुन कर पित की सुत बानी।
बीच सभा कहि प्रगट बखानी।
तुम ते और अधक को आही।
देग तेग जा के ग्रिह माही।१६।५।

गुरु साहिब पुत्र के ये वचन सुनकर अति प्रसन्न हुए और उन्होंने दिल्ली जाने का निश्चय कर लिया। यहां कवि बताता है कि कुछ दिन अत्यंत गंभीर चिंतन में व्यस्त रहकर गुरदेव बिना परिवार को कुछ बताए दिल्ली की ओर चले गए :

दिल्ली कह सतिगुर तब खयो।
यौ चल नास तवन का कयो। . . . १८।५।

दिल्ली पहुंचकर गुरदेव दिल्ली के बाहर एक उद्यान में टिके और वहीं स्वयं को प्रकट करने की दृष्टि से एक सिक्ख सेवक को एक अशर्फी देकर कुछ लाने को कहा। अशर्फी के माध्यम से पूछताछ करने पर दारोगा ने अंदाजा लगाया कि अवश्य गुरदेव निकट ही हैं। वो अपने कुछ सिपाहियों सहित वहां आया और गुरदेव जी को बंदी बनाकर शाही कैदखाने में ले गया। गुरु जी के साथ जो श्रद्धालु सिक्ख थे उन्होंने दिल्ली की कुछ अन्य सिक्ख संगत से विचार-विमर्श किया। वे अपना सर्वस्व गुरु-चरणों पर न्यौछावर करने को तैयार थे, परंतु गुरदेव ने उन्हें पूरी तरह शांत रहने को कहा। दो दिन बाद मुगल गुरु जी के पास आए। उन्हें जंजीरों से बांधकर पैरों में बेड़ियां डालकर चौकी (कोतवाली) ले गए। वहां उनके सामने कई तरह के प्रलोभन रखते हुए उन्हें इसलाम धर्म कबूल करने को कहा गया :

इम कहै बैन। तुम सुनहु ऐन।९९।
मध दीन आओ। चाहै सु पाओ।
सभ देस राज। सूबा समाज।१००।
इम नित आन। देखी बखान।
सुन कहै दयार। जड़ा झख न मार।१०१।५।

कई दिन तक वो प्रभु जी से ऐसी ही बातें करते रहा, परंतु गुरदेव अपने उसूलों पर अडिग रहे। सागर के समान धीर-गंभीर गुरदेव पर उनकी बातें ऐसे बेअसर रहीं जैसे कि कोई बुद्धिहीन व्यक्ति आकाश का निशाना साधता है तो वह तीर उसी के शीश पर आ लगता है और उसे ही हानि पहुंचाता है :

रहै अचल ऐस। गिर मेर जैस।
जिम धरा धीर। तिम रह सरीर।१०४।
कोऊ गगन जान। मारे सु बान।
तिह परै सीस। नही लगै कीस।१०५।५।

गुरु जी ने साथ आए कुछ सिक्खों को सारी योजना समझाकर इधर-उधर हो जाने को कहा। कुछ सिक्ख जो उनके साथ रहे, उन्हें कष्ट देकर शहीद कर दिया गया। रचयिता ने इनका नाम नहीं दिया है। जब मुगलों के प्रलोभन, शर्तें व्यर्थ रहीं तो उन्होंने गुरु जी का शीश धड़ से जुदा करने की घोषणा कर दी। जो सिक्ख इधर-उधर छिपे स्थिति पर निगाह टिकाए थे वे दिल्ली कोतवाली के पास ही रहने वाले एक श्रद्धालु गुरसिक्ख से मिले। कवि सुक्खा सिंघ ने उनका नाम नहीं बताया है, परंतु अन्य इतिहासकार भाई जैता जी बताते हैं। कवि सुक्खा सिंघ कहते हैं कि उसने कहा, "रंघरेट बंस! मैं हूं बतंस।" गुरु जी के शीश का अनादर न हो इसलिए कुछ देर सिपाहियों को भुलावे में रखने के लिए शीश की जगह शीश रखना आवश्यक है। इस पुनीत कार्य के

लिए उसका पिता तैयार हो गया।

गुरु साहिब के शीश का बलिदान होते ही भयानक तूफान और प्रचंड वेगवान आंधी चली, गहन गुब्बार से भयानक अंधेरा छा गया। भाई जैता जी ने पिता का शीश वहां रख गुरदेव का पावन शीश फुर्ती से उठाकर कीरतपुर का रास्ता पकड़ा। मुगल होश आने पर पछताते ही रहे। भाई जैता जी ने तो असीम साहस का काम किया :

करै गाढ हीआ। तहां पाव दीआ।
तहां नेक चौकी। परे दूत भौकी।१२७।
इनै दीस कंधा। भए मूड़ अंधा।
किनी ना निहारा। न हाहु उचारा।१२८।
कछू बयोत भाई। इतै लै पुजाई।
तहां सीस राखा। प्रभू जैस भाखा।१२९।
मलेछी सु राई। पिछै पछुताई।
हथं हाथ मारै। समै सो बिचारै।१३०।
धुजा धरम धारी। लिखे आवातारी।
उनै सीस छारा। भयो लै अपारा।१३१।५।

गुरदेव तो धर्म की ध्वजा थे, साक्षात अवतार थे, उन्हें शहीद करना, अपार कर्ता प्रभु का कोप सहन करना पड़ेगा, ऐसा कह कर मुगल पछताते हैं। भाई जैता जी निरंतर चलते हुए कीरतपुर पहुंच गए और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सूचित किया :

महाराज जब यौ स्रवनन सुन पाइओ।
हो रती बिलम नही कीनसु तुरत सिधाइओ।१३३।५।

माता गुजरी जी, माता नानकी जी और अन्य संगत सहित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कीरतपुर पहुंचे। आदर सहित शीश को नमस्कार किया। तब गुलाब जल से शीश धोकर, केसर, इत्र-फुलेल छिड़ककर भारी बिबान तैयार किया गया। फूलों से सजाकर बिबान ले, शबद-कीर्तन करती हुई संगत विशाल नगर कीर्तन के रूप में अनंदपुर साहिब पहुंची। चंदन की चिता तैयार कर पूर्ण गुरमति मर्यादा के अनुसार शीश का दाह-संस्कार किया गया :

इह बिधि पूरन मजल कर आए पुरी अनंद।
परम जोति श्री सतिगुरू साहनसाह गोबिंद।१४२।
चंदन अधक मंगाइकै कर सभ कुल की रीत।
निज हाथन महाराज जू सभ कारज इह कीत।१४३।५।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ होता रहा, लंगर अटूट चलते रहे, संगत जुड़ती रही, सभी मंजियां, मसंद, बाबा बुड्ढा जी के पुत्र, पौत्र, भाई और देश-विदेश की संगत जुड़ी, गुरु साहिब ने सबको रोने से मना किया और **'भाणा'** मानने का उपदेश दिया :

नही तांहि लेपी। गुरू है अलेपी।१४८।
जोऊ तासु रोई। मती मंद होई। . . .
गुरू जी निधाना। बिकुंठे सिधाना।१५३।
मलेछी सु सारी। जरं लै उखारी।
रहैगा न कोई। नमै मात्र सोई।१५४।५।

गुरदेव के बलिदान से मुगलों की जड़ें उखड़ी हैं और धर्म हित किया गया बलिदान चिर वंदनीय है :

चंद सूरज धर कास जबै लग जानीऐ।
पानी पवन हुतासन प्रगट प्रमानीऐ।
तब लग प्रभ को सु जस तुरक सिर छार है।
हो धंन धंन परलोक सुरग जैकार है।१३२।५।
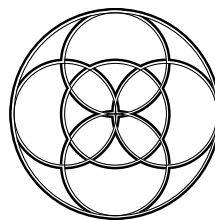
"दस गुर कथा" कृत कवि कंकण में वर्णित श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन

-बीबी रविंदर कौर*

"दस गुर कथा" में कवि कंकण दस गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास के कुछ अंशों को बयान करता है। काव्य रूप इस पुस्तक में नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब से संबंधित जो जानकारी मिलती है उसका वर्णन इस लेख में किया जा रहा है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-इतिहास लेखक ने बंद १४८ से १७६ तक तथा फिर बंद १८४ से १८८ तक काव्य रूप में लिखा है। लेखक ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-इतिहास को चार शीर्षकों--"सतिगुरू जी दी भाल", "सतिगुरू जी दी महिमा दा वरणन", "सतिगुरू जी दी शहीदी" तथा "सतिगुरू जी दे सीस दा ससकार" में बांटा है।

सतिगुरू जी दी भाल (खोज) : अष्ठम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से नवम पातशाह के 'बकाला' गांव में बसे होने का संकेत पाकर उनके ज्योति-जोत समाने के बाद संगत ने पहले मर्यादानुसार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की पार्थिव देह का दाह संस्कार किया और फिर विचार किया कि अब बकाला जाया जाए तथा नवम पातशाह की खोज करके उनके दर्शन किए जाएं। जब संगत बकाला में पहुंची तो देखकर हैरान रह गई कि यहां तो घर-घर में 'गद्दी' लगी हुई है। कई अपने आप ही 'गुरु' बने बैठे हैं :

करम और धरम कीए गुर के तब सिक्खन ए मन मै ठहिराई।
होइ इकत्र बकाले चलो देखो कौन को दीनी है राम गुराई।
आगे बकाले मे एहु भई घर ही घर मे इक खाट बिछाई।
आप ही आप बने सभ ही गुरु खोज रहे कहूं सुद्ध न पाई।१४८।

दीर्घ सोच-विचार के बाद संगत के मुखिया (भाई मक्खण शाह) ने योजना बनाई कि सबके आगे थोड़ी-थोड़ी भेंटा रखें, शेष छुपाकर रखें। जो सच्चे गुरु होंगे वे अपनी पूरी भेंटा मांग लेंगे :

चिंत भई सभ के मन मैं,
अब कौन गुरु, किस को सिर नयाईए?
पाखंड के गुरू हूए अनेक पै,
साचा गुरू इह भांति ते पाईऐ?
नानक एक गिनी मन मैं,
घर सों कछु भेट दुराय के लयाईए।
जो गुरु होइ सु मांग लए,
निज भेट न तांहि को काहू दिखाईऐ।१४९।

जितने भी ठग रूप 'गुरु' बने बैठे थे, सबके आगे थोड़ी-थोड़ी भेंटा रखी गई और सब ने वो भेंटा स्वीकार कर ली। इसके बाद वो श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब के घर पहुंचा और थोड़ी भेंटा यहां भी रख कर माथा टेक दिया। सतिगुरु जी आगे से बोल पड़े, "हमारे लिए जो भेंटा लाया है उसे छुपाता क्यों है?" इस पर मुखिया सिक्ख ने कहा कि "सतिगुरु जी! मुझे पता नहीं चलता था कि असली गुरु कौन है, इसलिए मैंने यह ढंग अपनाया।"

लीनी है भेट दुराय कछू तिन भेद न काहूं सो

*२३, क्राऊन एन्कलेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००५, मो. : ९७८११-६२१११

आखि सुनाया।
जेते भए ठग रूप गुरू तहिं राख कै तुत्थ ही सीस निवाया।
लेत खुशी उठिआ तहिं ते गुर तेग बहादर के घर आया।
अलप सी भेट धरी जब आइ के वाहिगुरू तब बोल सुनाया।१५०।
काहि दुरावत हैं हम ते जोऊ लयाया हैं भेट सु देहि हमारी।
यौ नहीं जानत हों मन मैं तब देउं बताय कहो जब सारी।
तीन ही लोक की जानत है गुरू केतिक है इहु बात बिचारी।
दीनी बताय भई तब सुध, कही तुम धंन हो रूप मुरारी।१५१।

उसने गुरु जी के चरणों में सारी भेंटा रख दी, चरणों को चूमा, ऊंची आवाज में कहा, "गुरु लाधो रे!" जब उसकी आवाज संगत ने सुनी तो सभी एकत्र हो गए। फिर गुरु जी को गुरगद्दी पर बिठाया गया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की महिमा का वर्णन : श्री गुरु तेग बहादर साहिब की महिमा का वर्णन करते हुए कवि कंकण गुरु जी के चरण-शरण के फलों को बयान करता है। कवि के अनुसार कोई काशी में बैठ कर भारी तप किए जाए, हरिद्वार में सौ बार स्नान करे, प्रयाग जाकर अपना मुंडन करा ले, फिर भी सतिगुरु जी की चरण-शरण में जाए बिना गति नहीं होती। चाहे व्यक्ति कंद-मूल खाकर गुजारा करे, भांति-भांति के कर्मकांड करे फिर भी श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में जाने के बिना मुक्ति नहीं मिलती :

चौपई : काशी बैठ करै तप भारी।
हरिदुआर न्हावै सौ वारी।
पिराग जाय जौ मूंड मुंडावै।
बिनु गुर शरन नही गति पावै।१५५। . . .
कंद मूल खावै दिन राती।
दान दिजन देवे परभाती।
और पखंड अनेक कमावै।
बिन गुर शरन नही गति पावै।१५७।

यदि मनुष्य आकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब के चरणों में लग जाए तो जन्म-मरण से केवल मुक्त ही नहीं होता बल्कि उसे मुक्ति का पदार्थ भी प्राप्त हो जाता है :

तेग बहादर गुरू की चरनी लागे आइ।
जनम मरन ते मुकत हुइ मोख पदारथ पाइ।१५८।

शहीदी का वर्णन : जगजाहिर है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत हिंदू धर्म की रक्षा हेतु एवं औरंगजेब के जुल्मों का मुंहतोड़ जवाब देने के रूप में हुई, मगर कवि कंकण ने "दस गुर कथा" में गुरु जी की शहादत का कारण गुरु जी का धन-दौलत के पक्ष से अमीर होना बताया है। कवि द्वारा बताया यह कारण सत्यता से कहीं दूर है। कवि बताता है कि एक चुगलखोर ने बादशाह के पास चुगली की कि तुम्हारे पास तो पहनने के लिए एक भी दुशाला नहीं है जबकि गुरु जी के पास ऐसे दुशाले अनेकों हैं। इस प्रकार गुरु जी को गिरफ्तार कर लिया गया :

आगरे मै सतिगुर गए सहिजे आप सुभाइ।
एक दुसट चुगली करी दिल्ली पति पाहि जाइ।१६०।
तहां अमानत गुरू की एक दुशाला आहि।
लेत तहां ते दुशट नै जाय दिखाया शाहि।१६१।
'तुमरे पहिरन कौ इहां हाथ न आवै एक।
ऐसे तौ गुरु सदन मै रहिते पड़े अनेक।'१६२।
अहिदी मुगल पठाइ कै लीना गुरू बुलाय।
बुरा करन को अपना धरा बंद महि पाइ।१६३।

इससे आगे बंद १७४-१७६ में कवि ने गुरु

जी की शहादत का जो वास्तविक कारण था, उसके बारे में भी जिक्र कर दिया है :

सीस दीया तहिं सतिगुरू सिरर न दीना जाइ।
जंञू टिक्का राखिआ चले राम गुन गाइ।१७४।
हय हय हय सभ जगत भया सुरग लोक जयकार।
भई बधाई इंद्र के आए आपि मुरारि।१७५।
इंद्र पुरी को आज ते भय काहू को नांहि।
सोढी पति गुरूअन गुरू बसै आय जिन मांहि।१७६।

बाणी-रचना : कवि के अनुसार गुरु जी की बाणी पढ़ने से पापों का नाश होता है, मन से विकार दूर होते हैं तथा मनुष्य उत्तम पदवी को प्राप्त करता है। कवि ने कहा है कि गुरु साहिब की बाणी कंठस्थ कर सबको इसका पाठ करना चाहिए :

अवर सलोक जु कीए हैं अति बिओग तिन मांहि।
तिन के पढ़नेहार के पाप निकट न रहांहि।१६९।
इन सबदन के पड़े देत बिकार भुलाय।
इन सबदन के पड़े ते उत्तम पदवी पाय।१७०।
अनिक मिठाई देख कै काहि तजै को खाय।
भला तांहि इहु जानिअहु पोट बांधि ले जाय।१७१।
जेती बाणी गुरू करी सभ ही कंठ करेइ।
ब्रहम मुहूरत पढ़े उठि तौ इस का फल लेइ।१७२।

सतिगुरु जी की बाणी की महिमा गायन करते हुए कवि लिखता है कि सतिगुरु जी की बाणी के गुण गायन करते हुए एक पुस्तक भी बना दें तो भी सारे गुण गायन नहीं हो सकते:

जो जो इस मांहि है मो पै गने न जांहि।
पुसतक कीना चाहीए तां ते बरने नांहि।१७३।

सार रूप से यही कहा जा सकता है कि "दस गुर कथा" पुस्तक में नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन के इतिहास के कुछ अंशों को बयान किया है। कहीं-कहीं तथ्य इतिहास से मेल नहीं खाते फिर भी कवि ने अपनी समझ के अनुसार गुरु साहिब की यश-कीर्ति ही की है।

कविता

माता गुजरी जी को नमन!

हे माता गुजरी! तुम पर क्या न गुजरी?
जुल्मी दुनिया अच्छाई से कभी न सुधरी।
मुगलों का जमाना था।
अन्यजाती लोगों को इसलामी बनाना था।
उन्होंने अधर्म का मार्ग अपनाया।
हिंदुओं को बहुत सताया।
हे माता जी! आपके पति गुरु तेग बहादर जी बड़े महान!
कश्मीरी पंडितों की धर्म-रक्षा के लिए दे दी अपनी जान।
हे माता जी! तुम कितनी हिम्मत और ऊंचे साहस वाली हो!
बाल गोबिंद और उनके जत्थे की, करते रहे रखवाली हो।
गुरु गोबिंद सिंघ जी भी, पिता के मार्ग को अपनाये।
अधर्म और अन्याय के आगे कभी सिर न झुकाये।
हे माता जी! तुम्हारे पौत्रों ने भी, अधर्म के आगे सिर न झुकाये।
आप की अगुआई में गुरुमंत्र जपते, वे सिक्खी की लाज निभा पाये।

-स. नानक सिंघ, मकान नं. : ४-२-३९३, अबिचलनगर साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र)-४३१६०१

"History of the Sikhs" कृत कनिंघम में वर्णित श्री गुरु तेग बहादर साहिब सम्बंधी विवरण

*-प्रो सुरिंदर कौर**

वे लोग महान होते हैं जो इतिहास में अपना नाम दर्ज करवाने में सफल होते हैं। संसार का इतिहास भी बड़ी बेसब्री से ऐसे लोगों का इंतजार करता है जो उसकी चलती धारा को बदलकर नया आयाम दे सकें। ऐसे लोगों का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित किया जाता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ऐसी ही एक महान शख्सियत हैं जिन्होंने इतिहास में शहादत को एक अद्वितीय कारण से नए शिखर पर पहुंचा दिया। किसी नेक मकसद के लिए स्वेच्छा से अपना जीवन अर्पण करना कोई सरल काम नहीं है फिर भी मानव सभ्यता इतिहास के सृजन-काल से यह करती आ रही है। हमें ऐसे बहुत-से शहीदों के नाम मिलते हैं जिन्होंने अपने समय में अपने राज्य के लिए, अपने उसूलों के लिए, अपने स्वाभिमान के लिए या अत्याचारों को रोकने के लिए जीवन भर संघर्ष किया और विपरीत परिस्थितियों में अपनी विचारधारा की रक्षा करने हेतु अपने प्राणों की आहुति दे दी। कुछेक महान शख्सियतें ऐसी भी हैं जिन्होंने अपने धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। ऐसे लोग हर धर्म में पाए जाते हैं, परंतु इतिहास में एक भी नाम ऐसा नहीं मिलता जिसने किसी दूसरे धर्म को बचाने के लिए अपना बलिदान दिया हो। इतिहास में ऐसे एक ही लौहपुरुष हुए हैं श्री गुरु तेग बहादर साहिब, जिन्होंने उस समय प्रताड़ित किये जा रहे हिंदू धर्म की रक्षा हेतु, जुल्म की आंधी से डरे-सहमे हिंदुओं को अभय-दान देने हेतु और धर्मांध औरंगजेब की अनवरत चलती अत्याचारी तलवार को रोकने के लिए हंसते हुए अपना सिर उसकी तलवार के आगे रख दिया। ऐसा इतिहास में पहली और एकमात्र बार हुआ है कि किसी धर्म-गुरु ने उन्हीं सिद्धांतों की रक्षा हेतु अपने प्राण दिए हों जिन्हें उनके ही पूर्वजों ने अस्वीकार कर दिया हो। इसका अर्थ यह नहीं लिया जा सकता कि गुरु साहिब के मन में हिंदू धर्म-सिद्धांतों के प्रति कोई आस्था जाग उठी थी, जैसा कि वर्तमान समय में प्रमाणित करने का प्रयास किया जा रहा है। गुरमति सिद्धांत, जिनकी नींव स्वयं श्री गुरु नानक देव जी ने रखी थी, यह मानता है कि धर्म के प्रति हर व्यक्ति को स्वतंत्र विचारधारा का अधिकार है। कोई भी, किसी को अत्याचार से आतंकित कर अपने धर्म में लाने के लिए विवश नहीं कर सकता। श्री गुरु नानक देव जी के काल में कथित उच्च जातीय हिंदुओं द्वारा हर प्रकार से कथित नीची जातियों का दमन किया जा रहा था। धार्मिक अधिकार केवल कथित उच्च जातियों के पास ही थे जिनके बल पर वे मासूमों को लूट रहे थे, सता रहे थे। इतिहास साक्षी है कि कुछेक संतों-महापुरुषों को छोड़कर मध्य काल में इनका विरोध करने का साहस किसी में नहीं था। ऐसे में इस अनियंत्रित, बेलगाम अत्याचार के सामने गुरु नानक साहिब सीना तानकर खड़े हो गए। उन्होंने केवल इस अत्याचार का विरोध ही नहीं

R.No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773

किया वरन् प्रत्येक विषमता से ऊपर उठाकर आम मानव को सिक्खी की धारा में लाकर स्वाभिमान का जीवन भी दिया, तभी डॉ. इकबाल कहते हैं :

फिर उठी आखिर सदाअ तौहीद की पंजाब से,
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने जगाया ख्वाब से।

इस महान वीर ने जब अपने आध्यात्मिक बल से सत्य की दहाड़ लगाई तब कायर अत्याचारी उसके समक्ष ठहर नहीं सके। ज्ञान के छोटे-छोटे दीपकों के सामने उनके ज्ञान का प्रकाश सूर्य की तेज किरणों की भांति फैला, भय का अंधकार समाप्त हो गया। भाई गुरदास जी कहते हैं :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।
सिंघु बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ। (वार १:२७)

उन्होंने केवल सात वर्ष की आयु में ही कथित उच्च जातियों के धार्मिक चिन्ह 'जनेऊ' और 'तिलक' की असारता को प्रकट करते हुए उसे पहनने से इंकार कर दिया। यह एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम था। उन्होंने अपने समय में प्रचलित दोनों ही धर्मों (हिंदू व मुसलमान) को त्याग नवीन धर्म की नींव रखी जिसमें ब्राह्मणों के भेदभावी विचारों को कोई स्थान नहीं था। यह अत्याचार के विरुद्ध एक क्रांतिकारी कदम था। कालांतर में यही उच्च जातीय धार्मिक अत्याचारी, जो अपने ही धर्म-भाइयों का दमन कर रहे थे, स्वयं विदेशियों के जुल्मों का शिकार हो गए। उन्हें जबरन मुसलमान बनाया जाने लगा, जिसमें औरंगजेब ने सबसे मुख्य भूमिका निभाई। हिंदू धर्म अपने हजारों वर्ष के इतिहास में सबसे विकट समय पर पहुंच गया। जब किसी ओर से आशा की कोई किरण शेष नहीं रही फिर एक महावीर गुरमति की स्वतंत्र धार्मिक विचारधारा और अत्याचार के विरोध के स्वर्णिम सिद्धांतों को लेकर अत्याचार को ललकारने के लिए सामने आया। पहली बार इतिहास में किसी ने समभाव दिखाया था। एक हिंदू (चंदू शाह) जो उनके दादा श्री गुरु अरजन देव जी को इतनी बेरहमी से शहीद करता है, उसके प्रति कोई द्वेष न रखते हुए उसी के धर्म की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपना अमूल्य जीवन भेंट कर देते हैं। ऐसी महान समदृष्टि इतिहास में कहीं और देखने को नहीं मिलती। इतिहास ऐसे महान व्यक्तित्व का सदा ऋणी है जिनके बलिदान ने हिंदू धर्म को मिटने से बचा लिया। 'बचित्र नाटक' में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कहते हैं :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥५॥

यही कारण है कि देश की इज्जत बचाने हेतु उनके बलिदान का आदर करते हुए उन्हें 'हिंद की चादर' कहकर संबोधित किया जाता है।

ऐसी महान शख्सियत किसी इतिहास की मुहताज नहीं है। फिर भी एक सिक्ख होने के नाते हमारा कर्त्तव्य है कि हम विभिन्न इतिहासकारों द्वारा अपने गुरु साहिबान पर लिखे हुए साहित्य का आंकलन करें। इसी प्रयोजन हेतु इस लेख में कनिंघम द्वारा लिखित "History of the Sikhs" के तथ्यों का विवेचनात्मक अध्ययन यहां प्रस्तुत है। कनिंघम ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर बहुत विस्तार से लिखा है। उनके द्वारा जिन मुख्य तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है उन्हीं का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सर्वेक्षण करने

का प्रयास इस लेख में किया जा रहा है।

गुरतागद्दी का प्रसंग : कनिंघम ने गुरु साहिब का जीवन-वृत्तांत उनकी गुरतागद्दी से आरंभ किया है। वैसे पाठकों को यह बता देना आवश्यक है कि गुरु साहिब का जन्म सन् १६२१ में श्री अमृतसर साहिब में हुआ था। कनिंघम ने कई स्रोत-ग्रंथों में अलग-अलग तिथियां देखीं, इसलिए जन्म-तिथि को लेकर वे कुछ भ्रमित हैं। वैसे भी उसका लक्ष्य गुरु साहिबान का व्यक्तिगत जीवन न होकर उनका सिक्खी के विकास व इतिहास को दिया योगदान है। गुरतागद्दी का प्रसंग कनिंघम ने कलकम, फॉरेस्टर व ब्राउन की लिखतों से प्राप्त किया है। उनके शब्दों में अपना अंतिम समय निकट जानकर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने 'बाबा बकाला' के दो शब्दों का संकेत देकर स्वयं संसार से प्रयाण कर लिया। बकाला में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के कुछ रिश्तेदार व उनके सपुत्र श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब रहते थे। इतने सारे लोगों के एक साथ होने के कारण कुछ समय तक संगत वास्तविक गुरु को ढूंढ नहीं पाई। इस बीच रामराय ने गुरतागद्दी पर दावा फिर कायम करने का प्रयास किया। कुछ समय बाद भाई मक्खण शाह अपनी मन्नत पूरी करने बकाला पहुंचे जो उन्होंने अपने डूबते जहाज को बचाने के लिए मन ही मन अंतरयामी गुरु साहिब से की थी।[६] बकाला पहुंचकर जब उन्होंने बहुत-से लोगों को गुरु-पद का दावा करते पाया तो वे सभी के समक्ष नत्मस्तक होकर थोड़ी-थोड़ी राशि रखते गए। मन में यह विचार अवश्य था कि सच्चे गुरु तो इस बात को जानते ही होंगे, अत: स्वयं अपनी शेष भेंट-राशि मांग लेंगे। जब वे श्री गुरु तेग बहादर साहिब के चरणों में पहुंचे तो ठीक वही हुआ जो उन्होंने सोचा था। सच्चे गुरु के दर्शन प्राप्त होते ही वे खुशी से झूम उठे और मकान की छत पर चढ़कर "गुरु लाधो रे!" का घोष कर दिया। गुरु साहिब को संगत के सामने प्रकट करने का श्रेय सिक्ख इतिहास में भाई मक्खण शाह को जाता है।

कनिंघम ने इसे किसी जनश्रुति के आधार पर ही लिखा है। यह भी निश्चित है कि सिक्ख विरोधी शक्तियां जो प्रत्यक्ष रूप से सिक्खों का कुछ नहीं बिगाड़ पाई थीं, वे इतिहास को बिगाड़ कर सिक्खों की छवि को मलिन करने का प्रयास कर रही थीं। कनिंघम ने यह पुस्तक उस काल में लिखी जब सिक्ख साम्राज्य का हाक ही में पतन हुआ था। महाराजा रणजीत सिंघ चिलियांवाला की हार के बाद संसार से कूच कर चुके थे। दूसरे, सिक्ख-अंग्रेज युद्ध में सिक्खों को डोगरों की गद्दारी के कारण हार का सामना करना पड़ा और स. शाम सिंघ अटारी जैसे जरनैल शहीद हो गए थे। नाबालिग कुंवर दलीप सिंघ को अंग्रेज अपने साथ ले गए थे। ऐसे समय में सिक्खों का सही इतिहास बताने वाला कौन बचा था? ऐसे समय में मुगल दरबारियों-लेखकों के रोजनामचे थे। वे थोड़े-बहुत दस्तावेज, जो उच्च-जातीय देशी लोगों ने लिखे थे, मुगल दरबारों की जी-हजूरी से अपने आप को मालामाल कर रहे थे। इन दोनों से ही सिक्खों के सही इतिहास की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। तीसरा पक्ष आम जनता में चलने वाली मौखिक कथाएं थीं और कनिंघम ने इन तीनों के आधार पर निष्पक्ष अध्ययन करने का प्रयास किया है।

जहां तक उनके उपरोक्त कथन का प्रश्न है, सिक्ख गुरु-परंपरा में गुरतागद्दी के साथ कृपाण भेंट करने की किसी प्रथा का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता। यदि ऐसा होता भी तो पहले वह कृपाण श्री गुरु हरिगोबिंद

साहिब से श्री गुरु हरिराय साहिब के पास, फिर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से होते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास आती, सीधे नहीं। दूसरी बात यह है कि इतिहास में इस तथ्य के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि केवल १३ वर्ष की आयु में उन्होंने अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की कमान में करतारपुर की जंग में अपनी तेग (तलवार) से कमाल के जौहर दिखाए थे जिससे प्रसन्न होकर गुरदेव पिता ने उनका नाम 'तेग बहादर' रख दिया। जिस व्यक्ति का नाम ही 'तेग बहादर' हो वह तेग से क्यों डरने लगा? ऐसी कथाओं को बल देने वाले का ध्येय केवल गुरु साहिब को कायर दिखाना मात्र है, जो सरासर गलत है। यह बात अलग है कि उन्हें अपने गुरु-काल में कभी तलवार उठाने की जरूरत ही नहीं पड़ी, परंतु ऐसी कथाओं के लेखक व प्रचारक केवल हाथ में तलवार उठाकर लड़ने वाले को ही वीर समझते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि हंसते हुए अत्याचारी की तलवार के आगे बेखौफ होकर सिर रख देना भी उतनी ही वीरता का काम है, अत: कनिंघम द्वारा वर्णित उपरोक्त कथा निराधार व मनगढ़त है, बेशक स्वयं कनिंघम ने यह नहीं गढ़ी है।

पूर्वी भारत की मुहिम : गुरु साहिब को सन् १६६४ में गुरतागद्दी मिली थी। उनके आरंभिक पांच-साढ़े पांच वर्ष पूर्वी भारत की यात्रा और कई महत्वपूर्ण मुहिमों पर गुजरे। कनिंघम ने इस विषय में लिखा है कि "गुरु साहिब को उनकी संदिग्ध गतिविधियों, सत्ता-प्राप्ति के प्रयासों और शांति भंग करने के आरोप में दिल्ली तलब किया गया, परंतु भाग्य से उन्हें मिरजा राजा जय सिंह के रूप में मुगल दरबार में अपना एक पक्षधर मिल गया जो औरंगजेब को यह विश्वास दिलाने में सफल हुआ कि गुरु साहिब केवल तीर्थ-यात्राओं के लिए ही देशाटन कर रहे हैं। इसके बाद गुरु साहिब पूर्व में बंगाल और आसाम की यात्रा पर चले गए जहां उन्होंने कुछ समय ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर भक्ति की। वे वहां कामरूप के राजा का दिल जीत कर उसे सिक्खी की मुख्य धारा में लाने में सफल हो गए।[२] यह घटना भी कनिंघम को मलकम और फॉरेस्टर के लेखों से ही प्राप्त हुई है, परंतु यह पूरी तरह सच नहीं है।

वास्तविकता यह है कि गुरतागद्दी पर विराजमान होने के बाद आरंभिक वर्षों में गुरु साहिब पूर्वी क्षेत्रों की प्रचार यात्रा पर गए थे जहां वे कुरुक्षेत्र, उत्तर प्रदेश, बिहार में गया, पटना आदि तथा मुंगेर, बंगाल, ढाका से होते हुए आसाम पहुंचे थे। मुगल शासन में ये साल बहुत उथल-पुथल वाले थे। सन् १६६६ के अंत तक गुरु साहिब ढाका से आगे कामरूप की ओर निकल गए थे। उसी काल में उनके घर पटना साहिब में माता गुजरी जी ने साहिबजादा श्री (गुरु) गोबिंद राय जी को जन्म दिया। इससे कुछ महीने पहले ही जब गुरु साहिब ढाका में थे, शिवाजी मराठा अपने पुत्र संभा जी के साथ आगरा में औरंगजेब की कैद से फरार हो चुके थे। औरंगजेब को संदेह था कि उन लोगों के भाग जाने में मिरजा राजा जय सिंह के पुत्र राजा राम सिंह का हाथ था, इसलिए उसने उसे सजा के तौर पर आसाम की बगावत से निपटने के लिए भेज दिया। सन् १६६९ तक वह कई बार अहोमी और बागा कबीलों से लड़ते हुए तंग आ चुका था। उन दिनों गुरु साहिब दक्षिणी आसाम से उत्तरी आसाम पहुंचे। वे भी इन निरर्थक युद्धों से आम जनता को होने वाले त्रास के कारण चिंतित हुए। अत: उन्होंने राजा राम सिंह और अहोम राजा चक्रध्वज के बीच

संधि करवाकर उस क्षेत्र में अमन कायम किया। यह घटना सन् १६७० की है।

पंजाब वापसी : आसाम व कामरूप में शांति बहाल होने के कुछ समय बाद ही गुरु साहिब पटना से होते हुए पंजाब पहुंचे। पहली बार उन्होंने अपने पुत्र श्री (गुरु) गोबिंद राय को देखा। संसार में एक पिता के लिए पुत्र-मोह से अधिक कुछ नहीं होता। इस मोह से संसार का कदाचित् ही कोई पिता बचा हो! राजा से लेकर रंक, कायर से लेकर महावीर और सामान्य नागरिक से लेकर सम्राट भी इस मोह से नहीं बच सके, इतिहास इसका साक्षी है। यदि पुत्र इकलौता हो तब तो फिर कहना ही क्या। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को आयु के पैंतालीसवें वर्ष में पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई थी। ऐसे में कोई भी पिता सिर के बल दौड़ता हुआ उस पुत्र को देखने चला आता। धन्य गुरु साहिब और धन्य उनकी नि:स्वार्थ देश-प्रेम की भावना! पुत्र का समाचार मिलने के बाद भी उन्होंने मानवता की सेवा को ही अपना सर्वोच्च कर्त्तव्य माना और आसाम में शांति बहाल करने के लिए लंबा समय वहीं रहे। जब पहली बार वे अपने बेटे से मिले तब तक श्री (गुरु) गोबिंद राय जी की आयु साढ़े तीन-चार वर्ष के बीच पहुंच गई थी। ऐसी कर्त्तव्यपरायणता और देश-सेवा का आंकलन यह देश कभी नहीं कर पाया। यही निर्मोही और कर्त्तव्यनिष्ठ भावना उनमें अपने नौ वर्ष के पुत्र को छोड़कर शहादत के लिए जाते हुए भी दिखाई देती है। जिस बालक ने बचपन से अपने पिता को इस डगर पर चलते हुए देखा हो फिर वह स्वयं कैसे पीछे रह सकता है? अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए ही कलगीधर पिता ने अपने जिगर के चारों टुकड़ों को देश-धर्म पर बलिदान कर दिया। पता नहीं यह देश कब इन बलिदानों का आदर करना सीखेगा!

खैर, पंजाब पहुंचकर गुरु साहिब ने शिवालिक के पहाड़ों की तलहटी में बहुत-सी जमीन खरीदी। माखोवाल नामक इस धरती पर उन्होंने नया नगर बसाया जिसका नाम अपनी पूज्य माता, माता नानकी जी के नाम पर 'चक्क नानकी' रखा जो बाद में 'अनंदपुर साहिब' के नाम से प्रख्यात हुआ और यही नगर खालसा का सृजन-स्थल बना। यह नगर सतलुज नदी के पास और कीरतपुर साहिब से थोड़ी ही दूरी पर है। रामराय अब भी गुरु-घर पर अपने दावे को लेकर कुछ न कुछ करते जा रहा था लेकिन आम सिक्ख संगत ने बड़े हर्षोल्लास से गुरु साहिब की पंजाब वापसी का स्वागत किया। कनिंघम कुछ ऐसी बातों का भी जिक्र करता है जो कि वास्तविक सिक्ख इतिहास से कोसों दूर है। वो लिखता है कि "श्री गुरु तेग बहादर साहिब पंजाब पहुंचकर अपने पिता के रास्ते पर तो चले पर अलग तरीके से। उन्होंने अपने सिक्खों को किसी भी तरह की लूटपाट की खुली छूट दे दी। उन्हें उस समय के एक धर्मांध मुसलमान नेता आदम हाफिज के साथ जोड़ा गया है। आदम हिंदुओं को लूटता था और उसके सहयोगी मुसलमानों को। गुरु साहिब और आदम ने सभी आवारा लुटेरों को शरण दी थी। इन लोगों की लूटपाट के कारण शाही खजाना कंगाल होने लगा था। अंतत: शाही फौजों को उनके विरुद्ध कदम उठाना पड़ा। उन्हें गिरफ्तार कर फकीर आदम हाफिज को देश निकाला दे दिया गया और गुरु साहिब के लिए औरंगजेब ने मौत का फतवा जारी कर दिया।" यह प्रसंग कनिंघम को सैय्यद गुलाम हुसैन की पुस्तक 'सियार-उल-मुतखरिन' की पृष्ठ संख्या ११२-११३ से मिला है। इसके लिए

कनिंघम ने बहुत छानबीन की होगी, ऐसा नहीं लगता, क्योंकि यह सरासर झूठ है। एक-एक घटना की वास्तविकता को प्रकट करने के लिए कनिंघम ने दिल-जान से मेहनत की है, परंतु इस बार ऐसा दिखाई नहीं देता जिसका कारण उस काल के स्रोत हैं जिन पर पीछे विवेचना दी जा चुकी है।

औरंगजेब के बढ़ते अत्याचार : इस बात को अब सारा संसार मानता है कि औरंगजेब एक धर्मांध, असहिष्णु और अत्याचारी बादशाह था, परंतु यह बात भी सच है कि ऐसा करने वाला वो पहला मुगल सम्राट नहीं था। बादशाह अकबर समझदार व सहनशील व्यक्ति था। यह सपना भी उसी ने देखा था कि सभी प्रमुख धर्मों के सद्गुणों को मिलाकर एक नया विश्व धर्म बनाया जाए जिसका नाम उसने 'दीन-ए-अलाही' रखा। उसके बाद उसके पुत्र जहांगीर ने एक ही धर्म की बात को तो आगे बढ़ाया, पर वो एक ही धर्म उसकी दृष्टि में इसलाम भी था। जजिया तो अकबर के समय से ही लगता आ रहा था। जजिया तब केवल मंदिरों की देखरेख आदि के लिए लिया जाता था और रकम भी बहुत कम थी लेकिन जहांगीर ने इसे अनिवार्य कर दिया और रकम भी बहुत बढ़ा दी। अपने धर्म को खतरा लगने वाले हर विधर्मी को उसने बड़ी बेरहमी से खत्म कर दिया। शहीद शिरोमणि श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत जहांगीर की इसी नीति का परिणाम थी। फिर शाहजहां ने भी इसी धर्मांधता को आगे बढ़ाया। अपने निर्माण-कला के शौक को पूरा करने के लिए उसने अपना सारा खजाना झोंक दिया।

शाहजहां द्वारा बनाई इमारतों का बखान तो इतिहासकार मुक्त कंठ से करते हैं पर उन्हीं की नीवों में अपने देशवासियों के खून-पसीने की गाढ़ी कमाई को छीनकर झोंका गया उन्हें दिखाई नहीं देता। उसके काल में आर्थिक व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई थी। देश का बच्चा-बच्चा आनाज के एक-एक दाने को तरस रहा था और शाहजहां सारा धन निर्जीव पत्थरों की कला साधना में फूंक रहा था। उसी काल में उत्तर भारत में भारी अकाल पड़ा और किस प्रकार श्री गुरु हरिराय साहिब ने गुरु-घर के द्वार उन लोगों के लिए खोलकर जी-जान से सेवा की इसका वृत्तांत पिछले लेखों में दिया जा चुका है। शाहजहां का यही शौक उसे राजनीति से दूर ले गया। बगावत हुई और औरंगजेब तख्त हासिल करने में सफल हो गया।

उसने खाली खजाने को भरने के लिए हिंदुओं पर जजिया कई गुना बढ़ा दिया। अब वह भी अपने पूर्वजों की भांति इसलाम को फैलाने के लिए बल प्रयोग करने लगा। उसमें और उसके पूर्वजों में केवल एक ही अंतर था कि औरंगजेब उन लोगों जितना अय्याश नहीं अर्थात् उसका एक मात्र ध्येय किसी भी प्रकार से धर्म फैलाना था जिसे वह पुण्य का काम समझता था। उसने अपनी मर्जी से अपनी नीतियों के अनुसार कानूनों में बदलाव किया और उन्हें सख्ती से लागू करने के आदेश दिए। प्रो. साहिब सिंघ के शब्दों में, "तख्त पर बैठने से पहले भी जब वह गुजरात का गवर्नर था, उसने सन् १६४४ में अहमदाबाद में चिंतामणि मंदिर को ढहा दिया और कई अन्य मंदिर भी गिरवा दिए थे। जब औरंगजेब तख्त पर बैठा, तब उसने उड़ीसा प्रांत के स्थानीय अधिकारियों को हिदायतें भेजी थीं कि दस-बारह वर्षों के भीतर बने सभी मंदिर और साधुओं की कुटियों को ढहा दिया जाए तथा किसी पुराने मंदिर की

मरम्मत न की जाए।"

सन् १६६९ में जिन दिनों श्री गुरु तेग बहादर साहिब आसाम, बंगाल आदि में थे, उस समय औरंगजेब ने सारे भारत के लिए एक नया हुक्म जारी कर दिया कि सभी काफिरों (विरोधियों) की पाठशालाएं व मंदिर गिरा दिए जाएं, उनकी धार्मिक रस्मों व शिक्षा को समाप्त कर दिया जाए। इस आदेश का परिणाम यह निकला कि मथुरा, अयोध्या, बनारस आदि हिंदू सभ्यता वाले शहरों में सभी पुराने मंदिर ध्वस्त कर दिए गए और कइयों को मस्जिदों में बदल दिया गया। हिंदुओं पर जजिया (नई दरों वाला) लगा दिया गया, धार्मिक मेलों पर सख्त पाबंदी लगा दी गई, हिंदुओं को धीरे-धीरे सरकारी नौकरियों से निकाला जाने लगा। हिंदू कौम के नेता ब्राह्मण थे और शस्त्रधारी राजपूत क्षत्रिय थे। क्षत्रिय कर्मचारी दबाये जा चुके थे और अब वे केवल मुगलों के हाथ की कठपुतली बन कर स्वयं भी अपने जाति भाइयों पर जुल्म करने लगे थे। ब्राह्मण के सामने एक ही लक्ष्य था कि वह अनपढ़ हिंदू जनता को कर्मकांड के जाल में फंसाए रख कर अपनी आजीविका को चालू रख सके। इस प्रकार से नेतृत्व के अभाव में कमजोर हिंदू लोग दम तोड़ रहे थे। हिंदुओं पर केवल अत्याचार ही नहीं हो रहा था, इसलाम स्वीकार लेने वालों को आर्थिक रियायतें और इनाम भी दिए जा रहे थे।[३] इस पर सन् १६७४ में औरंगजेब ने एक नया आदेश जारी किया कि हर दिन वह सवा मण (एक मण=४० कि. ग्र.) जनेऊ उतारेगा, तभी पानी पीयेगा। जो इसलाम कबूल नहीं करते उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाए। हिंदू धर्म पर कई बार खतरे आए थे परंतु इतनी भयंकर स्थिति का सामना उन्होंने कभी नहीं किया था।

कशमीरी पंडितों का गुरु-दरबार में आना : कशमीर उस समय हिंदू धर्म के प्रमुख गढ़ों में से एक था। अन्य हिंदू नगरों की दुर्गति के बाद कशमीर के विद्वान ब्राह्मणों को हिंदू धर्म का अस्तित्व ही खतरे में दिखाई देने लगा। बहुत धर्म-कर्म किए, पूजा-पाठ किए, राजा-महाराजा, धर्मात्मा आदि से गुहार लगाई पर कुछ हासिल न हुआ। वैसे भी कर्म के समय कोरा ध्यान निरर्थक ही है, जैसे बिल्ली को आते देख कबूतर अपनी आंखें मूंद लेता है। हर ओर से निराश होकर उन लोगों ने गुरु-घर की शरण में आने का निर्णय लिया। कशमीरी पंडित गुरमति सिद्धांतों से वाकिफ थे। श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कशमीर जा चुके थे। बड़ी तादाद में सिक्ख संगत वहां बसती थी। अतः कशमीरी पंडितों का एक दल पंडित किरपा राम के नेतृत्व में अनंदपुर साहिब पहुंचा और गुरु साहिब के समक्ष बचाव के लिए फरियाद की। गुरु नानक साहिब के दर का तो फलसफा ही यह है :

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ *(पन्ना ५४४)*

इसी प्रसंग पर कवि ने क्या खूब लिखा है:

चल कशमीरों पंडित मेरे गुरां दे दर 'ते आए।
देखे देवते धिआ के, किसे न दरद वंडाए।
जुलमां दे मारे होए पंडित, गुरां ने सीने लाए।

गुरु साहिब ने उनकी सहायता और अत्याचार का विरोध करने का निर्णय लिया। बाल श्री (गुरु) गोबिंद राय जी भी उस समय वहीं थे। वे अपने पिता के इस निर्णय से बहुत प्रसन्न हुए। एक बात यहां स्पष्ट कर देना अत्यावश्यक है कि मजलूम की रक्षा करना गुरसिक्ख का कर्त्तव्य है, किसी धर्म विशेष की रक्षा का नहीं। उस समय हिंदू मजलूम थे,

इसलिए उनकी रक्षा करना धर्म था, लेकिन ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है कि खालसा हिंदू धर्म की रक्षा के लिए ही बना है। सिक्ख सिद्धांतों का मूल यह है कि धर्म के प्रति हर व्यक्ति की स्वतंत्र विचारधारा है, किसी को बल प्रयोग कर धर्म परिवर्तन करवाने का अधिकार नहीं है। इसी गुरमति विचारधारा का निर्वाह करते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब समय की सबसे जालिम व कट्टर हकूमत के सामने सीना तान कर खड़े हो गए। उन्होंने उन्हीं पंडितों द्वारा औरंगजेब तक यह समाचार पहुंचा दिया कि अब वे पंडित निराश्रित नहीं हैं, गुरु-घर उनका संरक्षक है। यदि श्री गुरु तेग बहादर साहिब इसलाम कबूल कर लेते हैं तो सारी हिंदू जनता इसलाम कबूल कर लेगी। औरंगजेब उस समय हसन अबदाल (पंजा साहिब) के प्रांत में था। गुरु साहिब ने अपनी निडरता का परिचय तो यह संदेश भेजकर दे ही दिया, साथ ही एक और साहसी कदम भी उठाया।

आज तक कोई कत्ल होने वाला कातिल के दर तक स्वयं नहीं पहुंचा था। गुरु साहिब चाहते तो अनंदपुर साहिब में ही टिके रहकर औरंगजेब के अगले कदम का इंतजार कर सकते थे, परंतु वे तो उलटी गंगा बहाते हुए अपने कुछ अनन्य सिक्खों के साथ स्वयं प्रचार-यात्रा पर चल दिए। डरी-सहमी जनता के लिए यह संजीवनी साबित हुई। अनंदपुर साहिब में संगत ने उन्हें अंतिम विदाई दी। गुरु साहिब सन् १६७४ के अंत में वहां से चलकर सैफाबाद, समाणा, कैथल, लक्खू माजरा, रोहतक होते हुए अक्तूबर १६७५ में आगरा तक पहुंचे। जहां इस दस-ग्यारह महीने के प्रचार ने डरी-सहमी हिंदू कौम में नई रूह फूंक दी वहीं मुगल दरबार के लिए यह असहनीय भी हो गया था। आखिर औरंगजेब के हुक्म से गुरु साहिब को भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी, भाई दिआला जी आदि के साथ आगरा से गिरफ्तार करके दिल्ली लाया गया।

यातनाएं और शहादत : कनिंघम द्वारा वर्णित यह प्रसंग अत्यंत ही अविश्वसनीय है। उन्होंने लिखा है, "गिरफ्तारी के पूर्व उन्होंने (गुरु साहिब ने) अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की कृपाण अपने सपुत्र को सौंपी और साथ ही गुरतागद्दी का उत्तरदायित्व भी। साथ ही अपने सिक्खों को यह हिदायत दी कि उनकी लाश को आवारा कुत्तों के खाने के लिए न छोड़ा जाए। उन्हें बड़े ही अपमानजनक तरीके से दिल्ली लाया गया। उन्हें बादशाह के सामने प्रस्तुत किया गया और करामात दिखाने को कहा गया, परंतु गुरु साहिब ने ऐसा करने से इंकार करते हुए कहा कि मानव का कर्त्तव्य प्रभु की आराधना करना है, करामात दिखाना नहीं। हां, मैं इतना अवश्य कर सकता हूं कि एक मंत्र लिखकर अपने गले में बांधकर जल्लाद की तलवार के नीचे सिर रख देता हूं। यह तलवार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। जल्लाद के एक ही वार से उनका सिर धड़ से अलग हो गया। हैरत में पड़े दरबारियों ने जब उस कागज के टुकड़े को उठाकर पढ़ा तो उस पर लिखा हुआ था: *'सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥'* अर्थात् उन्होंने अपना सिर दे दिया पर धर्म नहीं हारा। जो भी हो श्री गुरु तेग बहादर साहिब को एक बागी घोषित करते हुए मार डाल गया।"[४] इस वृत्तांत में केवल इस बात के अतिरिक्त कि गुरु साहिब ने करामात दिखाने से इंकार कर दिया, बाकी सब मनगढ़त तथ्य हैं जो उन्हें सैय्यद हुसैन की पुस्तक से ही प्राप्त हुए हैं। वास्तविक प्रसंग इस प्रकार है :-

दिल्ली ले जाकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर अनेक प्रकार के दबाव डाले गए, उन्हें बार-बार इसलाम कबूलने के लिए कहा गया, उन्हें करामात दिखाने के लिए भी कहा गया, परंतु उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया कि ईश्वर के सेवकों को उसका गुणगान करना ही शोभा देता है। जब यह बात नहीं मानी गई तब उन्हें अनेक प्रकार से यातनाएं दी गईं, भूखा रखा गया, कीलों वाले पिंजरे में कैद किया गया और फिर एक-एक कर उनके प्रिय सिक्खों को शहीद किया गया। ९ नवंबर को भाई दिआला जी को देग में उबाल कर और १० नवंबर को भाई सतीदास जी को रूई में लपेटकर जिंदा जला शहीद कर दिया गया। एक बार फिर आम जनता में खौफ की लहर दौड़ गई, पर धन्य हैं गुरु के सिक्ख जिन्होंने अपने गुरु के वचनों का पालन करते हुए देश-सेवा के लिए हंसते हुए कष्ट सहन किए और अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। ऐसा करके मुगल गुरु साहिब को भयभीत करना चाहते थे, पर वे ऐसा कर न सके। वे नहीं जानते थे कि:

झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥
(पन्ना ९६८)

उन्होंने जो हिंदू धर्म की रक्षा का कौल दिया उसे अंतिम श्वासों तक निभाया। उनकी इस दृढ़ भावना का वर्णन करते हुए केशव भट्ट कहते हैं :

बांह जिन्हां दी पकड़ीए सिर दीजै बांह न छोडीऐ।

आखिर ११ नवंबर, १६७५ को गुरु साहिब को चांदनी चौक में लाया गया। उन पर फिर से इसलाम कबूलने के लिए जोर डाला गया, पर वे अपने वचनों पर अडिग रहे :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ (पन्ना १४२७)

जब कोई पेश नहीं गई तो गुरु साहिब के सिर को धड़ से अलग कर उन्हें शहीद कर दिया गया। इस महान शहादत को प्रणाम करते हुए कलगीधर पिता 'बचित्र नाटक' में कहते हैं:

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी ॥१३॥
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥ . . . १४॥१५॥

चांदनी चौक में जिस स्थान पर उनका शीश काटा गया था आज वहां सुंदर "गुरुद्वारा सीसगंज साहिब" सुशोभित है। जिस हिंदू धर्म के लिए गुरु साहिब और उनके साथ अनेक सिक्खों ने ऐसी लासानी शहादत दी, उस धर्म में से एक भी व्यक्ति उनकी देह के दाह संस्कार के लिए सामने नहीं आया। किसी धर्म, जाति या समुदाय के लिए इससे बड़ी और आत्मिक मौत क्या होगी? परंतु गुरु के सिक्ख ऐसे नहीं थे। भाई जैता जी ने बड़ी हिम्मत से गुरु साहिब का शीश उठा लिया और अपनी जान पर खेलकर उसे सम्मान सहित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास अनंदपुर साहिब पहुंचा दिया। भाई जैता जी ने एक समर्पित सपूत होने का ही फर्ज निभाया था। यही कारण है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें 'रंगरेटे गुरू के बेटे' कहकर सम्मानित किया। इसी भाई जैता जी ने १६९९ वैसाखी वाले दिन अमृत-पान किया और भाई जीवन सिंघ बने तथा ३० वर्ष गुरु-घर की अनथक सेवा के बाद सन् १७०४ में सरसा नदी के तट पर साहिबजादा अजीत सिंघ जी को सरसा पार कराने हेतु मुगलों से लड़ते हुए भाई उदै सिंघ

जी के साथ शहीद हुए। गुरु साहिब के धड़ को अपने ही घर के साथ जलाकर संस्कार करते हुए भाई लक्खी शाह जी ने भी एक सच्चे सपूत होने का ही कर्त्तव्य पूरा किया।

यदि श्री गुरु तेग बहादर साहिब इतनी दूरंदेशी और निडरता से यह बलिदान न देते तो कदाचित हिंदू धर्म आज अपनी इस वर्तमान स्थिति में कदापि नहीं होता। यह देश गुरु साहिब और सिक्खों का सदा ऋणी रहेगा। काश कि वह इस बलिदान के महातम को समझ सकें! कनिंघम ने गुरु साहिब के जीवन के कुछ प्रसंगों को अवश्य ही अन्य ग्रंथों के आधार पर सही प्रस्तुत नहीं किया, पर जब समग्र रूप में वे उनके जीवन को देखते हैं तो प्रशंसा ही करते हुए कहते हैं, "कुछ भी हो वे एक सच्चे इंसान थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को मुक्ति का मार्ग बताया और साथ ही सशस्त्र-क्रांति की भी प्रेरणा दी। सिक्ख उन्हें सम्मान से सच्चा पातशाह कहते थे।"

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने जीवन और शहादत से इस देश को ही नहीं समूचे इतिहास को निष्काम बलिदान मूल्य समझाया। इतिहास ऐसे महापुरुष को पाकर धन्य हो गया जो दूसरों के लिए अपना और अपने सिक्खों का मूल्यवान जीवन हंसते हुए न्यौछावर कर गए। उन्होंने अपने शब्दों कों अक्षरशः सच कर दिखाया :

जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥ (पन्ना २१९)

संदर्भ सूची :

१. गुरमति विचारधारा में मन्नत जैसी किसी सौदेबाजी को मान्यता नहीं दी जाती। यह मध्य काल में आम रिवाज के अनुसार भाई मक्खण शाह ने कर ली थी। इस लेख में इसके उल्लेख का अर्थ सिक्खों को इस ओर प्रेरित करना कतई नहीं है।

२. History of the Sikhs, J.D. Cunningham, p. 56, 57

३. जीवन ब्रितांत गुरू तेग बहादर जी, प्रो साहिब सिंघ, पृ. ३४, ३५

४. सारा वृत्तांत--History of the Sikhs, J.D. Cunningham, p. 58, 59

कविता

गुरबाणी-संदेश

कहा जो मैंने "सत् श्री अकाल।"
अंतरात्मा हुई निहाल।
मन में व्यापित हुई गुरबाणी।
श्री वाहिगुरुमय दिखा हर प्राणी।
सब के सब में उसी का नूर।
वह तो हम सबका सिरमौर।
पूर्ण करे सज्जन मन आशा।
गुरु की छांव में कौन है प्यासा?
उमड़ रही गुरु-ज्ञान की सरिता।
हर सत्कर्म का वो है कर्ता।
सुंदर वचन भाव अनमोल।
अंतरमन दरवाजा खोल!

करो प्रकाशित सच का दीपक!
नष्ट करो लालच का दीमक!
कर बंदे खुद पर उपकार!
बांट सको तो बांटो प्यार!
बलदायक गुरबाणी जप-साधना।
सिखलाती इंद्रियों को बांधना।
पांच इंद्रियां यदि हों वश में।
तब जीवन हो शाश्वत रसमय।
साधक होता झूठ से दूर।
मन में प्रसन्नता भरपूर।
पनपे जन-जन बीच में प्यार!
श्री गुरबाणी जय-जयकार!

-श्री संजय बाजपेयी रोहितास, C/o जनाब हुसैनी मियां, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)

"सिक्ख रिलीजन" कृत मैकालिफ में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-बिंब

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

गुरबाणी और सिक्ख-इतिहास के महान अध्येता मैक्स आर्थर मैकालिफ ने अपने ग्रंथ "सिक्ख रिलीजन" के चौथे भाग में नवम् पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-वृत्तांत का बारह अध्यायों में वर्णन किया है।

अवतार, बाल्यावस्था एवं अनंद कारज : मैकालिफ के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने वैसाख कृष्ण पक्ष, संवत् १६७९ वि, (अधिकतर स्रोतों में सं. १६७८ वि.) दिन रविवार, सुबह होने से सवा घड़ी पहले, गुरु के महिल (श्री अमृतसर) में पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब एवं माता नानकी जी के सबसे छोटे सपुत्र के रूप में अवतार धारण किया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब में आध्यात्मिक रुचियां बहुत छोटी अवस्था से ही प्रफुल्लित होने लगी थीं। मैकालिफ लिखता है कि मात्र पांच वर्ष की आयु में ही गुरु जी विचारों में ऐसे डूबते कि आत्मलीन हो जाते। दूसरी ओर गुरु जी योद्धा भी थे। आपने शस्त्र-प्रशिक्षण लिया और गुरु-पिता के साथ अक्सर शिकार खेलने जाते। सन् १६३४ ई में गुरु जी ने करतारपुर के युद्ध में अद्भुत वीरता दिखाई। गुरु-पिता ने आपकी 'तेग' की बहादुरी देखकर आपको 'तेग बहादर' का खिताब बख्शिश किया।

मैकालिफ के अनुसार सन् १६३२ ई में गुरु जी का शुभ अनंद कारज जलंधर जिले के कसबे करतारपुर के निवासी भाई लालचंद की सपुत्री (माता) गुजरी जी के साथ सम्पन्न हुआ। इसके बाद भी गुरु जी आध्यात्मिक साधना में लीन रहे।

गुरगद्दी-प्राप्ति : श्री गुरु तेग बहादर साहिब में गुरु-पद प्राप्त करने की बिलकुल लालसा नहीं थी, इसलिए छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, जब सन् १६४४ ई में ज्योति-जोत समाये तो आप माता गुजरी जी के साथ श्री अमृतसर के 'बकाला' गांव में आ गये और शांतिपूर्वक आध्यात्मिक साधना में लीन हो गये। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बाद श्री गुरु हरिराय साहिब (१६४४-१६६१ ई) एवं श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब (१६६१-१६६४ ई) सिक्खों का नेतृत्व करते रहे। इन २१ वर्षों में आप निरंतर साधना में रमे रहे।

बाल-गुरु अष्टम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जब ज्योति-जोत समाने लगे तब सिक्खों के आग्रह पर गुरु जी ने अगले गुरु साहिब के विषय में संकेत किया और दो शब्द कहे--'बाबा बकाले'। नवम् गुरु बकाला गांव में हैं, यह जान कर वहां गुरगद्दी के २२ दावेदार पैदा हो गये। ऐसे में एक समर्पित सिक्ख भाई मक्खण शाह (लुबाणा) ने २२ दावेदारों को झुठलाते हुए असली (गुरु) की पहचान की।

मैकालिफ ने इस प्रसंग का बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है। मैकालिफ के अनुसार भाई मक्खण शाह का एक व्यापारिक जहाज समुद्री तूफान में फंस गया। भाई साहिब ने गुरु-घर की ज्योति को ध्यान में रखकर अरदास की कि अगर जहाज सकुशल किनारे आ लगे तो वे गुरु जी को ५०० मुहरें भेंट करेंगे। जहाज सही-

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१

सलामत किनारे आ गया।

५०० मुहरें भेंट करने के लिए जब भाई मक्खण शाह बकाला गांव पहुंचे तो वहां गुरु-पद के २२ दावेदारों को देखकर चकरा गये। भाई मक्खण शाह सभी के सामने दो-दो मुहरें रख कर माथा टेकते जाते। भाई साहिब को विश्वास था कि जो भी सच्चा गुरु होगा, अपनी पूरी मन्नत स्वयं मांग लेगा। २२ के २२ दावेदारों में से कोई कुछ नहीं बोला। सभी ने आशीर्वाद देकर मुहरें संभालने की जल्दी की।

भाई मक्खण शाह असली गुरु की तलाश में घूमते-घामते उस घर के सामने पहुंचे जहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब शांतचित्त साधना-रत थे। भाई जी ने उनके सामने भी दो मुहरें रखकर माथा टेका। गुरु जी ने शांत भाव से कहा कि तुमने वादा तो ५०० मुहरें देने का किया था! सच्चे गुरु को पाकर खुशी से पागल हुए भाई मक्खण शाह घर की छत पर चढ़ गये और "गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे! . . ." पुकारने लगे। इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादर साहिब नवम् पातशाह के रूप में सिक्ख संगत के सम्मुख आये।

धीरमल की ईर्ष्या : इस घटना से बाबा गुरदित्ता जी का बड़ा बेटा धीरमल, जो स्वयं 'गुरु' बनना चाहता था, बुरी तरह बौखला गया। मैकालिफ लिखता है कि धीरमल ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर हमला करके उनका अहित करने का प्रयास किया, परंतु भाई मक्खण शाह और उनके साथियों ने गुरु जी की रक्षा की जिम्मेदारी संभाल ली एवं धीरमल की एक न चलने दी। भाई जी ने धीरमल को काबू भी कर लिया परंतु गुरु जी के कहने पर क्षमा कर दिया।

गुरु जी की अमृतसर-फेरी : मैकालिफ ने गुरु जी की उस अमृतसर-फेरी का भी वर्णन किया है जिसमें मसंद गुरु साहिब को श्री हरिमंदर साहिब में प्रवेश नहीं करने देते और अमृतसर नगर की 'माइयां' आकर गुरु जी की सेवा करती हैं।

श्री अनंदपुर साहिब की स्थापना : मैकालिफ लिखता है कि नवम् पातशाह ने आषाढ़ माह संवत् १७२२ वि. (सन् १६६५ ई.) में कीरतपुर साहिब के निकट कहिलूर के राजा से खरीदी हुई भूमि पर एक नये नगर की नींव रखी जो आगे चलकर अनंदपुर साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नवम् पातशाह की प्रचार-यात्रा : इसके उपरांत श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सिक्ख-मत के प्रचार-प्रसार हेतु यात्रा पर जाने का निर्णय लिया। मैकालिफ ने इस प्रचार-फेरी का विस्तार से वर्णन किया है।

मैकालिफ के अनुसार गुरु जी ने १५ मार्गशीर्ष संवत् १७२२ अर्थात् नवंवर १६६५ ई में अपनी प्रचार-फेरी आरंभ की। पहले गुरु जी पटियाला रियासत से होते हुए, संगत को उपदेश देते हुए सूर्य-ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र पहुंचे। वहां ब्राह्मणों को सच्चे मार्ग का उपदेश देकर आगे बढ़े। आगरा, इटावा एवं प्रयाग होते हुए बनारस पहुंचे। यहां गुरु जी कर्मनाशा नदी के तट पर गये। लोगों को भ्रम था कि कर्मनाशा में स्नान करने से सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं। गुरु जी ने सद्उपदेश देकर जनता का यह भ्रम दूर किया।

इसके बाद गुरु जी गया पहुंचे जो पितरों के तर्पण के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। गुरु जी ने ब्राह्मणों से वार्ता कर उन्हें सत्य से अवगत कराया। इसके उपरांत गुरु जी पटना पहुंचे। माता गुजरी जी गर्भावस्था के कारण आगे चलने में असमर्थ थीं, अत: उन्हें पटना में ही प्रवास करने का कह गुरु जी आगे बढ़े और मालदा, ढाका होते हुए आसाम एवं कामरूप पहुंचे। यहां गुरु जी ने औरंगजेब के प्रतिनिधि एवं गुरु-घर के श्रद्धालु राजा राम सिंह तथा

आसाम के नरेश के मध्य संधि करवाई।

इन्हीं दिनों नवम् पातशाह को पटना में श्री (गुरु) गोबिंद राय जी के अवतार धारण करने की सूचना मिली। गुरु जी पुत्र से मिलने के लिए पटना वापिस आ गये और कुछ समय बाद सपरिवार अनंदपुर साहिब वापिस आ गये।

कशमीरी पंडितों की फरियाद : नवम् पातशाह की शहादत से संबंधित घटनाओं का मैकालिफ ने बड़ी आत्मीयता से वर्णन किया है। मैकालिफ लिखता है कि उन दिनों औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और अत्याचार अपने चरम पर पहुंच चुका था। वह भारत से हिंदू धर्म को पूरी तरह मिटा देना चाहता था। उसका एक सूबेदार शेर अफगान अपने सूबे कशमीर में हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बना रहा था। यह बात सन् १६७५ ई की है। कश्मीरी पंडितों का एक दल पंडित किरपा राम की सरपरस्ती में नवम् पातशाह के दरबार में आया और फरियाद की कि "हे सच्चे पातशाह! कशमीर का सूबेदार शेर अफगान औरंगजेब को खुश करने के लिए हिंदुओं को जबरन मुसलमान बना रहा है। आप हमारी रक्षा करें।" कशमीरी पंडितों की बात सुनकर गुरु जी चिंतित हो उठे। इतने में मात्र नौ वर्षीय बाल गोबिंद राय जी वहां आ गये। गुरु-पिता को चिंताग्रस्त देखकर कारण पूछा। गुरु जी ने कशमीरी पंडितों की व्यथा कह सुनाई और कहा कि "इनकी रक्षा तभी हो सकती है जब कोई महापुरुष बलिदान दे।" बाल गोबिंद राय जी ने स्वाभाविक रूप से उत्तर दिया कि "इस महान बलिदान के लिए आपसे बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है?"

मैकालिफ लिखता है कि यह सुनकर नवम् पातशाह ने कशमीरी पंडितों को आश्वासन दिया कि बादशाह से जाकर कहो कि "पहले श्री गुरु तेग बहादर साहिब को इसलाम कबूल करवाओ, फिर हम भी मुसलमान बन जायेंगे।"

औरंगजेब से टक्कर : मैकालिफ आगे लिखता है कि औरंगजेब गुरु जी की घोषणा सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसे लगा कि यदि गुरु साहिब को मुसलमान बना लिया जाये तो अनेक हिंदू-सिक्खों को मुसलमान बनाने का रास्ता खुल जायेगा।

नवम् पातशाह ने बाल गोबिंद राय जी को गुरगद्दी सौंपी और पांच सिक्खों के साथ दिल्ली आ गये। औरंगजेब गुरु जी से मिला और बोला कि मैं चाहता हूं कि एक ही धर्म रहे। हिंदू धर्म झूठा और व्यर्थ है। गुरु जी ने उसे समझाया कि वह सबकी धार्मिक स्वतंत्रता का सम्मान करे।

शक्ति-प्रयोग से कोई धर्म खत्म नहीं हो सकता। गुरु जी ने पांच मण काली मिर्चें मंगवाईं। उन्हें आग में जलाया। दो दिन बाद जब आग बुझी, तब भी राख में से काली मिर्च के तीन दाने सुरक्षित बाहर निकल आये। गुरु जी ने औरंगजेब को समझाया कि इतनी आग से ये मिर्चें खत्म नहीं हुईं तो तेरी ताकत (आग) से धर्म कैसे खत्म हो सकेगा?

मैकालिफ आगे लिखता है कि इस पर औरंगजेब क्रोधित हो उठा। उसने गुरु जी के सामने तीन शर्तें रखीं। पहली कि वे इसलाम कबूल करें, दूसरी कि कोई करामात करके दिखायें या फिर तीसरी कि शहादत के लिए तैयार रहें।

गुरु जी ने उत्तर दिया कि मैं धर्म-परिवर्तन के खिलाफ हूं और करामात ईश्वर की इच्छा का अपमान है। फलस्वरूप गुरु जी को तीन साथी सिक्खों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें यातनाएं दी जाने लगीं परंतु गुरु जी अटल एवं अचल थे।

शहादत : मैकालिफ लिखता है कि अंततः भाई मतीदास जी को आरे से चीरकर, भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर जलाकर और तीसरे

सिक्ख भाई दिआला जी को देग (पतीले) में उबाल कर शहीद कर दिया गया।

इसके बाद गुरु जी पर अनेक अत्याचार किये गये, परंतु गुरु जी अचल रहे। अंतत: मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, पांचवीं संवत् १७३२ वि. अनुसार सन् १६७५ ई. में गुरु जी का शीश काट कर उन्हें शहीद कर दिया गया।

मैकालिफ के अनुसार तभी तेज धूल भरी आंधी आई और भाई जैता जी ने कड़े पहरे में से गुरु जी का शीश संभाला और उसे लेकर अनंदपुर साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास पहुंचा। उधर भाई लक्खी शाह और उसके साथी गुरु साहिब के शरीर को अपने घर ले आये तथा घर को आग लगा कर शरीर का दाह संस्कार किया।

मैकालिफ ने इसके बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित शबद *"तिलक जंञू राखा प्रभ ता का"* पूर्ण रूप से देकर नवम् पातशाह की अद्वितीय शहादत के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की है।

कविताएं

दूसरों के उसूलों के लिए जान देना

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

अपने उसूलों पर जान देना, बहुत बड़ी बात है
सुकरात ने जहर का प्याला पी लिया
मगर अपने 'सच' को नहीं छोड़ा
अपने अकीदे पर डटे ईसा चढ़ गये सूली पर
मंसूर 'संगसार' हुआ
पर नहीं हटा पीछे 'अनहलक' से
सरमद ने खाल खिंचवा ली
लेकिन झूठ से समझौता नहीं किया
वाकई अपने उसूलों पर जान देना,
बहुत बड़ी बात है
पर मेरे नव-निधियों के दाता पातशाह
तुमने तो उस धर्म के लिए शीश कटा दिया
जो तुम्हारा था ही नहीं
तुमने तो उस 'तिलक-जनेऊ' के लिए जान दे दी
जो तुम्हारे धर्म में निषिद्ध थे
अपने उसूलों पर जान देना,
वाकई बहुत बड़ी बात है
लेकिन उससे भी बड़ी, सबसे बड़ी बात है
दूसरों के उसूलों के लिए जान देना।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

वंदना

*-स. महेन्द्र सिंघ बग्गा**

सतिगुरु तेरे चरणों की, 'गर धूल जो मिल जाए!
सच कहता हूं बस, मेरी तकदीर बदल जाए!
कहते हैं तेरी रहमत, दिन-रात बरसती है,
एक बूंद जो मिल जाए, कली मन की खिल जाए!
यह मन है बड़ा चंचल, इसे कैसे समझाऊं?
जितना समझाऊं इसे, उतना ही मचल जाए!
कृपा की नज़र रखना, नज़रों से गिराना न,
नज़रों से जो गिर जाए, मुश्किल है संभल पाए!
सतिगुरु मेरे जीवन की, बस, एक तमन्ना है,
दर पर पहुंचूं तेरे, चाहे दम ही निकल जाए!

**५६, गणेश बाग, बूंदी (राजस्थान)-३२३००१, मो. : ९८२९०९८१७७*

"History of Sikhs" कृत डॉ. हरीराम गुप्ता में श्री गुरु तेग बहादर साहिब

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

ग्वालियर के किले में अपने साथ बंदी ५२ राजाओं को मुक्त करवाकर छठे सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सन् १६२० में श्री अमृतसर पधारे। वहीं पर उनके सबसे छोटे सपुत्र का जन्म १ अप्रैल, सन् १६२१ को रविवार के दिन हुआ। अपनी धर्म-पत्नी माता नानकी जी की राय लेकर गुरु साहिब ने उनका नाम 'तिआगमल' रख दिया। ११२ वर्ष की अवस्था वाले बाबा बुड्ढा जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

बाबा तिआगमल जी को हर तरह सुशिक्षित किया गया। वे बड़े गंभीर स्वभाव के थे। श्री अकाल तख्त साहिब में सिक्ख ढाडी जो वारें गाते थे, वे उन्हें अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनते थे। शांत स्वभाव के बावजूद कुश्तियां, गतका और खेल प्रतियोगिताएं देखने में भी उनकी रुचि थी। आठ वर्ष की अवस्था में ही उन्हें चरण पाहुल पिलाकर सिक्ख धर्म में आस्थावान बना लिया गया था। वे अपने पिता की धार्मिक अदालतों के अतिरिक्त लंगरों में भी पधारते थे। इस प्रकार के राजनैतिक और धार्मिक प्रभाव में पालित बाबा तिआगमल अपने चार बड़े भाइयों (बाबा गुरदित्ता जी, बाबा सूरजमल जी, बाबा अणी राय जी और बाबा अटल राय जी) के अकाल चलाणे के कारण संसार से उचाट होकर केवल पूजा-पाठ और ध्यानावस्था में लीन रहने लगे। माता नानकी जी अपने पुत्र की इस परिवर्तित मनोवैज्ञानिक स्थिति को देखकर चिंतित रहने लगीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब उस समय कीरतपुर नगर (जलंधर से पंद्रह किलोमीटर दूर) में टिके हुए थे और बाबा तिआगमल जी बारह वर्ष के हो गए थे। अपनी धर्म-पत्नी माता नानकी जी का सुझाव मानकर उन्होंने उसी नगर में बसे खुभीखी खत्री गोत्र के श्री लालचंद की पुत्री (माता) गुजरी जी के साथ ४ फरवरी, सन् १६३३ को विवाह कर दिया।

श्री तिआगमल से श्री (गुरु) तेग बहादर नाम-परिवर्तन : लाहौर के सूबेदार ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए मीर बडेहरा और पैंदे खान की कमान में करतारपुर नगर को घेर लिया। गुरु साहिब के पास उस समय पांच हजार सिपाही थे, किंतु समय की नजाकत देखकर श्री तिआगमल ने भी पंद्रह वर्ष की अवस्था में दुश्मनों के छक्के छुड़ाने में गुरु-पिता जी को भरपूर योगदान किया। अपने सपुत्र की वीरता से प्रभावित होकर गुरु साहिब ने उसका नाम 'तिआगमल' से 'तेग बहादर' रख दिया। इसके बारे में एक अंग्रेज इतिहासकार ने टिप्पणी की है : "तेग बहादर का अर्थ है--तलवार का धनी।" जे. एच. गोरडोन का कथन है कि "तिआगमल अपने आप को 'देग बहादर' कहलाना अधिक पसंद करते थे, जिसका अर्थ है 'मेहमानदारी में शिरोमणि' अथवा गरीब का सहायक और भूखों की भूख मिटाकर खुश होने वाला।" (Tegh Bahadur means Lord of the sword. J. H. Gordon says that 'Tyagmal' preferred to

**९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६*

be called 'Deg Bahadur', Lord of Hospitality or the supporter of the poor and cherisher of the hungry.)[१]

वस्तुतः ग्रेगर का कथन है, क्योंकि पिता का देहांत हो जाने पर भी श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब ने गुरगद्दी में कोई रुचि न ली, बल्कि श्री अमृतसर से ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित **'बाबा बकाला'** नामक कसबे में अपनी कृषि की आमदनी से गुजारा करते रहे। दोपहर में वे एक **'भोरे'** (cell excavated for worship in solitude) में ध्यानमग्न हो जाते थे।

धार्मिक यात्राएं : २१ वर्ष (सन् १६३५-५६) तक बाबा बकाला में निवास करने के पश्चात श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब ने अपने पूर्ववर्ती श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अमरदास जी की तरह धर्म-स्थलों की यात्रा करने का मन बनाया। उन्होंने अपनी माता नानकी जी तथा धर्म-पत्नी माता गुजरी जी के अतिरिक्त दो संबंधियों और पांच शिष्यों को साथ लिया। बाबा बकाला से वे जून १६५६ ई में कीरतपुर पहुंचे। तद्नंतर कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में टिके। सन् १६५७ में वैसाखी का त्यौहार २९ मई को मनाया गया था। तब वे हरिद्वार में कई महीने तक रहे और अक्तूबर १६५७ ई में गढ़मुक्तेश्वर (आधुनिक पूर्वांचल) के वार्षिक मेले में भाग लेकर पंजाब लौटे।

उनकी दूसरी धार्मिक यात्रा (सन् १६६०-१६६४) में माता गुजरी जी उनके साथ नहीं गईं। वे अपने कुछ संबंधियों तथा शिष्यों के साथ कुरुक्षेत्र, दिल्ली, मथुरा और आगरा का भ्रमण करने के पश्चात् १९ अप्रैल, सन् १६६१ को प्रयागराज (इलाहाबाद) पहुंचे। लगभग दो महीने बाद २१ जून, सन् १६६१ को वे बनारस (उ. प्र.) पधारे। तद्नंदर वे बिहार के सासाराम और हिंदू तीर्थ गया की यात्रा करने के पश्चात् पटना में कुछ दिन टिके। वहां से वे पुनः वाराणसी में कुछ समय टिककर सड़क के रास्ते से प्रयाग की ओर चल पड़े। तभी उन्हें सातवें सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब के परलोक गमन का समाचार मिला और उन्होंने **'त्रिवेणी'** (गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियों के संगम-स्थल) पर उनकी आत्मिक शांति के लिए अरदास की। २१ मार्च, सन् १६६४ को उन्होंने माता सुलक्खणी जी के पास पहुंचकर सातवें गुरु साहिब की दिवंगत आत्मा को श्रद्धा-सुमन भेंट किए। उस समय आठवें सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली में ही विराजमान थे।

नौवें गुरु के रूप में मनोनयन : अभी उनकी परस्पर भेंट के दो-तीन दिन ही बीते थे कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को २५ मार्च, सन् १६६४ को चेचक निकल आई। इस भयंकर रोग से मुक्त होना असंभव देखकर वे अपने श्रद्धालुओं की प्रार्थना पर अपना दाहिना हाथ गोलाकार घुमाते हुए 'बाबा बकाला' शब्द उचारते हुए ज्योति-जोत समा गए। यह दुखद घटना ३० मार्च, सन् १६६४ को घटित हुई। इतने से ही समझदार सिक्ख संगत समझ गई कि उन्होंने श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब को बड़े सीमित शब्दों में गुरगद्दी प्रदान की है। जैसे ही यह खबर श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब के कीरतपुर, करतारपुर, श्री अमृतसर तथा पंजाब के अन्य नगरों में बसे सोढी-खत्री रिश्तेदारों तक पहुंची तो श्री गुरु अमरदास जी द्वारा स्थापित २२ मंजियों (धर्म-प्रचार केंद्र) में से ग्यारह के संचालक सिक्ख धर्म की गुरु-पदवी पर अपनी दावेदारी जताने लगे। इनमें श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब का भतीजा धीरमल सोढी भी शामिल हो गया, जिसके पास श्री गुरु अरजन

देव जी के समय से तैयार की गई 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) की संकलित हस्तलिखित प्रति भी सुरक्षित थी। उसने नौवें गुरु का स्थान प्राप्त करने के लिए कुछ मसंदों और भड़काने वाले लोगों की मुट्ठी गर्म करने में भी संकोच न किया।

इतना सब कुछ होने के बावजूद श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब किंचित भी विचलित न हुए और भक्ति तथा आध्यात्मिक साधना में मस्त रहते। धीरमल की उग्रवादी प्रवृत्तियों के प्रति चौकस उनकी माता जी ने श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे श्री द्वारिका दास को गोइंदवाल से बाबा बकाला बुलवाकर मामले को सुलझाने की प्रार्थना की।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की शैशव-अवस्था के कारण गुरु-घर का कार्य चलाने के लिए पांच सिक्खों की परिषद बनाई गई थी, जिसे सामन्य भाषा में 'पंचायत' कहा जाता था। इसके पांच सदस्य सिक्ख धर्म से संबद्ध निम्नलिखित कार्यों का संचालन करते थे :

१. भाई गुरदित्ता जी, जो कि मुख्य ग्रंथी की सेवा निभाते थे। वे बाबा बुड्ढा जी के सपुत्र थे।
२. भाई दरगाह मल, जो कि जेहलम जिले के निवासी, मोहयाल ब्राह्मण श्री द्वारिका दास के बेटे थे; वित्तीय मामलों की देखरेख करते थे। उनकी पदवी दीवान की थी और वे पंचायत की सभी बैठकों की अध्यक्षता करते थे।
३-४. भाई दरगाह मल के चचेरे भ्राता भाई मतीदास जी, गुरु साहिब के अंगरक्षकों के प्रमुख थे और उनके दूसरे चचेरे भ्राता भाई सतीदास जी पत्र-व्यवहार संबंधी कार्यों की देखरेख करते थे।
५. भाई मनी सिंघ जी शहीद के बड़े भाई, भाई दिआल दास जी झगड़े आदि निपटाने में न्यायाधीश का कार्य करते थे। वे मुलतान जिले के अलीपुर नामक कसबे के निवासी थे।

यह पंचायत एक छोटी-सी मंत्री परिषद का कार्य निभाती थी और इसका निर्णय सर्वमान्य होता था।

श्री द्वारका दास ने पंचायत के पांच सदस्यों को बुलाकर उनसे निवेदन किया कि वे नौवें गुरु जी के बारे में अपना निर्णय सुनाकर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब द्वारा किए गए इशारे का खुलासा करें। वे सभी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की माता सुलक्खणी जी को अपने साथ लेकर अगस्त १६६४ में बाबा बकाला पहुंच गए। वे सीधे माता नानकी जी के घर पहुंचे और उन्होंने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के परलोक गमन कर जाने तथा अंतिम समय में 'बाबा बकाला' के संकेत द्वारा श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब को अपना उत्तराधिकारी घोषित किए जाने की सूचना दी। अत: 'बाबा बकाला' के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की बैठक बुलाई गई। उनके सामूहिक निर्णय के पश्चात् मुख्य ग्रंथी भाई गुरदित्ता जी ने श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब समक्ष माथा टेक कर उनके नौवें गुरु की पदवी पर आसीन होने की पुष्टि कर दी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अत्यंत नम्रता और सत्कारपूर्वक वह पावन जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए यह घोषणा की कि वे सदा श्री गुरु नानक देव जी के पंथ के वफादार रहेंगे। यह पुनीत कार्य सन् १६६४ में संपन्न हुआ। तद्नंतर श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारका दास, दीवान दरगाह मल और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के मामा श्री जग्गू जी को साथ लेकर २१ अगस्त, १६६४ को कीरतपुर साहिब पहुंचे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ख्याति और निकटस्थ संबंधियों द्वारा विरोध : कशमीर

के परगना मुजफ्फराबाद के टांडा नामक गांव का भाई मक्खण शाह नामक बंजारा भारत के अधिकांश भागों और रण-क्षेत्र की ओर बढ़ रहे सैनिकों के उपयोग के लिए अनाज, गुड़, तेल और नमक मुहैया कराता था। उसकी सिक्ख गुरु साहिबान में दृढ़ आस्था थी। अचानक वह विपदाग्रस्त हो गया तो उसने मन्नत मांगी कि इस आपदा से यदि उसे छुटकारा मिल जाए तो वह गुरु साहिब को एक सौ एक मुहरें भेंट करेगा। वाहिगुरु की कृपा से वह शीघ्र संकट-मुक्त होकर ९ अक्तूबर, सन् १६६४ को बाबा बकाला पहुंचा। उस दिन दीपावली त्योहार के कारण खूब चहल-पहल थी।

भाई मक्खण शाह अपनी पत्नी, दो बेटों, बीस नौकरों तथा अंगरक्षकों के साथ आया था। इनमें से कुछ बैलगाड़ियों और अन्य घोड़ों पर चढ़कर आए थे। वह जिसे भी पूछता तो हरेक अपने आप को 'सिक्ख गुरु' बता देता और भाई मक्खण शाह उसके हाथ पर दो मुहरें रख देता। काफी समय तक जब उनमें से किसी ने भी मन्नत की पूरी रकम (एक सौ एक मुहरें) न मांगीं तो वह समझ गया कि वे सभी गुरु-पदवी का ढोंग रच रहे हैं। अंततः किसी महापुरुष ने भाई मक्खण शाह को श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब का सही ठिकाना बता दिया। उसने गुरु साहिब के दर्शन करने के पश्चात् अपनी थैली से निकाल कर दो मुहरें उनके हाथ पर रख दीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने एक क्षण के लिए अपनी आंखें बंद करके कहा, "भाई! तुमने मन्नत पूरी होने पर एक सौ एक मुहरें देने का निश्चय किया था, किंतु अब केवल दो मुहरें भेंट करके संतुष्ट हो रहे हो?"

भाई मक्खण शाह गुरु साहिब के मुखारबिंद से यह सच्ची बात सुनकर भावविभोर होकर गुरु साहिब के चरणों पर शीश झुकाने लगा। गुरु साहिब ने उसका सिर सहलाकर आशीर्वाद दिया तो वह खुशी से फूला न समाया और गुरु साहिब के निवास-स्थान की छत पर पहुंचकर जोर-जोर से "गुरु लाधो रे!, गुरु लाधो रे!"[२] (मैंने गुरु ढूंढ लिया है।[३]) पुकारने लगा, तब सारे बकाला कसबे में यह समाचार फैला कि सच्चा गुरु मिल गया है, जो श्री गुरु नानक देव जी की गद्दी पर आसीन होगा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का भतीजा धीरमल तो पहले से ही गुरगद्दी पर अपना दावा जता रहा था। भाई मक्खण शाह के इन वचनों से वह और अधिक तिलमिला उठा। जैसे ही भाई मक्खण शाह वहां से विदा हुआ तो धीरमल ने अपने एक सौ के लगभग शस्त्रधारी शिष्यों को उकसाकर गुरु साहिब के घर पर धावा बोलने के लिए भेज दिया। सीहां नामक उसके एक मसंद ने तो गुरु साहिब पर गोली भी चला दी, जो कि उनके कंधे को छूती हुई चली गई। धीरमल के पिट्ठुओं ने गुरु साहिब का सारा सामान लूट लिया। कुछ ही घंटों में इस उत्पात की खबर भाई मक्खण शाह को मिली तो वह अपने दल-बल समेत लौट आया और गुरु साहिब का सारा सामान, धीरमल के घर की कुछ वस्तुओं तथा श्री आदि ग्रंथ साहिब की हस्तलिखित मूल प्रति की उठवाकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास ले आया। गुरु साहिब ने धीरमल का सारा सामान लौटा दिया, केवल श्री आदि ग्रंथ साहिब की प्रति अपने पास रखी। दयालु गुरु साहिब के उस समय जो अनमोल वचन थे, उन्हें एम. ए. मैकालिफ के इतिहास-ग्रंथ से लेखक ने इस प्रकार उद्धृत किया है :

"To exercise forgiveness is great act,
To exercise forgiveness is to give alms.

Forgiveness is equal to ablution at all places of pilgrimage. Forgiveness ensures the man's salvation. There is no virtue equal to forgiveness."[४]

अर्थात्

करनी छिमा महां तप जान।
छिमा करनि ही दैबो दान।
छिमा सकल तीरथ अशनान।
छिमा करति नर का कलिआण ॥४३॥
छिमा समान आन गुण नांही।
यां ते छिमा धरहु मन माही।

(गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ, रास ११:१७)

सिक्ख धर्म-स्थलों की यात्रा : गुरगद्दी पर पूर्ण अधिकार हो जाने पर गुरु साहिब अपनी जन्म-दात्री माता नानकी जी, धर्म-पत्नी माता गुजरी जी, अपने साले भाई किरपाल चंद जी तथा कुछ श्रद्धालुओं के साथ २२ नवंबर, सन् १६६४ को श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में माथ टेकने पहुंचे। भाई मक्खण शाह भी आस-पास अपने व्यापार-कार्य की व्यस्तताएं भुलाकर श्री अमृतसर पहुंच गया। गुरु साहिब के आगमन की सूचना मिलते ही कुछ विरोधियों ने श्री अकाल तख्त साहिब तथा श्री हरिमंदर साहिब के दरवाजे बंद कर दिए। गुरु जी और उनके साथी श्री अकाल तख्त साहिब से कुछ दूरी पर एक पेड़ के नीचे टिके, जहां पर अब 'थड़ा साहिब' नामक गुरुद्वारा सुशोभित है। भाई मक्खण शाह ने विरोधियों को डरा-धमकाकर गुरु साहिब और उनके परिवार को श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करवाए। गुरु साहिब ने भाई मक्खण शाह को समझा दिया कि वह उनके विरोधियों के प्रति कोई दंडनीय कार्यवाही न करे। सिक्ख इतिहास में ये विरोधी लोग 'मीणे' कहलाने लगे।

श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनों के पश्चात् आप खडूर साहिब पहुंचे, जो श्री गुरु अंगद देव जी के समय सिक्ख धर्म का मुख्य प्रचार-केंद्र था। इसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी के गुरु-काल में ख्याति प्राप्त गोइंदवाल कसबे की भी यात्रा की। तद्नंदर वे पुन: बाबा बकाला आ गए और ७ नवंबर, सन् १६६५ को कीरतपुर साहिब पहुंचे। वहां पर उन्होंने कीरतपुर साहिब से १३ किलोमीटर की दूरी पर माखोवाल नामक गांव में एक स्थान चुना और ५०० रुपए अदा करके उसका पंजीकरण करवा लिया। वह स्थल श्री गुरु तेग बहादर साहिब की माता नानकी जी के नाम पर 'चक्क नानकी' कहलाया तथा बाद में 'श्री अनंदपुर साहिब।'

दिल्ली में कैद : कुछ समय के पश्चात् गुरु साहिब मालवा के गांवों में अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा स्थापित संगत (धर्म-प्रचार केंद्र) से जुड़े लोगों से मिलने गए। नवंबर, सन् १६६५ में वे दिल्ली से लगभग १७० किलोमीटर की दूरी पर स्थित धमतान नामक गांव में शिकार खेलने गए हुए थे कि मुगल बादशाह औरंगजेब का आलम खां नामक एक दूत उन्हें गिरफ्तार करने का वारंट दिखाकर दिल्ली ले गया। उनके साथ कई गुरु-भक्तों को भी बंदी बना लिया गया और सभी को औरंगजेब ने मिर्जा राजा जय सिंह के पुत्र राम सिंह की हवेली में कैद करवाकर कुछ दिनों के पश्चात श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने का आदेश जारी कर दिया। राम सिंह की जमानत पर गुरु साहिब को उनके साथियों समेत ११ जनवरी, १६६६ ई को मुक्त कर दिया गया।

गुरु साहिब की अन्य यात्राएं : दिल्ली से बाबा

बकाला पहुंचने के कुछ दिन पश्चात गुरु साहिब ने फिर भारत-भ्रमण का मन बनाया, जो कि गुरु नानक साहिब के पद-चिन्हों पर चलने एवं सिक्ख धर्म के प्रचार का उद्देश्य था। वे पिहोवा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वृंदावन, आगरा, इटावा, गया होते हुए अगस्त १६६६ में पटना पहुंचे। तद्नंदर वे दिल्ली में औरंगजेब की कैद से छुड़वाने वाले अंबर (जयपुर) के महाराजा राम सिंह की सहायता के लिए ढाका (बंगाल) और आसाम में टिके।

औरंगजेब की धर्मांधता और गुरु साहिब की शहीदी : गुरु साहिब के पंजाब से लगभग ६ वर्ष तक दूर रहने के दौरान औरंगजेब ने कई हिंदू विरोधी उत्पात किए। कहीं हिंदू-मंदिरों को धराशायी करवा दिया और कहीं पर हिंदुओं को मुसलमान बनने पर जोर दिया गया। उसे तो इस बात की भी चिढ़ थी कि गुरु साहिब के नाम के पीछे 'बहादर' शब्द जोड़ा जाता है और उनके श्रद्धालु उन्हें 'सच्चा पातशाह' पुकारते हैं।

सन् १६७१ में बादशाह औरंगजेब ने नवाब इफ्तिखार खां को बंगाल का सूबेदार नियुक्त कर दिया और वो कशमीरी पंडितों को इसलाम धर्म अपनाने के लिए कई तरह के हथकंडों का उपयोग करने लगा। उससे पूर्ववर्ती मुगल शासकों की हिंदू और सिक्ख विरोधी नीतियों से जूझने के लिए गुरु साहिब के पूज्य पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने शास्त्रास्त्र धारण कर लिए थे। आठवें गुरु साहिब के शैशव काल में जो पंचायत बनाई गई थी उसके पांच में से तीन सदस्य छिब्बर गोत्रीय कशमीरी ब्राह्मण थे। इनमें से दो भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब के परम विश्वसनीय साथी के रूप में सिक्ख धर्म की सेवा जी-जान से निभाते आ रहे थे। इन्हीं बातों से प्रेरित होकर १५ कशमीरी पंडितों का एक प्रतिनिधि-मंडल नवाब इफ्तिखार खां के द्वारा उत्पन्न किए गए धर्म-संकट से छुटकारा पाने का उपाय सुझाने के लिए किरपा राम दत्त के नेतृत्व में २५ मई, सन् १६७५ को अनंदपुर साहिब (पंजाब) में गुरु साहिब की शरण में पहुंचा।

गुरु साहिब ने उनकी करुणव्यथा सुनकर उन्हें धैर्य देते हुए पंजाबी भाषा में कहा, "तुसां की रक्षा गुरु नानक देव जी करेगा।" (The Guru gave them consolation and said Guru Nanak would protect them.) मासूम लोगों की दयनीय दशा को देखकर गुरु साहिब कुछ बेचैन दिखाई पड़े। अपने पूज्य पिता की ऐसी दशा को देखकर उनके साढ़े आठ वर्ष की अवस्था वाले सपुत्र श्री गोबिंद राय जी (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने कहा कि "आप से बढ़कर प्रतापी भला अन्य कौन-सा धार्मिक व्यक्ति हो सकता है?"

गुरु साहिब ने पंडितों को कहा कि वे कशमीर के सूबेदार को कह दें कि "वो पहले हमें (श्री गुरु तेग बहादर साहिब को) धर्म-परिवर्तन के लिए विवश करे, उसके बाद कहना कि फिर हम भी उनका अनुकरण करेंगे।" वहां से विदा होकर कशमीरी पंडितों ने यही बात नवाब इफ्तिखार खां को कह दी। उसने कशमीर की सीमा पर स्थित हसन अब्दाल में टिके हुए बादशाह औरंगजेब को यह खबर पहुंचा दी। औरंगजेब ने लाहौर के सूबेदार के नाम पर यह फरमान (आदेश) जारी कर दिया कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गिरफ्तार करके तब तक कैदी बनाकर लाहौर में रखा जाए जब तब उन्हें दिल्ली न बुला लिया जाए। इस शाही फरमान की एक प्रति सरहिंद के फौजदार अब्दुल अजीज दिलावर खां को भेज दी गई। उन दिनों अनंदपुर साहिब नामक कसबे का सुरक्षा प्रबंध रोपड़ का कोतवाल करता था।

उसका नाम नूर मुहम्मद खां मिर्जा था। उसने अपने गुप्तचरों द्वारा गुरु साहिब की गतिविधियों की सूचनाएं प्राप्त करनी शुरू कर दीं। गुरु साहिब ने अपने तीन परम भक्तों--भाई सतीदास जी, भाई मतीदास जी और भाई दिआल दास जी को साथ लेकर धार्मिक-यात्रा का कार्यक्रम बनाया। एत्दर्थ ११ जुलाई, सन् १६७५ को उन्होंने प्रस्थान किया तो चालीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित मलकपुर रंघड़ नामक एक बहु-मुस्लिम ग्राम में रात को विश्राम के लिए वे लोग टिके। अगली सुबह लगभग तीन बजे मुस्लिम सिपाही गुरु साहिब और उनके तीनों साथियों को गिरफ्तार करने के बाद उन्हें सरहिंद की ओर ले गए। औरंगजेब के हसन अब्दाल से दिल्ली लौटने तक उन चारों को बस्सी पठाणा (सरहिंद से लगभग आठ किलोमीटर दूरी पर स्थित कसबा) में अपराधियों की भांति रखा गया। ५ नवंबर, १६७५ ई को गुरु साहिब को लोहे के एक पिंजरे में कैद कर और उन्हें एक हाथी की पीठ पर रखकर दिल्ली भेजा गया। गुरु साहिब के साथियों के हाथों और पैरों को लोहे की सलाखों में जकड़कर एक बैलगाड़ी द्वारा दिल्ली रवाना किया गया।

५ नवंबर, १६७५ ई को उन्हें दिल्ली की कोतवाली में पहुंचाकर बादशाह औरंगजेब को सूचित कर दिया गया, तद्नंतर उसका गुरु साहिब से आध्यात्मिक विवाद हुआ। हर बार मात खा जाने वाले औरंगजेब ने उनसे कहा "कि वे कुछ अजूबे दिखाकर यह सिद्ध करें कि वे सच्चे गुरु हैं, वरना इसलाम मजहब अपना लें।" गुरु साहिब ने उत्तर दिया कि "चमत्कार दिखाना वाहिगुरु के कामों में दखल देना होता है, जो कि एकदम नामुनासिब है। जहां तक मुसलमान बनने की बात है, उनका अपना मजहब भी उतना ही उम्दा है जितना कि इसलाम, इसलिए मजहब बदलना गैर-जरूरी है।"

ऐसा साहस भरा जवाब सुनकर औरंगजेब खिसिया गया और उसने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि गुरु साहिब को कठोरतम यातनाएं दी जाएं। गुरु साहिब को पांच दिन तक लोहे के पिंजरे में बंदी बनाकर उनके सामने बड़े डरावने दृश्य पेश किए गए, किंतु गुरु साहिब बिलकुल नहीं डगमगाए।

गुरु साहिब के साथियों को दी गई यातनाएं: सबसे पहले भाई मतीदास जी को मुसलमान बनने के लिए कहा गया, किंतु उनके दो टूक जवाब को सुनकर उन्हें लोहे के दो खंभों के बीच रस्सी से बांधकर उनका शरीर धड़ से कमर तक आरे से चिरवाकर उन्हें शहीद कर दिया गया। भाई दिआल दास जी ने धर्म-परिवर्तन की बात सुनकर औरंगजेब को खूब लानतें दीं, तो उन्हें लोहे की तारों में लपेट कर एक गठरी की तरह बनाकर खौलते तेल के कड़ाहे में डाल दिया गया। जब भाई सतीदास जी ने बादशाह के कर्मचारियों की निर्दयता के प्रति रोष जताया तो उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। वहां पर भाई जैता जी नामक एक रंगरेटा सिक्ख, जो दिल्ली का निवासी था, एक सफाई कर्मचारी का वेश बनाए खड़ा था। उसने हाथ में पकड़े हुए झाड़ू से तीनों शहीदों के बचे-खुचे शारीरिक अंगों को अपनी टोकरी में बटोर लिया और कुछ दूरी पर बहती हुई यमुना नदी में उड़ेल दिया।

गुरु साहिब की शहीदी : ये सभी भयानक कार्य पिंजरे में जकड़े गुरु साहिब के सामने किए गए। इसके बाद गुरु साहिब पर फिर मुसलमान बनने के लिए जोर डाला गया अथवा करामातें

दिखाकर अपने 'गुरु' होने की हकीकत बताने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा कि वे कल सुबह ग्यारह बजे अपने 'चमत्कार' दिखाएंगे।

लोगों से इसका अर्थ पूछकर औरंगजेब अत्यधिक चिढ़ गया। अंतरज्ञान से गुरु साहिब को अपना अंतिम समय दिखाई पड़ा। वे अगली सुबह बहुत जल्दी उठे। स्नान और ध्यान के पश्चात् उन्होंने जपु जी साहिब और सुखमनी साहिब का पाठ किया। उनके अंतरमन में अपने दादा श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी, गुरु-पद की जिम्मेदारी और संक्रांति-काल के समय अपने कर्त्तव्य के विचार कौंधते रहे। ग्यारह बजे के लगभग उन्हें दिल्ली के चांदनी चौंक में लाकर खड़ा कर दिया गया। वहां पर समाणा का फांसी देने वाला सैयद जलाल-उद्दीन, कुछ मुगल अधिकारी और फौज की एक टुकड़ी खड़ी थी। वहां पर उपस्थित काजी ने उन्हें अजूबे दिखाने के लिए कहा। गुरु साहिब ने सिर हिलाकर अपनी असहमति प्रकट कर दी। तब काजी के कहने पर जल्लाद ने अपनी तलवार उठाई और गुरु साहिब का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसी स्थल पर आज 'गुरुद्वारा सीसगंज साहिब" श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आत्म-बलिदान के रूप में सुशोभित है।

गुरु साहिब के शहीदी-स्थल के सामने वाली गली में रंघरेटा सिक्ख निवास करते थे। सरकारी नौकरों की भीड़ छट जाने के बाद भाई जैता जी ने खून से लथपथ गुरु साहिब का शीश अपने हाथ में उठा लिया। भाई नानू और भाई ऊदा नामक दो सिक्ख उसके अंगरक्षक बन गए। पांच दिन में ३२० किलोमीटर की दूरी तय करके वे १६ नवंबर, १६७५ ई को कीरतपुर साहिब पहुंचे। श्री (गुरु) गोबिंद सिंघ जी ने कीरतपुर साहिब पहुंचकर उनकी हिम्मत की दाद दी और तीनों को गले लगाकर कहा "रंघरेटे गुरू के बेटे।" १७ नवंबर, सन् १६७५ को पावन शीश का दाह संस्कार किया गया। उनका स्मृति-स्थल अनंदपुर साहिब में "गुरुद्वारा सीसगंज साहिब" के रूप में विद्यमान है। गुरु साहिब के प्रति औरंगजेब की क्रूरता पर पंजाब के हिंदुओं, सिक्खों और सूफी मुसलमानों के हृदय को गहरी चोट पहुंची।

संदर्भ सूची :

१. Syed Muhammad Latif, History of the Panjab, page 259.

२. (क) भाई संतोख सिंघ, सूरज प्रकाश, रास ११, अंसू २ तथा ५१

(ख) ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश, पृष्ठ ११०

३. Meaning the Guru is here I have found him--Dr. H. R. Gupta, History of Sikhs, Chapter 10, page 190-191.

४. M. Maculiff, Vol. IV, page 335.

पाठकों से अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें। -संपादक।

"सिक्ख इतिहास" कृत प्रिं तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-वृत्त

*-बीबी रजवंत कौर**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म १ अप्रैल, १६२१ ई को श्री अमृतसर में 'गुरु के महल' में हुआ। आप जी के पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब थे और आपके माता बीबी नानकी जी थे। आप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सबसे छोटे सपुत्र थे। आपकी पढ़ाई-लिखाई श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की निगरानी में ही हुई। आपको धर्म-ग्रंथों के साथ-साथ शस्त्रों को चलाने की सिखलाई भी दी गई। आप सुंदर, बलवान, शूरवीर, विद्वान, शस्त्रधारी, धर्म और राजनीति के अच्छे ज्ञाता बन गए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ करतारपुर की जंग में आप जी ने बहादुरों की तरह तलवार के जौहर दिखाए और अपने आप को तलवार के धनी साबित किया, इसलिए आप जी का नाम पिता-गुरु जी ने 'तेग बहादर' रख दिया।

आप जी के पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जब परलोक गमन कर गए तो आप माता नानकी जी और पत्नी माता गुजरी जी के साथ अपनी ननिहाल गांव बकाला चले गए और वहां एकांत में बैठकर भक्ति करने लग गए। आपका अभी 'गुरु' बनने का समय नहीं आया था। आने वाले समय में जो मुश्किलें आने वाली थीं, उन मुश्किलों में से निकलने के लिए आप तैयारी कर रहे थे। जब सिक्खों के आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ज्योति-जोत समाए तो उन्होंने गुरगद्दी आगे देने के बारे में कहा कि "बाबा बकाले।" उनके कहने का भाव था कि सिक्खों के होने वाले अगले 'गुरु' 'बकाला' गांव में रह रहे हैं और रिश्तेदारी में उनके 'बाबा' लगते हैं। उनके कई लालची रिश्तेदार इन शब्दों का लाभ उठाते हुए बकाला में इकट्ठे हो गए और अपनी-अपनी गद्दी लगाकर बैठ गए। धीरमल आने वाली संगत को अपने जाल में फंसा लेता और कहता कि हम ही 'गुरु' हैं। उनसे जबरदस्ती लाई गई भेंटा वसूल लेते। एक वर्ष तक असली 'गुरु' के बारे में कोई पता नहीं चला। १६६५ की वैसाखी पर संगत अपने नए गुरु साहिब को मिलने के लिए बकाला में भारी संख्या में पहुंची। संगत में भाई मक्खण शाह, जो एक व्यापारी था और गुजरात के काठियावाड़ इलाके का मसंद भी था, वो इलाके की संगत से गुरु-घर की दसवंध की रकम भी अपने साथ लेकर आया था। उसने असली 'गुरु' (श्री गुरु तेग बहादर साहिब) को पहचान लिया और सारी संगत ने उनके असली 'गुरु' होने का ऐलान कर दिया।

गुरगद्दी संभालते समय गुरु जी की आयु लगभग ४४ साल की थी। जब गुरु जी ने गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभाली तो धीरमल को इस बात का बहुत बुरा लगा। गुरु जी की सफलता से उसको बहुत दुख हुआ। उसने अपने कुछ आदमी गुरु जी को नुकसान पहुंचाने के लिए भेजे। धीरमल के आदमियों ने गुरु जी पर गोली चलाई और उनका सारा सामान भी लूट लिया। गुरु जी को थोड़ी चोट भी लग गई। इस बात का पता जब भाई मक्खन शाह को चला तो उसने अपने कुछ आदमी साथ लिए और धीरमल के घर पर हमला कर दिया। जो सामान वो गुरु जी का लूट कर ले गया था

**452, Block-B, Sandhu Avenue, Chheharta, Sri Amritsar-143005, Mob. : 81466-50449*

वो भाई मक्खण शाह वापिस ले आया। जिन लोगों ने गुरु जी पर हमला किया था उनको भी लाकर गुरु जी के आगे पेश कर दिया। गुरु जी बिलकुल शांत थे। उनको जरा भी गुस्सा नहीं आया। उन्होंने धीरमल के आदमियों को माफ कर दिया और सिक्खों को कहा कि इनको छोड़ दिया जाए। जो धीरमल का सामान लेकर आए हैं वो भी वापिस कर दिया जाए। सिक्ख धीरमल का सारा सामान वापिस कर आए, लेकिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़, जो श्री गुरु अरजन देव जी ने तैयार करवाई थी, वो वापिस नहीं की। सिक्खों का यह विचार था कि यह **'बीड़'** गुरु जी ने तैयार करवाई है और यह गुरु-घर में ही रहनी चाहिए। यह किसी की निजी मलकियत नहीं है। जब यह बात श्री गुरु तेग बहादर साहिब को पता चली कि सिक्खों ने सामान तो वापिस कर दिया है लेकिन **'बीड़'** वापिस नहीं की तो उन्होंने यह **'बीड़'** ब्यास दरिया के शुष्क तट पर पहुंचा दी और धीरमल को संदेश भेज दिया कि आकर **'बीड़'** ले जाए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की **'बीड़'** धीरमल ले गया, जो आज तक धीरमल के परिवार के पास है।

गुरु जी को संगत ने तो असली **'गुरु'** मान लिया लेकिन जो पुजारी वर्ग के लोग थे वे इन्हें **'गुरु'** मानने के लिए तैयार नहीं थे। जब गुरु जी श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने गए तो वहां के पुजारियों ने श्री हरिमंदर साहिब के दरवाजे बंद कर दिए। उनको डर था कि ये हमसे हिसाब-किताब लेंगे, इसलिए उन्होंने डर के मारे गुरु जी को अंदर नहीं आने दिया। इसके बाद जब गुरु जी कीरतपुर साहिब गए तो वहां भी धीरमल के लोगों ने उनका विरोध किया। इन लोगों से दूर रहने के लिए आपने कहलूर के राजा से ५०० रुपये में एक जमीन का टुकड़ा खरीदा और वहां इमारत की नींव रखी तथा उसका नाम **'अनंदपुर'** रखा गया। वहां भी आपको चैन से नहीं रहने दिया गया। आप वहां से सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए निकल गए। आप मालवा और बांगर के इलाके में गए। वहां आप ने पानी की किल्लत को दूर करने के लिए बहुत-से सरोवर और कुएं खुदवाये। गर्मी से दुखी लोगों को पानी मिलने से बहुत राहत महसूस हुई।

इसके बाद गुरु जी पूर्व दिशा में प्रचार करने के लिए निकल पड़े। आप आगरा, इलाहाबाद, बनारस, सासाराम, गया और पटना में गए। इस यात्रा के दौरान आप कर्म-नाश नदी पर भी गए। इस नदी के बारे में लोगों का भ्रम था कि इसमें नहाने से अच्छे कर्म नष्ट हो जाते हैं। गुरु जी ने खुद इस नदी में स्नान किया और लोगों का यह भ्रम दूर किया कि इंसान के अच्छे कर्म कभी भी खत्म नहीं होते। आपने अपने परिवार को पटना में छोड़ा और प्रचार के लिए ढाका चले गए। पश्चिम में राजमहल से लेकर पूर्व में सिलहट तक और उत्तर में धूबड़ी से लेकर दक्षिण में बंसखाली तथा फतह कचिहरी तक गुरु जी हर जगह गए और हर जगह गुरुद्वारा, लंगर तथा रहने का प्रबंध देख कर खुश हुए। इधर नत्था और अलमसत ने **'संगत'** कायम करके सिक्खी का प्रचार बड़े अच्छे ढंग से किया हुआ था। आप जब ढाका में थे तो आपके घर २६ दिसंबर, १६६६ ई को पुत्र ने पटना साहिब (बिहार) में जन्म लिया। आप ने यह खुशखबरी सुन कर पटने की संगत के नाम एक हुकमनामा भेजा जिसमें पटने की संगत का धन्यवाद किया, क्योंकि गुरु जी की गैरहाजरी में संगत ने गुरु जी के परिवार की अच्छी देखभाल की थी। ढाका से गुरु जी सोनदीप, लशकर, सिलहट, चटगांओ क्षेत्र में गए और लगभग दो साल प्रचार करते रहे। वहां से आप आसाम में चले गए और वहां प्रचार किया। वहां के लोगों

में जादू-टोने की चर्चित शक्ति के बारे में अपने प्रचार से लोगों को जागृत किया।

आसाम में काफी देर प्रचार करने के बाद आप पंजाब को लौट आए। वहां से जल्दी लौटने का कारण यही हो सकता है कि पंजाब में हिंदू लोग औरंगजेब की गलत नीतियों के कारण कष्टों में से गुजर रहे थे। इस कष्ट के समय आप अपने लोगों से दूर नहीं रहना चाहते थे, इसलिए आप अपने सपुत्र और परिवार को पटना में ही छोड़कर वापिस आ गए। वापिस आकर आपने देखा कि औरंगजेब ने यह हुक्म जारी किया हुआ था कि हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया जाए, उनके विद्यालय और मंदिर गिरा दिए जाएं। सिक्खों के धर्म-स्थानों को भी गिराया जा रहा था। गुरु जी लोगों का डर दूर करने के लिए प्रचार-दौरे पर निकल पड़े और लोगों में यह विश्वास भरने लगे के वे सरकार का डर मन से निकाल दें और उनके मुकाबले के लिए अपने आप को मजबूत बना कर उनसे लोहा लेने के लिए तैयारी करें। आपका यह प्रचार-दौरा लगभग दो साल तक रहा। आप जहां भी जाते लोग आपकी बातों को ध्यान से सुनते और आपके आदर के साथ प्रेम भेंट करते। सरकार को खबर देने वाले लोगों ने इस बात को गलत तरीके से बयान किया और कहा कि गुरु जी लोगों से कर वसूल कर रहे हैं और अपनी ताकत बढ़ा रहे हैं। इस ताकत से राजा को खतरा हो सकता है।

इफ्तखार खां कशमीर का गवर्नर था और वो कशमीर के हिंदुओं पर बहुत जुल्म कर रहा था तथा जबरदस्ती उनका धर्म बदलवा रहा था। उससे तंग आकर कशमीर के १६ पंडितों का एक वफ्द मटन निवासी किरपा राम दत्त की अगुवाई में २५ मई, १६७५ को अनंदपुर साहिब पहुंचा और श्री गुरु तेग बहादर साहिब से मुलाकात की। गुरु जी ने कशमीर के पंडितों की फरियाद सुनी और उनसे हमदर्दी प्रकट की। गुरु जी ने उनको कहा कि इन सब मुसीबतों का साहस से मुकाबला किया जाए। इस मुलाकात के बारे में खबर को खबर-रसां ने औरंगजेब के पास पहुंचा दिया। बादशाह धर्म के मामले में बहुत कट्टर था। वो इस मुलाकात को कैसे सहन कर सकता था? गुरु जी की इस मुलाकात को उसने अपनी धार्मिक नीति की पूर्ति में रुकावट समझा और गुरु जी को गिरफ्तार करने का हुक्म जारी किया। सरहिंद के फौजदार दिलावर खां ने रोपड़ के कोतवाल मिर्जा नूर मोहम्मद को कहा कि गुरु जी को पकड़ लिया जाए। लोगों से यह जानकारी छुपा कर रखी गई ताकि सिक्खों की तरफ से कोई रुकावट न पड़े।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब अनंदपुर साहिब से बाहर जाने के लिए रोपड़ के पास गांव मलकपुर रंघड़ा में रात को ठहरे हुए थे। किसी ने यह खबर रोपड़ के कोतवाल को पहुंचा दी। गुरु जी की गिरफ्तारी के बारे में यह पुष्टि 'भट्ट वहीआं' से होती है। और भी कई स्रोतों से जानकारी मिलती है कि गुरु जी को रोपड़ से गिरफ्तार करके सरहिंद में कैद कर रखा गया तथा कुछ दिनों के बाद दूसरा हुक्म आ गया कि गुरु जी को शहीद कर दिया जाए और उनके शरीर के टुकड़े करके शहर में लटका दिए जाएं। बादशाह के हुक्म पर कार्यवाही की गई और नवंबर १६७५ ई को सरहिंद से दिल्ली ले जाया गया। दिल्ली पहुंचने के पांच दिन बाद आप जी की शहीदी की घटना घटित हुई। दिल्ली के सूबेदार और शाही काजी ने गुरु जी को मुसलमान बनने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया लेकिन गुरु जी अपनी बात पर पक्के रहे और अपने फैसले को नहीं बदला। आपके साथी सिक्खों को आपकी आंखों के सामने शहीद किया गया। भाई मतीदास जी को आरे से चीर

कर दोफाड़ किया गया। भाई दिआला जी को देग में खौलते हुए पानी में बैठाया गया और भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर आग लगा दी गई। इन सिक्खों ने यातनाओं की परवाह नहीं की और वाहिगुरु का नाम जपते-जपते शहीदी प्राप्त की।

सिक्खों की शहीदी के बाद गुरु जी को करामात दिखाने के लिए कहा गया, लेकिन गुरु जी ने अपने धर्म को बचाते हुए जब्र के आगे अपना शीश नहीं झुकाया तथा अपनी शहीदी दे दी :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥
(बचित्र नाटक)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के इस महान साके के पीछे कोई राजनैतिक कारण नहीं था, यह बादशाह औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता थी, जिससे वो "दाराउल-हरब" (काफिरों की धरती) को "दाराउल-इसलाम" (मोमिनों की धरती) में बदलने के सपने ले रहा था। वो अपने अंधे जोश में मंदिरों और गुरुद्वारों को मस्जिदों में बदल रहा था। गुरु जी केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि हर किसी की धार्मिक स्वतंत्रता के इच्छुक थे। गुरु जी जनेऊ नहीं पहनते थे, लेकिन किसी का जनेऊ उतारने के भी खिलाफ थे। वो कशमीरियों और पंजाबियों को मुगलों के राज्य पर कब्जा कर लेने के लिए नहीं प्रेरित कर रहे थे बल्कि अपने धर्म में पक्के रहने के लिए, मुसीबतों का सामना करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। आप हमेशा इंसाफ, सच्चाई, दलेरी के साथ जीवन जीने के लिए लोगों को उत्साहित करते थे। आप डरने वाले को 'कायर' और डराने वालों को 'जाबर' समझते थे। बादशाह, उसकी सरकार और झूठे ख़बर-नवीस, ख़बर-रसां हर मामले को राजनैतिक रंगत देने की कोशिश करते थे ताकि दी जाने वाली सजा को आम लोगों की नज़र में उचित ठहराया जा सके।

औरंगजेब सिक्ख कौम को आगे बढ़ने से रोकना चाहता था। ऐसी नीति उसके दादा जहांगीर ने ही शुरू कर दी थी। औरंगजेब ने सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब को अपने पास दिल्ली पहुंचने का हुक्म किया था, आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को भी दिल्ली बुलाया गया तथा नौंवे पातशाह को भी दिल्ली बुलाया गया था।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तिलक-जनेऊ की रक्षा के लिए एक महान और आलौकिक साका (घटना) कर दिखाया तथा हम सबको धर्म की खातिर अपनी जान कुर्बान करने की जाच सिखाई। उन्होंने शीश दिया पर अपने उसूल नहीं त्यागे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी लिखते हैं:

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥ . . .
धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥ (बचित्र नाटक)

इस तरह आकाश से टूटते तारे की तरह श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपना बलिदान देकर गुमनाम राहों के पथिकों की राह को रोशन कर गए। ऐसी शहीदी के रूबरू खड़े होकर ही कौमें अपनी किसमत पलटाने के फैसले करा करती हैं।

जहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब शहीद हुए वहां आजकल 'गुरुद्वारा सीसगंज साहिब' बना हुआ है और हज़ारों की गिनती में संगत रोज़ाना इस पावन शहीदी-स्थान पर सुशोभित श्री गुरु ग्रंथ साहिब को शीश झुकाकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब को श्रद्धा-सुमन अर्पित करती है।

हिंद की चादर--श्री गुरु तेग बहादर

-श्री सुरजीत दुखी*

कुर्बानी की मूरत, त्याग का दरिया।
मुहब्बत का जखीरा, सब्र की इंतहा।
'तिआगमल' से 'तेग बहादर' बन जाना।
कशमीरी पंडितों के लिए मुगलों से टकराना।
धर्म को बचाना, मुल्क के काम आना।
'हिंद की चादर' का खिताब पाना।
अमृतसर के 'गुरु के महल' में जन्म पाना।
'तिआगमल' नाम था बचपन का तराना।
बड़े भाई की शादी में सुंदर कपड़े जो पहने,
उतार उन्हें किसी वस्त्रहीन को सजाना।
करतारपुर के युद्ध में तेग का जौहर दिखाकर,
पिता से 'तेग बहादर' का खिताब पाना।
सिमरन के अभ्यास में दत्तचित्त होकर,
अलेप होकर परमात्मा से लगन लगाना।
डूबते जहाज को देख, भाई मक्खण शाह का घबराना।
गुरु नानक की गद्‌दी को, ५०० मुहरें चढ़ाने का संकल्प दोहराना।
बच गया जहाज, मंनत पूरी करने के लिए बाबा बकाला आना।
ढोंगी गुरुओं को पांच-पांच मुहरें चढ़ाना।
पूछा जो लोगों से, कोई और गुरु है यहां?
तो एकांत में बैठे तेग बहादर जी का पता पाना।
पहले की तरह पांच मुहरों को रखा जो,
गुरु जी का तब बाकी अमानत याद दिलाना।
तृप्त हुआ मक्खण शाह गुरु-दर्शन पा कर,
बाकी मुहरों का भी ढेर लगाया।
छत पर चढ़ ऊंची आवाज में पुकारकर,
'गुरू लाधो रे! गुरू लाधो रे!' सबको बताया।
षड़यंत्र रच धीरमल ने किया कुकृत्य,
साथियों को ले साथ कर दी चढ़ाई।
गुरु जी को गोली से जख्मी कर डाला,
भाई मक्खण शाह ने उससे माफी मंगवाई।
सतलुज के किनारे अनंदपुर नगर बसाया।
पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों को लगाया।
गुरमति के प्रचारार्थ ढाका में पहुंचकर,
घर में सपुत्र के जन्म का समाचार पाया।
इफ्तखार खां ने जब कशमीरी पंडितों पे,
धर्म-परिवर्तन करने को जुल्म ढाया।
शिष्ट-मंडल उनका अनंदपुर साहिब आया,
किरपा राम ने रक्षार्थ गुहार को लगाया।
धर्म-रक्षा के लिए कुर्बानी का संकल्प आया,
नौ वर्ष के बाल गोबिंद राय ने पिता को प्रेरणाया।
धर्म की रक्षा के लिए, 'गर पड़े जान गंवानी,
आपसे बड़ा कौन होगा बलिदानी?
गिरफ्तार कर कहा उनको, करामात दिखाओ,
या फिर धर्म बदल मुसलमां बन जाओ!
गुरु साहिब ने शर्त एक न मानी,
तीन सिदकी सिक्खों ने भी दी कुर्बानी।
दिल्ली के चांदनी चौंक लाया गया,
सिर कलम कर शहीद करवाया गया।
नौंवे गुरु की शहादत की याद में,
सीसगंज गुरुद्वारा बनवाया गया।
शहादत का जाम पी, शहीदों की श्रेणी में नाम लिखवाया।
मानवता की धार्मिक आजादी को, लोकतंत्र की नींव बनाया।
शहीदों के सिरताज, गुरु अरजन देव जी के बाद,
दूसरे 'शहीद गुरु' का मान पाया।
'दुखी' ने भी अपनी कलम घुमा, अफसाना लिख अपना नमन दोहराया।

*३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर। मो: ९९१४५३१२२१

तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन

*-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ**

नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब का स्मरण चित्त को शांति प्रदान करने वाला, आत्मिक सुखों का अपार भंडार और समस्त विकारों से निर्भय करने वाला है। उनके स्मरण-मात्र से सभी श्रेष्ठ इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है और सारे भटकाव समाप्त हो जाते हैं। वे शब्द अभी खोजे ही नहीं जा सके जो उनकी महानता का वर्णन कर सकें और मानवता पर किये गये उनके उपकारों का सर्वांगीण चित्र प्रस्तुत कर सकें। उनके महान व्यक्तित्व का कोई भी एक सूत्र इतना विशद और विस्मित कर देने वाला है कि उसे देखने में ही कई जीवन गुजर जाते हैं। उनका पूरा जीवन विषम परिस्थितियों से होकर गुजरा, किंतु जिस धैर्य और सहजता से गुरु साहिब सारी परिस्थितियों से निकले वो भी अपने आप में विस्मादी वृत्तांत है। उन्होंने सतिगुरु की महिमा और गुरु नानक साहिब की ज्योति होने का सच्चा प्रमाण सामने रखा:

गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥
(पन्ना ३९७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने जीवन-काल में पग-पग पर अपने विवेक को सिद्ध किया और प्रत्येक निर्णय सहज-संतोष बुद्धि से लिया, मानो वे सत् विचार के सरोवर हों। वे जीवन भर कभी भी विचलित नहीं हुए, कभी भी आवेगों का शिकार नहीं हुए और सदैव संशयों से मुक्त रहे, जो कि परमेश्वर का गुण है। उनके सारे गुण उन्हें युग पुरुष सिद्ध करने के लिये पर्याप्त थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पुत्र के रूप में श्री अमृतसर से आरंभ हुई उनकी सांसारिक यात्रा के दिल्ली के सीसगंज में सम्पूर्ण होने के मध्य कितने ही भिन्न-भिन्न पड़ाव थे जो एक बड़ी परीक्षा की तरह थे। वे सतिगुरु थे, परमात्मा का प्रत्यक्ष रूप थे और ये सारे पड़ाव वे निश्चय ही सहजता से पार कर सके, किंतु सामान्य बुद्धि वाले मानव समाज के लिये वे एक बड़ी सीख साबित हुए। धर्म की राह पर चलते हुए अनेकानेक विघ्न-बाधाओं, संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यदि परमात्मा पर विश्वास बना रहता है और मनुष्य सत्य से विचलित नहीं होता है तो सारे संकटों से पार पाने में परमात्मा स्वयं सहायक बन कर आता है। परमात्मा अपार है और उसका आसरा अपार फल देने वाला है :

साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥
दुखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥
हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥
होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥
(पन्ना ३९७)

अपार परमात्मा यदि रंचक-मात्र भी मन में बस जाता है तो सारे दुखों-रोगों का नाश हो जाता है। पूर्ण समर्पण के साथ उसकी आराधना करने से महान आनंद की प्राप्ति होती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तो पूरे

*ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

का पूरा परमात्मा को पा लिया था, इसलिये वे सदैव आनंद से परिपूर्ण थे। यह आनंद तब भी बना रहा जब बाइस वर्षों का लंबा समय उन्हें लगभग अज्ञातवास में बकाला में परमात्मा की बंदगी करते व्यतीत करना पड़ा। उस समय भी वे आनंदित रहे जब गुरगद्दी पर आसीन होने के बाद उन्हें विरोध झेलने पड़े। वह तो आनंद की पराकाष्ठा थी जब चांदनी चौंक में शहादत देने से पूर्व उन्होंने प्रातः स्नान करके पूर्ण एकाग्रता और शांति से जपु जी साहिब का पाठ किया तथा अगले ही पल जल्लाद के क्रूर प्रहार ने गुरु साहिब के रक्त से मानव-सभ्यता के इतिहास का एक ऐसा अध्याय लिख दिया जिसने परमात्मा से जुड़े हर व्यक्ति का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया। जीवन की यह समरसता एक बहुत बड़ी पूंजी है और इसे प्राप्त करके ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरगद्दी के हकदार बने थे। वे परमात्मा से एकाकार हो गये थे इसी लिये आनंदमयी हो गये :

सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥
ता महि वसहि भगत पिआरे ॥१॥
सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥
विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥१॥रहाउ॥
तह गीत नाद अखारे संगा ॥
ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥२॥
तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥
साच नाम की अंम्रित वरखा ॥
गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥
नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥४॥ (पन्ना ७३९)

परमात्मा से एकाकार हो जाने पर कैसी अवस्था बनती है, कैसे जीवन में रस आ जाता है और जीवन-मृत्यु, हर्ष-विषाद से मनुष्य कैसे ऊपर उठ जाता है तथा कैसे परमात्मा की अमृतमयी कृपा की वर्षा होने लगती है, यह बात सतिगुरु ही बता सकते हैं। यह बात गुरु साहिब ने बतायी ही नहीं बल्कि अपने जीवन में करके भी दिखायी ताकि कोई संशय न रहे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने जीवन की प्रत्येक स्थिति को परमात्मा की आज्ञा की तरह स्वीकार किया और उस आज्ञा में प्रसन्नता से रहे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच साहिबजादों में से श्री गुरु तेग बहादर साहिब सबसे छोटे और प्रतिभावान थे। वे गंभीर, विचारवान, संत-स्वरूप और निडर व दृढ़ स्वभाव के थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब स्वयं रुचि लेते थे। करतारपुर के युद्ध में अपने पिता के साथ मिलकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बड़े शौर्य-पराक्रम का प्रदर्शन किया जिससे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बहुत प्रभावित हुए थे। जब गुरगद्दी के लिये चयन का समय आया तो उस समय तक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के तीन पुत्र--बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अटल राय जी और बाबा अणी राय जी शरीर त्याग चुके थे; चौथे पुत्र सूरजमल जी का आध्यात्मिक रुझान अधिक नहीं था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरगद्दी के पूर्णयः योग्य थे किंतु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरगद्दी बाबा गुरदित्ता जी के पुत्र और अपने पौत्र श्री गुरु हरिराय साहिब को सौंपी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने इसे पूर्ण सहजता से लिया और अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्योति-जोत समाने के पश्चात अपनी माता जी व अपनी धर्म-पत्नी के साथ बकाला चले आये जो उनका ननिहाल भी था। उनका यह सहज निर्णय उस परिदृश्य में लिया गया निर्णय था जब गुरगद्दी को लेकर अनेक प्रकार के विवाद-विरोध सामने आ रहे थे। ये विवाद ऐसे लोग कर रहे थे जो गुरगद्दी

के किसी भी तरह योग्य नहीं थे और मात्र पारिवारिक स्थितियों के कारण गुरगद्दी का हकदार बनना चाहते थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने ऐसा कोई सवाल मन में नहीं आने दिया। वे परमात्मा के प्रेम का रस चख चुके थे वे न तो गुरु-घर के विरुद्ध हुए, न ही उन्होंने आध्यात्म के मार्ग का त्याग किया। उन्हें तो सच को प्राप्त करना था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के लिये तो सच-परमात्मा के नाम के बिना संसार का सब कुछ मिथ्या था:

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥रहाउ॥
जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥
पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥
नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥ (पन्ना ७०३)

जिस परमात्मा को पाने के लिये बड़े-बड़े योगी-सन्यासी, तपस्वी वन में पहाड़ों की चोटियों और कंदराओं में भटक रहे थे उस परमात्मा को श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने श्री अमृतसर के छोटे-से गांव बकाला के एक अज्ञात-से घर में पा लिया था और उसके निराले स्वरूप के दर्शन करने के बाद और कोई इच्छा ही नहीं बची थी उनके मन में। उन्हें सबसे पावन परमात्मा का नाम मिल गया था, जो सदा सहायक था। परमात्मा ने कृपा करके उनकी सारी तृष्णाएं शांत कर दी थीं :

संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥
इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥
सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥
भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥
नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥ (पन्ना ५४३)

जिस अवस्था का वर्णन उपरोक्त गुरु-वचन में किया गया है ठीक उसी अवस्था को श्री गुरु तेग बहादर साहिब गांव बकाला में रहते प्राप्त हो गये थे। उनके दिन और रात सुहाने होकर परमात्मा के प्रेम-रस के आनंद को गहरे से गहरा करते जा रहे थे। परमात्मा के परम आनंद में उनकी आत्मा का उन्नयन होता गया और वे परमात्मा का प्रकट स्वरूप बन गये। बकाला में एक छोटे-से घर में सिमट करके वे स्वयं को गुरगद्दी के योग्य सिद्ध कर रहे थे कि उनके आत्मिक प्रकाश की किरणें श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब तक पहुंचीं और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उन्हें अपने बाद गुरगद्दी पर आसीन किया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने संकेत-मात्र में उनका नाम लिया था जिससे बकाला के अनेक लोग गुरगद्दी के दावेदार बन बैठे। साल भर तक भ्रम की स्थिति बनी रही, किंतु श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कभी कोई दावा पेश नहीं किया। जब असमंजस बढ़ गया और सिक्ख संगत के दिशाहीन होने का संकट आसन्न होने लगा तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने उचित समय पर भाई मक्खण शाह के माध्यम से स्वयं को प्रकट करते हुए संदेश दिया कि परमात्मा का प्रेम-रस ही उनके लिये सब कुछ है। उन्हें अपनी आने वाली जिम्मेदारियों का भी अहसास है और वे इससे पीछे हटने वाले नहीं हैं। उन्होंने भाई मक्खण शाह से

बाकी की अशर्फियां मांग कर बड़े ही निराले ढंग से स्वयं को प्रकट किया था। ठीक उसी तरह जैसे पौ फटते ही अचानक सूर्य की पहली किरणों से आसमान लाल हो जाता है या तपती हुई धूप को ढांप कर अचानक कहीं से आकर बादलों की फुहार पृथ्वी को भिगो जाती है:

हरि का ग्रिह हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥
हरि आपनी क्रिपा करी आपि ग्रिहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥
हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥
जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥२॥ (पन्ना ९७७)

सिक्ख संगत के सारे भ्रम श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन करके दूर हो गये और गुरु-दरबार फिर सजने लगा। यह बात गुरु-घर के विरोधियों को शूल की तरह चुभने लगी। धीरमल के उकसाने पर शींहे नामक मसंद ने अपने कुछ व्यक्तियों के साथ मिलकर गुरु साहिब पर हमला कर दिया और बंदूक चला कर उन्हें घायल कर दिया। इसके बाद वे लोग गुरु साहिब का सारा माल-असबाब लूट कर ले गये, किंतु गुरु साहिब ने कोई प्रतिरोध नहीं किया और वे शांतचित्त बैठे रहे। बाद में जब सिक्खों ने शींहे मसंद को पकड़ लिया और गुरु साहिब के सामान के साथ ही धीरमल का सामान भी उठा लाये तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने जहां शींहे को माफ कर दिया और सद्मार्ग पर चलने का उपदेश दिया वहीं सिक्खों द्वारा उठाकर लाया गया धीरमल का सामान भी वापिस करवा दिया। प्रतिरोध न करना और दूसरे का उठाकर लाया गया सामान वापिस करना उनकी किसी दुर्बलता का द्योतक नहीं था। वे हर तरह से सक्षम, सशक्त और रण-क्षेत्र के योद्धा थे। शींहे को माफ करना उनकी कोई विवशता भी नहीं थी। शींहे मसंद के हमला करने से न तो उन्हें कोई अपमान महसूस हुआ और न ही उन्हें शींहे द्वारा माफी मांगने से कोई हर्ष हुआ। वे तो प्रभु से मिल चुके थे और प्रभु के नाम को ही सच मान चुके थे :

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥रहाउ॥
इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछु न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥
उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥ (पन्ना ११८६)

गुरु साहिब ने उपरोक्त वचन में कहा कि सांसारिक वस्तुओं पर गर्व करना मूर्खता है। जिन वस्तुओं पर मनुष्य गर्व कर रहा है उनमें से कुछ भी साथ नहीं जाने वाला और संसार सपने की तरह खत्म हो जाने वाला है। जो इस सच को जान लेता है वह मान-प्रतिष्ठा, स्तुति-निंदा आदि से ऊपर उठ जाता है और बस, परमात्मा में ही अपने मन को टिकाता है। शींहे मसंद के हमले का कोई प्रतिवाद न करके शांत रहकर बाद में उसे माफ करके गुरु साहिब ने अपनी बात को शब्दश: सत्य सिद्ध किया और सिक्ख संगत को भी इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। वे जानते थे कि इस मार्ग पर चलना आसान नहीं है और हर सांसारिक व्यक्ति को माया ने अपने फंदे में बांध रखा है, इसी लिये उन्होंने लोगों को झिंझोड़ा भी :

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥
कहु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥रहाउ॥
सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥
बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥
संगि तेरै हरि बसत नीत ॥
निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥
बार अंत की होइ सहाइ ॥
कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥ (पन्ना ११८७)

उपरोक्त वचन में ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब के महान व्यक्तित्व की खासी झलक दिखायी देती है। पहली पंक्ति में वे बड़े ही बेलाग ढंग से बात करते हैं, जीवात्मा के सच को उजागर करते हैं कि वह कहां भ्रमित हो जीवन व्यर्थ गंवा रही है। दूसरी ही पंक्ति में उनका आशावादी स्वरूप दिखता है और वे एक पिता की भांति समझाते हुए सचेत होने को कहते हैं। बाद की दो पंक्तियों में वे एक मां की तरह समझाते हुए दिखते हैं कि संसार सपने की तरह है जो पल भर में टूट जाने वाला है, यह बात सच मान ले। इसके बाद की दो पंक्तियां एक मित्र की भांति कही गयी हैं, एक भरोसे के साथ कि परमात्मा तो पास में ही है, उसकी भक्ति कर लो। अंतिम पंक्तियों में गुरु साहिब एक परम आध्यात्मिक पुरुष की तरह अंततः परमात्मा के ही सहायक होने और उसकी महिमा को जानने का अंतिम व निर्णायक वाक्य कहते हैं। उपरोक्त वचन से हम एक आभास मात्र ग्रहण कर सकते हैं कि परमात्मा से वे कैसे एकाकार हो गये थे कि ऐसे वचन कह भी सके और उन्हें क्रियान्वित भी कर सके।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस अवस्था में पहुंच चुके थे जहां उन्हें परमात्मा और उनके द्वारा सौंपा गया कार्य ही नजर आ रहा था। वे धर्म प्रचार के लिये निकल पड़े। जगह-जगह लोगों को परमात्मा से जोड़ा। श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन के लिये गये तो मसंदों ने दरवाजे ही बंद कर लिये। गुरु साहिब ने प्रेम-भाव से बाहर ही माथा टेका और कुछ समय श्री अकाल तख्त साहिब के पास बैठ कर वापिस आ गये। उन्होंने विरोधियों से विवाद में न पड़ने हेतु बकाला, करतारपुर तथा कीरतपुर छोड़ा और नैना देवी की पहाड़ी पर भूमि खरीद कर नया नगर बसाया, जिसका नाम अपनी माता जी के नाम पर 'चक्क नानकी' रखा। कालांतर में इस नगर का नाम 'अनंदपुर' विख्यात हो गया। यह नाम ही इस बात का परिचायक है कि कितनी आनंदपूर्ण मनोस्थिति में गुरु साहिब ने इस नगर की नींव रखी होगी। उन्हें ज्ञात रहा होगा कि यह स्थान एक महत्वपूर्ण इतिहास का गवाह बनने वाला है जिससे धर्म-सत्ता का गौरव बढ़ने वाला है। वे तो ऐसे सतिगुरु थे जो सिक्खों के अंदर भी 'अनंदपुर' बसा रहे थे और बाहर भी।

वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा
हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥
मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा
गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥
हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा
मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥
हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा
नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥ (पन्ना १७३)

मनोरम नगर अनंदपुर साहिब मन के अंदर के आनंदपुर की ही प्रतिकृति थी, जहां परमेश्वर का वास होता है। यह नया नगर अनंदपुर साहिब शीघ्र ही आबाद हो गया और चहल-पहल से इसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलने लगी।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अनंदपुर साहिब में गुरु-शबद का आनंद रचना आरंभ

कर दिया। सिक्ख संगत के मन में आनंद और बाहर भी आनंद की निर्झर वर्षा होने लगी। आनंद के इस संदेश के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिये वे अपने परिवार और खास सिक्खों के साथ कुछ समय पश्चात अनंदपुर साहिब से निकले और बंगाल-आसाम तक गये। इस बीच श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म पटना साहिब में हुआ। संतोष से परिपूर्ण श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समक्ष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म एक बात थी किंतु धर्म प्रचार का उनका ध्येय सर्वोपरि था, इसलिये उन्होंने पुत्र-मोह में वापिस पटना साहिब लौटने के स्थान पर अपना दौरा जारी रखा और बंगाल से वे आसाम की ओर चले गये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को पता था कि परमात्मा ने उनका क्या कार्य नियत किया है :

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥रहाउ॥
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥
नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥ (पन्ना १३५२)

गुरु साहिब ने कहा कि जीवन का ध्येय तो परमात्मा का सिमरन करना ही है, शेष सारे सांसारिक प्रपंच व्यर्थ हैं और उन पर गर्व करने का कोई लाभ नहीं है। समय बीतता जा रहा है, तन क्षीण होता जा रहा है, इसलिये परमात्मा की शरण ही श्रेष्ठ है। कदाचित इसी लिये गुरु साहिब ने अपने नवजात साहिबजादे का मुख देखने को कोई व्यग्रता न दिखायी। वे दो वर्षों तक आसाम में रहे। पंजाब के बिगड़ते हालात और औरंगजेब के अत्याचारों के चलते उन्होंने तुरंत वापिस होने का निर्णय लिया। वापसी में वे पटना साहिब जाकर अपने साहिबजादे व परिवार से मिल सकते थे, किंतु वे गया होते हुए पंजाब लौट गये। गया में वे पटना साहिब के सिक्खों के नाम हुकमनामा लिख गये कि उनके परिवार का ध्यान रखा जाये और पुन: संदेश मिलने पर परिवार को पंजाब भेज दिया जाये। उन्हें लग रहा था कि वक्त कम है और एक नई भूमिका उनकी प्रतीक्षा कर रही है। दो वर्ष से अधिक का समय व्यतीत हो जाये और अपने नवजात शिशु का मुख भी न देखा हो, ऐसा संतोष उन बाईस वर्षों की साधना का प्रतिफल ही हो सकता है जो गुरु साहिब ने बकाला में की। पंजाब वापिस आकर कुछ समय रहने के बाद उन्होंने पटना साहिब से अपने परिवार को बुलवा लिया और श्री (गुरु) गोबिंद राय जी की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। उन्हें अपने सांसारिक-पारिवारिक उत्तरदायित्वों का भी पूरा भाव था किंतु वे कार्यों की प्राथमिकताएं भी जानते थे। परमात्मा ने उनके मन के सारे भटकाव मिटाकर उसे विश्राम की अवस्था में ला दिया था और उसमें निर्मल ज्ञान का प्रकाश हो गया था :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥रहाउ॥
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥
जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि

समाइआ ॥ (पन्ना ११८६)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपने बंगाल और आसाम प्रवास के दौरान ही औरंगजेब के अत्याचारों का हाल जान चुके थे। जब कशमीर के पंडितों का दल उनसे अपनी व्यथा बताने आया कि किस तरह उन्हें मुसलमान बनने के लिये विवश किया जा रहा है तो वे सोच में पड़ गये। वे समझ गये कि अब अपने आत्म-बल को प्रकट करने का समय आ गया है। यह आत्म-बल उनमें तब भी था जब वे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्योति-जोत समाने के बाद बकाला आ गये थे और तब भी जब वे बकाला में साल भर तक गुरगद्दी के मिथ्या दावेदारों का तमाशा देखते रहे। आत्म-बल था तब भी उनमें जब उन्होंने बकाला, करतारपुर, कीरतपुर में किसी भी विवाद में न पड़ने और अनंदपुर साहिब बसाने का निर्णय लिया। अनंदपुर साहिब में भी वे विवादों से विरक्त रहे। वे कुशल योद्धा के रूप में अपने पराक्रम का प्रदर्शन भी अपने पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सहयोग देते हुए युद्धों में कर चुके थे और शारीरिक तौर पर पुष्ट थे। उनका यह बल तो मानव-कल्याण के लिये संचित हो रहा था और उसी की भेंट चढ़ना था। उनका बल किसी को भयभीत करने के लिये नहीं था और किसी के भय में रहने से भी उन्हें इंकार था:

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ (पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि सच्चा ज्ञान यही है कि किसी को भी अपनी कुटिलता से दबाया न जाये और किसी की कुटिलता के आगे झुका भी न जाये। यह वचन एक तरह से खालसा पंथ की साजना का आधार-सूत्र था। खालसा पंथ की साजना भले ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने की किंतु उसका बीज श्री गुरु तेग बहादर साहिब ही बो गये थे और उस राह की ओर संकेत कर गये थे जिस राह पर आगे सिक्ख संगत को चलना था। गुरु साहिब ने कशमीरी पंडितों के साथ खड़े होने का निर्णय करके यह खुली घोषणा कर दी कि वे किसी का भी भय नहीं मानते, भले ही वह कितना ही बलशाली क्यों न हो। वे अन्याय को चुनौती देना जानते थे। अनंदपुर साहिब से जब वे निकले उस समय तक औरंगजेब उनकी गिरफ्तारी का आदेश दे चुका था। गुरु साहिब निर्भय होकर स्थान-स्थान सिक्खों को उपदेश देते हुए आगरा पहुंचे तो वहां से मुगल सेना ने उन्हें अपनी हिरासत में ले लिया और दिल्ली कैदखाने में डाल दिया। वहां गुरु साहिब को भ्रमित करने के प्रयास किये गये किंतु वे अडोल रहे चूंकि वे तो पहले ही कथन कर चुके थे :

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥ (पन्ना २२०)

गुरु साहिब के आत्मिक प्रताप से खीझा हुआ मुगल शासक उनका शीश लेने को आतुर था और श्री गुरु तेग बहादर जी शांत, स्थिर मन से शहादत की प्रतीक्षा कर रहे थे :

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥ (पन्ना २२०)

गुरु साहिब तो परमात्मा का स्वरूप थे और स्वतः मुक्त थे। वे तो संसार को पार उतारने आये थे और अपना शीश देकर पीड़ितों की मुक्ति का मार्ग खोलना चाहते थे। वे संदेश देना चाहते थे कि राज-सत्ता अथवा अन्य किसी

भी अन्यायी शक्ति के अत्याचारों से आक्रांत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ये सांसारिक शक्तियां न तो हित कर सकती हैं न ही अहित, यहां तक कि पारिवारिक सम्बंधों से भी अधिक सहायक परमात्मा पर विश्वास है :

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥
कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥रहाउ॥
धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥१॥
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥ (पन्ना १२३१)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में परमात्मा को बार-बार दयालु और दुख-सुख को दूर करने वाला तथा जगत को रात के सपने की तरह कहा है। यह अत्याचारी ताकतों को सिरे से नकार देने वाली और परमात्मा की सत्ता को एकमात्र व सर्वोच्च सिद्ध करने वाली बात थी जिसका तात्कालिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों से सीधा सम्बंध था, जो तत्कालीन शासकों को पसंद नहीं था। ऐसी शक्तियां, जो स्वयं को लोगों का भाग्य-विधाता मानती थीं, को उन्हें यह कैसे स्वीकार होता कि सारी सांसारिक शक्तियों को मिथ्या कह दिया जाये। इससे उन्हें अपना प्रभाव कम होता नज़र आता था। अन्यायी शक्तियां तो इस तरह व्यवहार कर रही थीं कि मानो उन्हें अमरत्व प्राप्त है जबकि गुरु साहिब उनके इस भ्रम को भी तोड़ रहे थे :

इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥
जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥ (पन्ना १२३१)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सामने उनके प्रिय सिक्खों को शहीद किया गया ताकि वे विचलित हो जायें, किंतु उन पर परमात्मा की दया बरस रही थी जिससे वे भय-मुक्त हो चुके थे। जब उनकी शहादत का समय आया उस समय भी वे अविचल रहे। उनके हृदय में तो सदा आनंद का निर्झर प्रवाहित था। उनका मन पंच तत्वों से रचित शरीर में नहीं परमात्मा के प्रेम में था। वे अपने को तन में नहीं मन में देख रहे थे। तन तो जाने वाला है, मन परमात्मा से न हटे :

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥
घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ (पन्ना १४२७)

गुरु साहिब जानते थे कि कलयुग में परमात्मा का नाम ही सहारा है :

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥
जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ (पन्ना १४२७)

उपरोक्त वचन में गुरु साहिब ने प्रेरणा दी कि मनुष्य वही कार्य करे जो परमात्मा के अनुकूल हो, उसी को भला माने जो परमात्मा के गुणों के अनुरूप हो और वही आज्ञा ग्रहण करे जो परमात्मा की सत्ता में आस्था को दृढ़ करने वाली हो। ऐसा करने से ही मन का भय दूर होता है, बुद्धि निर्मल होती है और परमात्मा की प्राप्ति होती है।

औरंगजेब के क्रूरतम अत्याचार भी श्री

गुरु तेग बहादर साहिब में रंचमात्र भी भय नहीं उत्पन्न कर सके। उन्होंने परमात्मा से अपने को जोड़ा और वहां जा मिले जहां से वे उपजे थे। पंच तत्वों से बने शरीर का उन्होंने जरा भी मोह नहीं किया चूंकि उन्होंने तो कथन किया हुआ था :

धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥
लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥
सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥
(पन्ना १८)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने परमात्मा के प्रेम में रमे रहकर अपना बलिदान दिया और सिद्ध कर दिया कि परमात्मा से जुड़कर, निर्भय हो गए को कोई भी सांसारिक शक्ति भयभीत नहीं कर सकती, लुभा नहीं सकती, भ्रमित नहीं कर सकती। अपनी शहादत के ढंग से उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि परमात्मा का रंग जब चढ़ता है तो इतना गहरा होता है कि किसी भी परिस्थिति में वह फीका नहीं पड़ता और बाकी सारे रंग उसके सामने फीके पड़ जाते हैं, परिस्थितियां हार जाती हैं।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की महानता को जानने के लिये पहले स्वयं परमात्मा के प्रेम के उस रंग में रंगना पड़ेगा जिसने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को अमर पद का अधिकारी बना दिया :

धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥
गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥८॥
पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥
रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥९॥
अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥
सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥१०॥
(पन्ना ७२५)

कविताएं

मां

जननी, मां, माता, ममता
पालन करती, पोषण करती
पढ़े, बढ़े, जीवन-पथ पर
निःस्वार्थ सदा उसकी सेवा
बच्चे पर रखती नेह-नज़र
शरारतें भी तब भली लगतीं
गोदी में ले खेला करती
निज चुंबन की वर्षा उस पर
किलकारियां कितनी प्यारी लगतीं!
जननी, मां, माता, ममता
जीवन के 'भूगोल' में मां
सर्वोच्च शिखर है सर्वोपरि
जीवन के इतिहास में मां ही
सबसे स्वर्णिम सुखद अध्याय
श्रद्धावनत हम हैं, हे मां, माता!
बच्चे सब मां का सुख पायें!

बेटियां

घर की शोभा और श्रृंगार हैं बेटियां!
जीवन की बगिया में, कलियां हैं बेटियां!
किलकारी की मधुर ध्वनि हैं बेटियां!
बजती जब पायल उनकी, संगीत हैं बेटियां!
सहज, भोलापन, सौम्य की, मूर्तियां हैं बेटियां!
उनके दम पे ही है गुलजार गुलजार की कलियां बेटियां!
मां की गुड़िया प्यारी, पिता की दुलारी हैं बेटियां!
'पी' के घर जातीं, सजीव करुणा हैं बेटियां!
घर परिवार की शोभा दुनिया का आधार हैं बेटियां!
खुशियों की शबनम, बरसाती प्यार हैं बेटियां!

-डॉ. दीनानाथ 'शरण', दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की वैराग्य-भावना

-डॉ निर्मल कौशिक*

सिक्ख धर्म की गुरु-परंपरा के नवमेश गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं। उनका बलिदान एवं उनका भक्तिपरक दृष्टिकोण ही उनका परिचय है। उन्होंने अन्य गुरु साहिबान के समान ही सिक्ख धर्म में अपने अनुभवों से नई उद्भावनाओं और सामाजिक अवधारणाओं को नई दिशा देकर जनता का मार्गदर्शन किया। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप दैवी प्रेरणा का परिणाम समझकर उन्होंने अपने आप का बलिदान देने में भी हिचकिचाहट नहीं की। उनके बलिदान से सिक्ख धर्म नवीन ढंग से अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ। वे सभी प्रकार से पूर्ण संत थे। उनके समक्ष आदि पांच गुरु साहिबान की बाणियां प्रस्तुत थीं। उन्होंने उन बाणियों का अध्ययन, चिंतन और मनन किया तथा उन्हें सरलतम् बाणी में जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। उनकी बाणी में संतों और सूफियों की जटिलता का प्रभाव नहीं है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सतत् भगवद्-चिंतन करके तपोबल को ग्रहण किया और उस आलौकिक सत्ता को स्वीकार करते हुये लौकिक शक्तियों के आगे झुकने से इंकार कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य सिक्ख गुरु साहिबान ने हरि-भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ साधना माना है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने हरि-भक्ति को "निर्भय पद" प्रदान करने वाली कहा है। उनका मत है कि भक्ति से ही सब संकटों का नाश होता है और परमात्मा के दर्शन होते हैं। उसके समान और कुछ नहीं है। हरि-भक्ति के बिना मनुष्य मन के फंदे में रहता है और उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है। भक्ति-विहीन व्यक्ति को श्वान के समान कहा है। अन्य सिक्ख गुरु साहिबान की भक्ति की भांति इनकी भक्ति भी विरक्ति की आंच में भली-भांति संशोधित है। इसी लिये अपनी समस्त बाणी में वैराग्य भावना का विशदता से निरूपण किया है।

सिक्ख मत में वैराग्य का महत्व आरंभ से ही मान्य रहा है। श्री गुरु नानक देव जी बचपन से ही विरक्त स्वभाव के थे और श्री गुरु तेग बहादर साहिब भी वैराग्य की साक्षात् मूरत थे। इसी कारण उन्होंने एक बार माता नानकी जी तथा अपनी धर्म-पत्नी माता गुजरी जी को संसार की नश्वरता का संदेश देने के लिये वैराग्य-भावना से भरे शब्द लिख भेजे थे:

--रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥
चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥
(पन्ना १४२९)

'बाबा बकाला' में लगभग २० वर्षों तक गुरु जी अनासक्त भाव से रहे और दृढ़ मन से साधना की। उन्होंने संसार की नश्वरता को और स्वप्नवत् मिथ्या मायाजाल को अच्छी प्रकार समझ लिया था, इसी लिये उन्होंने अपने नश्वर शरीर को तिनके के समान न्यौछावर कर दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी

*अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सरकारी बृजेंद्र कालेज, फरीदकोट-१५१२०३ (पंजाब)। फोन : ०१६३९२६३०१७

में उनकी वैराग्य-भावना यत्र-तत्र परिलक्षित होती है। संसार की अस्थिरता, शरीर की नश्वरता, ईश्वर-भक्ति की प्रेरणा और मन को सांत्वना देना उनकी बाणी के प्रमुख गुण हैं। इन्हीं के द्वारा उन्होंने भक्त, भक्ति और ईश्वर के लक्षणों का विवेचन भी किया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की आध्यात्मिक चिंतनधारा में ज्ञान मिश्रित भक्ति-योग की प्रधानता है। उनका भक्ति-योग विरति, विवेक और ज्ञान की सुदृढ़ नींव पर निर्मित है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने परंपरा पर आधारित वैराग्य को नहीं अपनाया है। उन्होंने वैराग्य का अर्थ पलायन नहीं लिया और न ही उनका अभिप्राय एषणाओं का परित्याग है। उन्होंने वैराग्य को निवृत्ति-मार्ग नहीं माना है। वास्तव में विरक्ति आसक्ति का विपरीतार्थक है और इसका अभिप्राय भोगवाद का विपरीतार्थक है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार वैराग्य में एषणाओं से निवृत्ति तो होती है लेकिन साथ ही प्रवृत्ति-मूलक भी है। वैराग्य का अर्थ है इच्छाओं की निवृत्ति और धर्माचरण में प्रवृत्ति। इसी सिद्धांत को लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में वैराग्य का निरूपण बड़ी तन्मयता से किया है। उन्होंने वैराग्य को कर्म-क्षेत्र से पलायन न मानते हुए लिखा है :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
(पन्ना ६८४)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के वैराग्य में ही मानव समाज का स्वर निहित है। आत्म-बलिदान और सेवा सिक्ख धर्म के दो आधारभूत तत्वों को गुरु जी ने अपने जीवन में पुष्प गंध के समान धारण किया और सत्पुरुष को पहचानने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जगत की रचना मिथ्या है। इस सत्य का साक्षात्कार करने वाला ही सच्चा ज्ञानी है। संसार के सब पदार्थ, सब सम्बंध, सब तृष्णायें, सब इच्छाएं नश्वर हैं। काम, क्रोध, अहं सब कुछ जल की बूंद की भांति महत्वहीन है। गुरु साहिब ने संसार की असारता का परिचय इस प्रकार दिया है :

जग रचना सब झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥
(पन्ना १४२९)

ऐसी उक्तियों द्वारा उन्होंने सृष्टि का रहस्य खोलकर सामने रख दिया। इसके लिये उन्होंने इस संसार से अनासक्त रहने और अविनाशी तत्व की खोज करने पर बल दिया है और अत्यंत सरलतम मार्ग सुझाया है। केवल अपना आप पहचानने से ही अविनाशी और चिरंतन सत्य रूपी ईश्वर को *'पानी संगि पानी'* के समान प्राप्त किया जा सकता है। इस नश्वर संसार में एक शाश्वत वस्त्र है जो व्यक्ति इस स्थिति को पा लेता है वह 'ब्रह्मज्ञानी' हो जाता है। इसे ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने 'निर्भय पद' कहा है। इसके लिये गुरु जी ने एक कसौटी बनाया है :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ *(पन्ना ६३३)*

जो पुरुष हर्ष, शोक से सर्वथा परे हो चुके हैं उन्होंने संसार के परम तत्व को जान लिया है, लेकिन यह स्थिति इतनी सरल नहीं है। इसके लिये माया, मोह, अहं आदि विकार बाधक हैं जो मानव को उसके मोक्ष पद से अलग करते हैं और ईश्वर को पाने में रुकावट बनते हैं। गुरु जी ने मोक्ष-प्राप्ति हेतु मोक्ष की अवस्थाओं को अपनी बाणी में परिलक्षित करके मन की प्रबलता और चंचलता का चित्रण कर उसका मार्गदर्शन किया है। उन्होंने अपने को संबोधन

करके मनुष्य को बार-बार उपदेश दिये हैं। मनुष्य को भय और लोभ द्वारा संसार की नश्वरता दिखाकर, उसमें वैराग्य-भाव भरकर साधु-संगति, गुरु-भक्ति एवं ईश्वर-स्मरण के लिये प्रेरित किया है। वास्तव में ईश्वर-प्राप्ति ही शाश्वत अभय या निर्भय पद है। इसके मिलने पर वह पुरुष न किसी से डरता है, न किसी को डराता है। इसी अवस्था को श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने ज्ञान की स्थिति कहा है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ *(पन्ना १४२७)*

इसे ही गुरबाणी में मुक्त-अवस्था, ब्रह्मज्ञानी आदि संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। इसे ही भारतीय परंपरा में भक्ति, मोक्ष अथवा परम पद कहा गया है। मोह-माया से निवृत्ति एवं धर्माचरण में प्रवृत्ति श्री गुरु तेग बहादर साहिब के वैराग्य के विशिष्ट लक्षण हैं।

देखा जाये तो यही वैराग्य का वास्तविक रूप है। वैराग्य वास्तव में जीवन अथवा संसार से पलायन नहीं है, इसका चरम लक्ष्य एवं आदर्श ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करना होगा। श्री गुरु नानक देव जी ने भी इसी प्रकार के वैराग्य को धारण किया था और इसी के महत्व का निरूपण किया था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भी वन में जाकर ईश्वर को खोजने का स्पष्ट शब्दों में खंडन किया है और इस बात पर बल दिया है कि संसार में कमलवत् अलिप्त-भाव से रहना चाहिये तथा अंतर में स्थित पारब्रह्म परमेश्वर के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहिये :

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

ईश्वर-मिलन में सबसे बड़ा बाधक **'हउमै'** को माना गया है। क्षणिक सुख मानव को माया में लिप्त होने में बाध्य करते हैं। सांसारिक सुखों से निवृत्ति के लिये माया-मोह के मिथ्यात्व का अवबोधन कराना पड़ता है, तभी उसके प्रति अनासक्ति होगी और धर्माचरण में प्रवृत्ति बढ़ेगी। धर्माचरण जितना दृढ़ बन जायेगा संसार के प्रति विरक्ति भाव भी उतना दृढ़ होता जायेगा। मिथ्यात्व का ज्ञान होने पर ही उसके प्रति अनासक्ति भाव उत्पन्न होता है। ज्ञान के बिना वैराग्य दृढ़ नहीं होता। इसके लिये सबसे बड़ा कारण यह नाना रूपात्मक जगत है जो हमारी अनेक वासनाओं को तुष्ट करता है। सर्वप्रथम इस बात का बोध होना अनिवार्य है कि संसार स्वप्नवत् है और सर्वत्र माया का प्रसार है। केवल ब्रह्म ही पूर्ण है। जीव इस जगत की माया में लिपटा हुआ है, व्यर्थ जीवन नष्ट कर रहा है। निःसंदेह इसमें लिप्त रहना उचित नहीं। सत्य तो केवल परमात्मा का नाम है। मूर्ख व्यक्ति सत्य को नहीं समझता, इसी लिये उसमें लिप्त रहता है और भटकता है। गुरमुख इस वास्तविकता को पहचान कर, उनसे विरक्त होकर परमात्मा से प्रीति करता है, भवसागर से पार उतरता है और तब वह अनायास ही कह उठता है :

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ *(पन्ना ५३६)*

उसे सभी सम्बंध, यहां तक कि अपना शरीर भी तुच्छ दिखाई पड़ता है। गुरु जी ने कह दिया कि यह शरीर नश्वर है। इससे मोह करना व्यर्थ है। मनुष्य को इस शरीर की सुंदरता व शक्ति पर गर्व होता है, अपने वैभव एवं परिवार पर अभिमान होता है, इसी के कारण वह ईश्वर का भय नहीं मानता। यहां

तक कि धरती और सम्पत्ति भी यहीं रह जायेगी। शरीर के छूटने पर कुछ भी साथ नहीं जायेगा। इनसे आसक्ति रखना व्यर्थ है। उनका फरमान है :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥
(पन्ना १४२९)

तथा:

धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ *(पन्ना १२३१)*

यहां तक कि गुरु जी ने मनुष्य को मृत्यु का भय दिखाकर सांसारिक मोह-माया से विरक्त रहने का संदेश दिया। इसी भय से उन्होंने ईश्वर-स्मरण को एक महत्वपूर्ण साधन बताया है, जिससे उसका यम का त्रास मिटे। भगवत्-भक्ति में लीन प्राणी को ऐसे ही उपाय करने चाहिये। नि:संदेह वह उपाय वैराग्य ही हो सकता है। भगवान के भजन के बिना यहां स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। सांसारिक प्रलोभनों के प्रति अनासक्ति से ही विमल वैराग्य का उपाय होता है। वह वैराग्य ही सांसारिक विकारों की निवृत्ति और धर्माचरण की प्रवृत्ति का मार्ग है। इस प्रकार के विमल वैराग्य को धारण करने वाला व्यक्ति ही उस पूर्ण ब्रह्म को पा सकता है। वास्तव में वही सुखी है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में वैराग्य भावना के दो ही महत्वपूर्ण पक्ष परिलक्षित होते हैं : प्रभु-महिमा (नाम-महिमा) एवं सतसंगत की महिमा। नि:संदेह वैराग्य का नया दृष्टिकोण उनकी अनुभूति और उनकी उदार दृष्टि का परिचायक है। उनके लिये वैराग्य निष्क्रियता अथवा पलायन नहीं है, न ही निराशा अथवा उदासीनता का परिचायक है, वह विशुद्ध धर्माचरण की सतत् प्रेरणा है।

आपका पत्र मिला

'गुरमति ज्ञान' ही सर्वोत्तम उपहार

मेरे मन में सदैव यह विचार आता था कि किसी मित्र एवं प्रियजन को उपहार क्या भेजा जाये? कभी विचार आता कि कोई बहुमूल्य वस्तु भेज दूं। नहीं, बहुमूल्य वस्तु नहीं, क्यों न अपनी हैसियत मुताबिक दो-पहिया वाहन ही भेंट करूं? यह विचार भी गले नहीं उतरा। एक नया विचार आया कि क्यों न इस युग के मुताबिक कंप्यूटर ही दूं, यही एक सर्वोत्तम उपहार होगा। इसी असमंजस में था कि मुझे मेरी मासिक पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' प्राप्त हुई, जिसका मैं आजीवन सदस्य हूं। मैं उसके पृष्ठ पलटने लगा। ज्यों ही पृष्ठ ५१ सामने आया उस पर छपे एक छोटे-से संदेश ने मेरे मन का बोझ हल्का कर दिया। मुझे मेरी चिर समस्या का समाधान प्राप्त हो गया। इस संदेश में मेरी समस्या का सटीक उत्तर छपा था अर्थात् 'उपहार ऐसा जो सदैव याद रहे' और जिसकी स्मृति जीवन-पर्यंत बनी रहे। वाकई जाना कि ऐसा उपहार तो 'गुरमति ज्ञान' मासिक पत्र के अतिरिक्त और हो ही नहीं सकता। मेरा मन गदगद हो गया और मैंने प्रण किया कि मैं अब किसी प्रियजन के जन्म-दिन अथवा किसी सुअवसर पर 'गुरमति ज्ञान' मासिक पत्र ही उनके नाम मंगवा कर भेंट करूंगा, जो जीवन-सुधार में सार्थक एवं जीवन-मार्गदर्शन में शत-प्रतिशत एक उत्तम प्रयास साबित होगा। मैं संपादक महोदय का तहेदिल से आभारी हूं जिन्होंने यह सुझाव दिया। मैं एक बार फिर संपादक जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

-महेंद्र सिंघ बग्गा, राजस्थान, मो ९८२९०९८१७७

जगत की चादर - श्री गुरु तेग बहादर

-स. गुरदीप सिंघ*

'हिंद दी चादर' से भाव है 'हिंदोस्तान की इज्जत के रक्षक'। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सम्बंध में ऐसा विचार ज्ञानी गिआन सिंघ ने अपनी कृति "पंथ प्रकाश" में दिया है। इसके अतिरिक्त अन्य साखीकारों ने गुरु साहिब को 'धर्म की चादर' या 'जगत की चादर' कहा है। गुरु साहिब समस्त संसार के सांझे थे। इस पक्ष में उनको 'जगत की चादर' कहना बनता है।

जगत की इज्जत तभी रह सकती है जब संसार में नेकी और सच्चाई अर्थात् धर्म का बोलबाला हो और धर्म में सेंध मारने वाली शक्तियों का विनाश हो। औरंगजेब ऐसी ही शक्ति थी। औरंगजेब ने अपने पिता, भाइयों, अनेकों हिंदुओं, फौजों, जनरैलों का कत्ल करवाया था। मुसलमानों के बीच अपनी धाक जमाने के लिए उसने अपनी जुल्म की तलवार को हिंदुओं की तरफ घुमा दिया, जजिया कर सख्ती से लागू किया। जबरदस्ती और लालच देकर हिंदुओं को मुसलमान बनाना, मंदिरों की तोड़फोड़, संस्कृत पढ़ना, हिंदू बहू-बेटियों को डोली में से निकाल कर अपने हरम में ले जाना, जान-बूझ कर बछड़ों की खाल में पानी की सप्लाई करना आदि शुरू कर दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपना बलिदान देकर जहां इस बेलगाम शक्ति पर रोक लगाई वहीं धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांत पर भी पहरा दिया, इसलिए उन्हें 'धर्म की चादर' भी कहा जाता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हजूरी कवि सेनापति (सेणा सिंघ) ने "श्री गुर सोभा" में उपरोक्त विचारों को इस प्रकार प्रकट किया है:

प्रगट भए गुरू तेग बहादर।
सगल स्रिसिटि पे ढापी चादर।
करम धरम की जिन पति राखी,।
अटल करी कलिजुग मै साखी।
सगल स्रिसिटि जा को जस भयो।
जिह ते सरब धरम बचायो।
तीन लोक मै जै जै भई।
सतिगुर पैज राखि इस लई।५।

आप जी आरंभ से ही संत-स्वरूप, विचारवान, निडर व त्यागी स्वभाव के मालिक थे। सन् १६३४ में आपका विवाह करतारपुर (जलंधर) निवासी श्री लालचंद जी की सपुत्री बीबी गुजरी जी के साथ हुआ। अक्तूबर १६६५ में आपने अनंदपुर साहिब नगर बसाया।

कशमीर ब्राह्मणों का केंद्र था। कशमीरी पंडित हिंदू धर्म के अग्रणी माने जाते थे। औरंगजेब का विचार था कि यदि इन कशमीरी पंडितों को इसलाम धर्म में लाया जाए तो बाकी हिंदू आसानी से मुसलमान बन जायेंगे। इफ्तखार खां उस समय कशमीर का गवर्नर था। औरंगजेब ने अपनी नीति के अनुसार हिंदुओं को जबरन मुसलमान बनाना और उन पर अमानवीय अत्याचार करने शुरू कर दिए। तंग आकर १६ कशमीरी पंडितों का एक वफद पंडित किरपा राम दत्त मटन निवासी की अगुवाई में अनंदपुर साहिब पहुंचा और श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास जा फरियाद की। पंडित किरपा राम कुछ समय अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अध्यापक भी रह चुके थे और वो गुरु-घर की सुहृदयता तथा लोकहितकारी

***३०२, किदवई नगर, लुधियाना। मो : ९८८८१२६६९०**

भावना से परिचित थे। कशमीरी पंडितों को गुरु जी के पास जाने का सुझाव शायद पंडित किरपा राम ने ही दिया हो। जब पंडितों ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास अपनी फरियाद ले जाने का फैसला किया तो उन्होंने अनुमान लगाया कि औरंगजेब गुरु साहिब के प्रति नेक भावना रखता है, क्योंकि बिना किसी सरकारी रुकावट के गुरु साहिब बंगाल और आसाम की यात्रा कर सिक्खी का प्रचार कर आए थे। दूसरा यह भी कि जयपुर का राजा राम सिंह गुरु साहिब का बहुत सम्मान करता था और राजा राम सिंह के साथ औरंगजेब के सम्बंध बहुत अच्छे थे। तीसरा, गुरु साहिब की शोहरत बहुत दूर-दूर तक फैली थी। गुरु साहिब ने कशमीरी पंडितों के दुख को बड़ी हमदर्दी के साथ सुना:

हाथ जोर कहियो किरपा राम।
दत ब्राहमण मटन ग्राम।
हमरो बल रहयो नहि काई।
है गुरू तेग बहादर राई।

(शहीद बिलास भाई मनी सिंघ)

उनका दुख सुनने के बाद गुरु साहिब ने जब्र, जुल्म और राजसी ताकत के जोर पर किए जा रहे धर्म-परिवर्तन को रोकने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। गुरु साहिब ने औरंगजेब के पास संदेश भिजवा दिया कि यदि वह उनको मुसलमान बना ले तो कशमीरी पंडित और हिंदू स्वयं ही बिना किसी विरोध के इसलाम कबूर लर लेंगे। दिल्ली के चांदनी चौंक में गुरु साहिब को इसलाम कबूल करने के लिए मुगल सरकार की तरफ से कई प्रकार के लालच दिए गए, पर जब गुरु साहिब ने इसलाम कबूलने से स्पष्ट मना कर दिया तो गुरु जी को मौत का डर और अन्य कई प्रकार की यातनाएं देने का सिलसिला शुरू किया गया। गुरु साहिब को सबसे पहले यह कहा गया कि वे इसलाम कबूल कर लें, यदि नहीं तो कोई करामात दिखाएं, नहीं तो शीश देने के लिए तैयार हो जाएं।

गुरु जी ने कहा कि "धर्म छोड़ने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। करामात दिखाना प्रभु के सेवकों को शोभा नहीं देता। हम शीश देने के लिए तैयार हैं।" गुरु साहिब को डराने के लिए भाई मतीदास जी को गुरु जी के सामने आरे से दो हिस्सों में चीर कर शहीद कर दिया। फिर भाई दिआला जी को देग में उबाल कर शहीद कर दिया गया। भाई सतीदास जी को रुई में लपेट कर जिंदा जला शहीद कर दिया गया। इसके बाद गुरु जी को ११ नवंबर, १६७५ को चांदनी चौंक में शहीद कर दिया गया :

धरम हेत साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥ . . .
ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१६॥५॥

(बचित्र नाटक)

जिस समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बेमिसाल कुर्बानी दी उस समय उनके इकलौते सपुत्र श्री (गुरु) गोबिंद राय जी ८-९ साल की उम्र के थे और पूजनीय माता नानकी जी वृद्ध अवस्था में थे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत की तुलना संसार की किसी भी घटना के साथ नहीं की जा सकती क्योंकि यह एक अद्वितीय, अनोखी और आलौकिक घटना थी। इसका कारण यह था कि गुरु साहिब ने धर्म की आजादी की रक्षा के लिए शहादत दी थी। संसार का कण-कण श्री गुरु तेग बहादर साहिब को सिजदा करता है।

नवम पातशाह की महिमा

*-बीबी अमृत कौर**

नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिये दिल्ली, लाल किले के पास चांदनी चौंक में शहीद होकर एक राष्ट्रीय नायक कहलाए। श्री गुरु नानक देव जी ने जिस जनेऊ का विरोध किया उसी जनेऊ और तिलक की रक्षा कर यह सिद्ध किया कि सब धर्म पवित्र हैं और दूसरों के धर्म की रक्षा करना मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है। जन-कल्याण के लिए उनके मन में आत्म-बलिदान की भावना उनके अपने ही लिखे श्लोक में मिलती है : *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥"* चार साल की उम्र में एक बालक को नंगा देखकर अपनी कीमती पोशाक से उसको ढककर यह सिद्ध किया कि वे कितने परोपकारी और दानी थे। अंत में अपनी शरीर रूपी चादर से उन्होंने भारतवासियों को मुगलों के अत्याचारों से बचाने हेतु सबको ढक लिया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब सिक्खों के छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सबसे छोटे और लाडले फरजंद थे। आपका बचपन का नाम तिआग मल था। बचपन से ही आप शांत व प्रभु-चिंतन में मगन रहते। बाबा बुड्ढा जी व श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की देखरेख में आपने शस्त्र-विद्या सीखी। करतारपुर में अपने पिता के साथ रह आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। आप एक आज्ञाकारी पुत्र थे। १४ वर्ष की आयु में मुगलों के साथ हुए करतारपुर के युद्ध में तेग लेकर, चपल घोड़े पर बैठ इतनी बहादुरी से लड़े कि मुगलों को मुंह की खानी पड़ी। हर कोई आपकी वीरता और साहस का बखान कर रहा था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आपका नाम 'तिआगमल' से 'तेग बहादर' रख दिया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरु-पदवी अपने पोते श्री गुरु हरिराय साहिब (सपुत्र बाबा गुरदित्ता जी) को दी और अपने पुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब को बकाला गांव (जहां उनका ननिहाल था) जाने का आदेश दिया।

गुरु जी माता नानकी और पत्नी माता गुजरी जी के साथ बकाले आकर रहने लगे। वहां आप सांसारिक मोह-माया से मुक्त हो हर समय एक कमरे में बैठ प्रभु-चिंतन में लगे रहते।

आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली की संगत का कल्याण करते हुये ज्योति-जोत समाते वक्त वचन किया कि अगले गुरु 'बकाला' में होंगे। संगत जब बकाले पहुंची तो वहां पर कई गुरु बने बैठे थे। भाई मक्खण शाह ने (जिसका जहाज गुरु जी को हाजिर जानकर अरदास करने से डूबने से बच गया था) सच्चा गुरु ढूंढ ही लिया। जब उसने गुरु जी को पांच मुहरों की भेंट चढ़ाई तो गुरु जी ने कोमल स्वर से पूछ ही लिया कि "तुम्हारी मनौती तो पांच सौ मुहरों की थी, बाकी कहां हैं?" यह सुनते ही वह गुरु-चरणों पर गिर पड़ा और दौड़ता हुआ घर की छत पर चढ़ गया तथा पूरी ताकत से पुकार-पुकार कर घोषणा करने लगा "गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे! . . ."

**६५८/१०, पंजाब माता नगर, लुधियाना-१४१०१३, फोन : ०१६१-२५६४४९८*

संगत अब बहुत खुश थी। सब तरफ खबर पहुंच गई कि अब नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब होंगे। माता नानकी जी बहुत खुश हुईं। एक कवि ने सच ही कहा :

तब मंजी सब ही छिप गई।
तेज तरन ते जिउं नस गई।
यों प्रगटे गुरु तेग बहादर।
जन अपने की राखी चादर।

गुरु जी की प्रतिभा बहुमुखी थी। वे रहस्यवादी, वैरागी, क्रांतिकारी, संत-सिपाही और एक अच्छे कवि व संगीतकार थे। उन्होंने १५ रागों में बाणी रची जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। आप जी ने मनुष्य और उसके मन को समझाने को कहा है कि संसार की झूठी प्रीत में न फंसे, लोभ-मोह को त्याग, उस परमात्मा का शुक्र करते हुये 'उसे' हर समय याद करे।

गुरु जी ने धर्म-यात्री के रूप में लंबी यात्राएं कीं। निराश देशवासियों के मन में उत्साह जगाया ताकि लोग प्रत्येक संकट का बहादुरी और साहस से सामना करें तथा अपने धर्म से विमुख न हों। लोगों में आत्मगौरव की भावना भरी। वे एक सच्चे कर्मयोगी तथा एक विनम्र समाज-सुधारक थे। वे अपने हित से ज्यादा मानव-हित का ध्यान रखते थे। शरण में आए लोगों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर कर्म और धर्म की रक्षा की। उनका जीवन महान है। श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में:

तेग बहादर, हां, वे ही थे, पंचामृत सर के घरविंद।
तेग बहादर, हां, वे ही थे, जिनसे जनमे गुरू गोबिंद।
तेग बहादर, हां, वे ही थे, भारत की माई के लाल।
तेग बहादर, हां, वे ही थे, जिनका कुछ कर सका न काल।

कविता

वतन का गीत

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

वतन की मिट्टी से पैदा, खूं रगों में बह रहा।
वतन की आबो-हवा का, कर्ज हमसे कह रहा।
वतन में पैदा हुए हम, वतन ने पाला हमें।
वतन की खातिर जियेंगे, वतन की खातिर मरें।
वतन के हम काम आयें, यह हमारी आरजू।
वतन की ही आबरू में, है हमारी आबरू।
देश की इज्जत हमारी, आन-बान औ शान है।
देश की एक आह पर, यह जान भी कुर्बान है।
जो देश को ऊंचा उठाने में, लगा दे जिंदगी।
हिंद का बंदा वही है, जिसकी ऐसी बंदगी।
देश जैसी सभ्यता, संसार में मिलती नहीं।
नेमतें कुदरत की सारी, सिर्फ दिखती हैं यहीं।
देश पर है नाज़ हमको, देश से बेहद मुहब्बत।
भारत है जीनत जहां की, भारत है दुनिया की जन्नत।
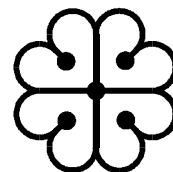
**४० बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ०९४११६०७६७२*

ग्लोबल वार्मिंग और प्रकृति प्रेम

*-बीबी जसपाल कौर**

आज हमारे सामने ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर चुनौती है जिससे मानव-समाज के अस्तित्व पर एक गंभीर संकट पैदा हो रहा है। धरती के निर्ममतापूर्वक दोहन से खनिज पद्धार्थों के समाप्त होते स्रोत, खाद्य-पदार्थों की कमी, वन-संपदा का विनाश, जल-स्रोतों का कम होते जाना, धरती की उर्वरा-शक्ति में कमी, उर्जा संकट, गैसों के रिसाव एवं अनु आयुधों के विकरणी दुख के कारण वातावरण दूषित होता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आज हम अपनी पूर्व परिचित दुनिया में न रहकर अगणित झंझावतों में घिरे किसी "लाक्षागृह" में रह रहे हैं।

पृथ्वी के चारों ओर उपस्थित संसाधन ही हमारे पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु महत्वपूर्ण स्रोत हैं। धरती को 'माता' कहकर संबोधित किया गया है और प्राकृतिक शक्तियों को वंदनीय माना गया है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील जागरूकता चिर काल से मिलती है। मनुष्य को 'धरती माता का पुत्र' तक कहा गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जपु जी साहिब के श्लोक के अनुसार *"पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु"* अर्थात् चारों ओर बहने वाली यह पवन हमारी गुरु है, पानी हमारा पिता है और धरती हमारी माता है। यह भाव केवल इसी लिये अभिव्यक्त किया गया है कि धरती माता हमारी व सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियों की जननी व पोषक है। प्राचीन काल में मानव प्रकृति के प्रति संवेदनशील तो था ही साथ ही उसके सौंदर्य बोध को भी विकसित करता था। उसे धरती का सौंदर्य इतना प्रिय था कि उसे अनंत काल तक देखते रहने की कामना करता था।

विभिन्न धर्मों में प्रकृति से प्रेम को स्वीकार किया गया है। प्रकृति को संजोने, संवारने को मानव का पुनीत कर्त्तव्य माना गया है। खुदा को सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है और बंदे को उसका पुजारी। सभी धर्मों में प्रकृति की रक्षा करने की बात कही गयी है। वृक्ष, जल, वायु और अग्नि को परमात्मा की शक्तियां माना जाता है। जीवों पर दया और मानव-मात्र से प्रेम का संदेश दिया जाता है। "जीओ और जीने दो" पर बल दिया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रकृति से प्रेम का वर्णन करके हरे-भरे वृक्ष को आनंद का प्रतीक माना गया है :

--बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥
(पन्ना ११७६)

--बिरखु जमिओ है पारजात ॥
फूल लगे फल रतन भांति ॥ (पन्ना ११८०)

पृथ्वी तथा प्राकृतिक शक्तियों के बीच बने संतुलन पर ही मानव का अस्तित्व निर्भर है। यदि प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा जाएगा तो मानव का अस्तित्व भी काल-ग्रसित हो जायेगा। संभवत: यही कारण है कि हमारे महामानवों ने धरती तथा उसके प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का संदेश दिया है। प्रकृति का मानव के साथ जो गहन रिश्ता प्राचीन ग्रंथों में दर्शाया गया है वैसा अन्य स्थानों पर मिलना दुर्लभ है। इस धरती पर विभिन्न प्रकार के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कई जीवन दिखाई देते हैं, परंतु जिस निर्दयता के साथ हम इस धरती माता को

***२३५, गुरु नानक पुरा, आदर्श नगर, जयपुर-३०२००४, मो : ९४१३४१८००४*

लूट रहे हैं, वही हमारे लिये ग्लोबल वार्मिंग का कारण है।

प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग असमय मानव-विनाश का प्रतीक है। यदि हम इन प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण नहीं करेंगे तब भावी पीढ़ी के लिये हमारे पास कुछ भी शेष नहीं बचेगा। हमारी अनंत आवश्यकताओं की पूर्ति धरती ही करती है। इसके अस्तित्व को बचाकर रखने के लिए हमें सभी संभव प्रयास करने होंगे। इतिहास इस बात का गवाह है कि मानव के क्रूर हाथों से सम्पन्न हुई विनाश-लीला में कितनी ही जीव-प्रजातियां नष्ट हो गई हैं तथा कई अन्य विनाश के कगार पर खड़ी हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में ग्लोबल वार्मिंग से सुरक्षा हेतु व्यापक जन-चेतना का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। नये-नये अनुसंधानों तथा प्रयासों से विश्व स्तर पर पर्यावरण को संरक्षित करने की कोशिश की जा रही है।

विभिन्न सेमिनारों, सम्मेलनों और गोष्ठियों में यह समस्या विचाराधीन चल रही है। वैज्ञानिक खोज बताती है कि समुद्र की अतल गहराई में वर्षों पूर्व जीवन का जो रूप विकसित हुआ था उसमें सूर्य की किरणों से ही जीवन संचारित हुआ था। वायु को महाशक्ति मानकर सम्पूर्ण शरीर में प्राण वायु की बात कही गई है। भारतीय संस्कृति में जल को भी पवित्र माना गया है। प्राचीन संस्कृतियों का उदय नदियों के किनारे ही हुआ माना जाता है। आज मानव इन नदियों के पवित्र जल में भी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए अपशिष्ट पदार्थ डालकर दूषित कर रहा है।

भारतीय संस्कृति व सभ्यता में वृक्षों की उपमा की गयी है। केला, वट, पीपल, तुलसी जैसे पेड़, पौधे गुणों के भंडार हैं। वृक्ष अपनी उत्पत्ति के साथ ही अनेक रूपों में प्राणी-जगत को कुछ न कुछ देता ही है।

वृक्ष फूल-पत्तों तथा फलों के बोझ को सहन करते हैं, सर्दी-गर्मी भी सहते हैं लेकिन दूसरों के सुख के लिये अपना शरीर सदैव अर्पित करने में नहीं थकते। मजे की बात यह है कि जिस तरह नदियां स्वयं अपना जल नहीं पीतीं, वैसे ही वृक्ष भी अपना फल स्वयं नहीं खाते, वे तो केवल परोपकार करते हैं। लेकिन अफसोस! आज हमारे नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। हम दोनों हाथों से प्रकृति को लूटने में लगे हैं। मनुष्य-जाति व प्रकृति के बीच जो रिश्ता कायम है वह नापाक होता जा रहा है। मानव ने अपने ही कुकृत्यों से पर्यावरण को इस प्रकार दूषित कर दिया है कि आज उस पर्यावरण में जीना दुशवार होता जा रहा है। खाद्य-समस्या, ऊर्जा-स्रोतों की कमी, यहां तक कि दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं भी पूरी करने में मानव असमर्थ हो रहा है। आज न तो जल ही शुद्ध रह गया है और न ही वायु। वायु में जहर, नदियों में जहर, वादियों में जहर, घाटियों में जहर, यहां तक कि मानव-आचरण में भी जहर घुल गया है। भौतिकता की चकाचौंध ने मानवीय रिश्तों को तिलांजलि देकर पाशविकता को गले लगा लिया है। इसी का परिणाम है कि चोरी, डकैती, लूट-खसोट, मारपीट, आतंक की घटनाओं में दिन-प्रतिदिन इजाफा हो रहा है। आज अपने घर पर भी मनुष्य सुरक्षित नहीं है। सम्पूर्ण वसुंधरा के कल्याण के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम यह संकल्प करें कि पृथ्वी तथा उसके संसाधनों को हर संभव प्रयास से संरक्षित करेंगे, वृक्ष नहीं काटेंगे और वर्षा के पानी को संरक्षित करेंगे। इसके साथ ही स्कूली पाठ्यक्रम में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का ज्ञान शामिल किया जाना भी आवश्यक है जिससे बचपन से ही प्रकृति को संरक्षित करने की भावना का विकास हो सके।

कविताएं

कोई गीत ऐसा भी गुनगुनाया जाए!

-डॉ मनजीत कौर*

कोई गीत ऐसा भी गुनगुनाया जाए,
चलो रोते हुओं को हंसाया जाए!
दुनिया की तो यह रीति है प्यारे,
हंसतों के साथ हंसते हैं सारे।
रोतों को सब कर देते हैं किनारे,
गैरों से क्या शिकवा करे कोई?
अपनी आंखें भी आंसुओं को देती नहीं पनाह,
सोचती हैं जल्दी से इन्हें छलकाया जाए!
कोई गीत ऐसा भी . . .
लीक से हट कर कुछ तो करो प्यारो,
न देते रहो जमाने की दुहाई हरदम!
आसमान पर तो किसी का नहीं है ठिकाना,
इसी धरती पर सारे इसी जमाने के हैं हम!
गरीबों का कोई नहीं संगी-साथी,
तो चलो उनका साथ निभाया जाए!
कोई गीत ऐसा भी . . .
अमीर अपनी अमीरी जरा-सी गरीबों में बांट दें,
उनकी अमीरी की चमक न होगी जरा भी फीकी।
पर किसी गरीब को मिल जाएगी दो वक्त की रोटी,
तिनका-तिनका तुम्हारा छत बनेगी किसी की।
जो मिलता नहीं तुम्हें लाखों लुटा कर,
मिलेगा सुकून किसी को दो रोटी खिला कर,
पानी का घूंट किसी प्यासे को पिलाया जाए।
कोई गीत ऐसा भी . . .
बहुत खुले हैं महाविद्यालय-विश्वविद्यालय,
पा ली है कई देशी-विदेशी डिग्रियां हमने,
आओ! अब किसी ऐसी पाठशाला में जाया जाए,
जहां केवल इंसानियत का ही पाठ पढ़ाया जाए।
बड़े-बड़े अस्पताल रोगियों से भरे हैं,
जहां आती नहीं काम महंगी-महंगी दवाएं,
चलो वहां दुआओं से ही काम चलाया जाए!
कोई गीत ऐसा भी . . .
बहुत परखा कसौटी पर दूसरों को हमने,
इस बार खुद को कसौटी पर चढ़ाया जाए।
बहुत सुन ली तारीफें अपनी, बुराइयां दूसरों की,
यह हकीकत है आईना कभी झूठ नहीं बोलता,
इस बार अपने हृदय को आईना बनाया जाए।
निंदा-स्तुति से अब उठ जाएं ऊंचे,
जिससे मिलनी है हमको आत्मिक खुशी,
कोई ऐसा कर्म भी कमाया जाए।
कोई गीत ऐसा भी . . .
बहुत कुछ पढ़ा, लिखा और सुना अब तक,
कोई अक्षर अमल में भी लाया जाए।
तन-मन-धन सब दिया है उसी ने,
शुक्राना करके किश्तों को चुकाया जाए
जल को थल, रंक को राव करने में जो लगाता नहीं पल,
उस कर्म-विधाता को बस, हृदय में बसाया जाए!
उसकी रज़ा में राज़ी रहें हम हरदम,
खारे आंसुओं को भी शहद बनाया जाए।
कोई गीत ऐसा भी गुनगुनाया जाए,
चलो रोते हुओं को हंसाया जाए!

*****२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मोः ९९२९७-६२५२३

आत्म-ज्ञान

हे मानव! तू पाकर मिट्टी की काया,
क्यों बनता है इतना अभिमानी?
अंत समय में रो पछताएगा,
क्षण भर में नष्ट होगा बुदबुदा पानी।
धरती से पैदा हुये हैं हम सब,
राजा, रंक, अमीर, फकीर सब ज्ञानी।
वक्त-बेवक्त अंत हो जायेगी तेरी,
माया, रिश्ता, जीवन-लीला, कहानी।
लोचन पाकर क्यों अंधा हो गया?
कान होते सुनने में क्यों बहरा हो गया?
सच को तुम झूठ क्यों बना रहे हो?
मेरे, मेरा, मेरी राग क्यों गा रहे हो?
मंदिर-मस्जिद ढूंढा डगर-डगर पर,
क्यों तू ढूंढ न पाया भगवान?
जीवन-मुक्ति पंथ ढूंढकर तू,
पा न सका क्यों आत्म-ज्ञान?
धर्म की दी दुहाई मगर, न इसका जाना मर्म।
अनजान मानव! क्यों न समझा सत्य धर्म?

-श्री मनिहर सिंह निराला, एकता चौंक, कटेकोनी, डभरा, जांजगीर-चाम्पा, बिलासपुर, (छत्तीसगढ़)-४९५६८८

जीने की राह

हम किसी से कम नहीं।
रोक सके जो राह हमारी,
इतना किसी में दम नहीं।
दुनिया को हम अपनी राह पर चला लेंगे
देखेगी सारी दुनिया इतना ऊंचा हम जाएंगे
रास्ते के पत्थरों को फूल बनाकर दिखाएंगे
और सभी को रास्ते में कहते जाएंगे
हम किसी से कम नहीं . . .
बुराइयों को मिटाकर सच्चाई को रोशन करेंगे
दिल जो कहेगा बस, हम वही करेंगे
तोड़ कर सारी जंजीरें, बस, आगे बढ़ते ही जाएंगे
और सबको यही बात कहते जाएंगे
हम किसी से कम नहीं . . .
हैं लड़कियां तो क्या हुआ
करेंगी साकार माता-पिता के सपने
अब कुछ बनके सब को दिखाएंगे
सबको अब बस, यही कहते जाएंगे
हम किसी से कम नहीं . . .
इस झूठ-फरेब की दुनिया में
कीचड़ में कमल की तरह खिल के दिखाएंगे
मन-अंतर की सारी शक्तियों को प्रगटाएंगे
और बस, यही कहते जाएंगे
हम किसी से कम नहीं . . .
माता-पिता की आंखों का तारा बनेंगे हम
गरीब, मजलूमों का सहारा बनेंगे हम
हर दम सबसे आगे बढ़ कर दिखाएंगे,
सबको अब बस, यही कहते जाएंगे
हम किसी से कम नहीं।
रोक सके जो राह हमारी,
इतना किसी में दम नहीं।

-मनु शर्मा, पुत्री श्री अशोक कुमार, कक्षा ११, गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, श्री अमृतसर।

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-४३

छंद शास्त्र के प्रकांड विद्वान - कवि गिरधर लाल

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बावन दरबारी कवियों में एक महत्वपूर्ण नाम कवि गिरधर लाल का भी है। कवि गिरधर लाल ने संवत् १७४५ वि. (सन् १६८८ ई) में 'पिंगल सार' नामक ग्रंथ की रचना की।

ग्रंथ 'पिंगल सार' में कवि ने अपने वंश का वर्णन भी किया है। कवि द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार वे भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण हैं और उनके पूर्वज मुलतान के रहने वाले थे। बाद में वे कुछ समय सढौरा में रहे और फिर लाहौर में आकर बस गये। कवि के पूर्वजों में एक अनंतदास थे जिनके पुत्र का नाम द्वारका दास था। मुस्लिम सिपहसालार मुजफ्फर खान द्वारका दास से प्रसन्न होकर उसे अपने साथ आगरा ले गया। इसी वंश में आगे गज मल्ल हुए। कवि गिरधर लाल ने इन्हीं गज मल्ल के घर आगरा में जन्म लिया।

पढ़े-लिखों का परिवार होने के कारण गिरधर लाल को श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त हुई। हृदय राम मिश्र इनके गुरु थे। कवि गिरधर लाल ने गुरु हृदय राम मिश्र से ही काव्य शास्त्र और छंद शास्त्र की शिक्षा ली।

छंद शास्त्र में पारंगत हो जाने के बाद कवि गिरधर लाल ने 'पिंगल सार' ग्रंथ की रचना की। 'पिंगल सार' में इसका रचना-काल आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी संवत् १७४५ वि: दिन सोमवार दिया गया है। कवि ने यह भी लिखा है कि उसने यह ग्रंथ आगरा में रहकर संपूर्ण किया।

इन्हीं दिनों कवि गिरधर लाल को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विद्या दरबार की प्रसिद्धि का पता चला। वह अनंदपुर साहिब आया और अपनी रचना 'पिंगल सार' गुरु जी को सादर भेंट की :

स्री सतिगुर गोबिंद सिंघ, मीर पीर सुख मंड।
राज मद्ध 'गिरधर' करयो, पिंगल सार अखंड।

आजकल 'पिंगल सार' की हस्तलिखित पांडुलिपि भाषा विभाग लायब्रेरी, पटियाला में सुरक्षित है। दरअसल यहां तीन कृतियों को गुरमुखी लिपि में दर्ज करके एक ही जिल्द में बांधा गया है। ये कृतियां हैं--दरबारी कवि अमृतराय का 'चित्र बिलास', पंडित सुखदेव का 'फाजिल अली प्रकाश' और तीसरा है कवि गिरधर लाल का 'पिंगल सार'।

'पिंगल सार' छंद शास्त्र से संबंधित ग्रंथ है जिसमें विभिन्न छंदों के लक्षण-उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं :

आगम निगम भेद पल मैं सुगम कीने,
पिंगल के छंद काव्य करत बखान है।
सुगन विचारबे कउ जुगति सुधारबे कउ,
भगत उधारबे कउ चतुर सयान है।
अंम्रित रसाल बानी, जगत मैं जानै गयानी,
अक्खर को जौहरी बिचखन सुजान है।
कहै गिरधर कवि मिस्र ह्रिदै राम बहु,
गुन के निधान गणपति के समान है।

कवि गिरधर लाल ने 'पिंगल सार' ग्रंथ में कुल ३०८ छंदों का विवेचन किया है :

भयो ग्रंथ पूरन सकल, छंद तीन सै आठ।
सोधो सुबुधि सुधार कै, जह असुध कहूं पाठ।

कवि के अनुसार उसके 'पिंगल सार' में छंदों का गहन ज्ञान मौजूद है :

जो इस 'पिंगल सार' को, पढ़हि गुनहि चित लाइ।
छंद गयान आवहि सकल, गिरधर लाल बताइ।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

आपका पत्र मिला

सिक्खों ने ढाल और तलवार बनकर . .

आजीवन सदस्य बनकर 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका पढ़ता हूं। पत्रिका में गुरु साहिबान की बाणी एवं उनके संघर्षमय कार्य पढ़कर लगता है कि सिक्ख गुरु साहिबान ने मानवता की रक्षा हेतु बड़ा त्याग किया, बड़े बलिदान दिये।

अगर १६वीं-१७वीं शताब्दी में सिक्ख नहीं होते तो शायद भारतीय संस्कृति शेष नहीं रहती। सिक्खों ने ढाल और तलवार बनकर भारतीय संस्कृति की रक्षा की है।

वर्तमान में पूरा देश भ्रष्टाचार में डूबा है। सभी धर्म परिश्रम की कमाई ग्रहण करने पर जोर देते हैं। ईमानदारी, कर्मठता की शिक्षा सभी देते हैं, फिर भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। हर अंक में एक-दो लेख भ्रष्टाचार के विरोध में एवं जो भ्रष्टाचार के विरोध में अलख जगा रहे हैं, उन पर दें तो सर्वोत्तम है। सच्चा धर्म व संस्कृति वही है जो तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु कार्य करती है। इस पर यह पत्रिका भी खरी उतरेगी, ऐसी आशा-विश्वास है। *-सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, हटा, दमोह (म. प्र.)*

रंग ला रही है संपादकीय टीम की मेहनत!

जून माह का विशेषांक समय पर प्राप्त हो गया था। समस्त विशेषांक की तरह यह भी विलक्षणता लिए हुए विविध तथ्यों को उजागर करता बहुत ही प्रेरक अंक है। समस्त लेख गुणवत्ता में एक से बढ़ कर एक हैं। फिर भी संपादकीय, जो कि किसी भी पत्रिका का आईना होती है, इस संदर्भ में सम्पूर्ण अंक की मुंह बोलती तसवीर की सहज अभिव्यक्ति है। मानवतावादी दृष्टिकोण एवं वर्तमान में पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप को संवारने में किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति योगदान दे सकता है, संपादक महोदय ने उसे बहुत ही व्यवहारिक रूप से समझाने का बाखूबी प्रयास किया है। साथ ही जनाब हुसन-उल-चराग जी द्वारा किये गए व्यवहारिक योगदान का जिक्र करके जहां उनकी हौंसला-अफ़जाई की है वहीं पाठकों एवं लेखकों के लिए मिसाल कायम कर इस विशेषांक के मन्तव्य को सफल बनाने हेतु प्रेरित भी किया है।

साथ ही डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ जी का लेख "सतिगुरु गुणी निधान है . . ." में सतिगुरु को पारब्रह्म सदृश्य, रंग रहित बताकर, बताकर शरणागत की रक्षार्थ एवं कल्याणता हेतु सतिगुरु हर क्षण तत्पर हैं, इस भाव को बहुत ही मनोभाव से अभिव्यक्त किया है। साथ ही सहायक संपादक स. सुरिंदर सिंघ जी निमाणा द्वारा सातवें पातशाह की गाथा की कविता रूप में प्रस्तुति आत्मविभोर करने वाली है। "हरेक बुरकी अब दात प्रसाद की है।" मुझे तो हर शब्द ही दाते का प्रसाद प्रतीत हो रहा है इस कविता में। लेकिन इसी पृष्ठ पर नीचे प्रकाशित कविता "सच्चे पातशाह श्री गुरु नानक देव जी" में दूसरी पंक्ति में गलती से 'पाप-अन्याय' की जगह 'पाप-न्याय' छप गया प्रतीत होता है।

अंत में तहे दिल से मुबारक और धन्यवाद! सच में रंग ला रही है आप जी की संपादकीय टीम की मेहनत। 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका 'दिन दुगुनी रात चौगुनी' प्रगति पर है। इस पत्रिका ने हमारा परिवार कितना विशाल बना दिया है! इतने पत्र एवं फोन! आत्मीय रिश्ते कायम करने में यह पत्रिका बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है। वाहिगुरु के चरणों में हर पल अरदास, वाहिगुरु सब पर अपनी रहमत-दृष्टि बनाये रखें! आप इसी तरह सारी दुनिया को गुरमति से जोड़ने का प्रयास करते रहें!

-डॉ. मनजीत कौर, जयपुर।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का विनटक (न्यूजीलैंड) के साथ शिक्षा-समझौता

न्यूजीलैंड २३ जून: शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की तरफ से न्यूजीलैंड के हैमिल्टन शहर में स्थित अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त वाइकाटो इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (विनटक) के साथ किये समझौते के तहत एक विशेष समारोह में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ और विनटक के सी. ई. ओ. मिस. मार्क फलाअर ने मैमोरंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग पर हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि कमेटी के शिक्षण संस्थानों में पढ़ रहे छात्रों को विश्व स्तर के शिक्षा अवसर उपलब्ध कराये जाएंगे। इसके साथ जहां हमारे छात्रों को रोजगार के अधिक अवसर मिलेंगे वहां भारत और न्यूजीलैंड का सांस्कृतिक तथा सामाजिक मेल-मिलाप भी मजबूत होगा। सिक्ख धर्म का बुनियादी सिद्धांत अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ जुड़ा हुआ है। जत्थेदार अवतार सिंघ के अतिरिक्त इस डेलीगेशन में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के डायरेक्टर ऐजूकेशन डॉ. गुरमोहन सिंघ, डॉ. धरमिंदर सिंघ, प्रिंसीपल, खालसा कॉलेज, पटियाला और डॉ. मनोहर सिंघ, डायरेक्टर, गुरु नानक इंजीनियरिंग कॉलेज, लुधियाना भी शामिल थे।

'सिक्ख नसलकुशी' के दर्द को भुलाया नहीं जा सकता

श्री अमृतसर ३० जून: भारत के गृहमंत्री श्री पी. चिदंबरम द्वारा सिक्खों को १९८४ में हुई 'सिक्ख नसलकुशी' को भूल जाने तथा दोषियों को माफ किए जाने के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि देश के गृहमंत्री का यह बयान सिक्खों के २७ वर्ष के हरे जख्मों पर नमक छिड़कने के तुल्य है और इससे सिक्ख भाईचारे की भावनाओं को भारी ठेस पहुंची है। इसके लिए गृहमंत्री को माफी मांगनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज भी जब 'सिक्ख नसलकुशी' की इस भयानक दासतां के हृदयबेधक दृश्य आंखों के सामने आते हैं तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं। केंद्र सरकार द्वारा पीड़ित सिक्ख परिवारों को इंसाफ तथा दोषियों को सजा देने की बजाय उच्च पद देकर निवाजा गया। उन्होंने कहा कि भारत में सिक्खों के साथ इंसाफ को लेकर दोहरे मापदंड अपनाए जाते हैं, जो भारत के लोकतांत्रिक मखौटे को मुंह चिढ़ा रहे हैं।

शीघ्र तैयार होगा आधुनिक सुविधायों वाला 'सारागढ़ी निवास'

श्री अमृतसर ३० जून: रूहानियत के केंद्र श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनार्थ आने वाली संगत को रिहायश की और अधिक सुविधा प्रदान करने के लिए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा शहर में विभिन्न स्थानों पर आधुनिक सुविधाओं वाली सराय तैयार करवाए जाने के उद्देश्य से

गुरुद्वारा साहिब सारागढ़ी के साथ वाली जगह पर 'सारागढ़ी निवास' के निर्माण-कार्य की आरंभता अरदास करने के बाद की गई।

सराय के निर्माण-कार्य की आरंभता पांच प्यारों के रूप में श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी मान सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी रवेल सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ तथा श्री अकाल तख्त साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमुख सिंघ ने की।

इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि खालसाई भवन कला को प्रदर्शित करती बेसमेंट सहित दस-मंजिला इमारत वाली इस सराय में छोटे-बड़े आकार के कुल २३८ कमरे होंगे जिसमें एक समय में लगभग दो हजार यात्री निवास कर सकेंगे। बेसमेंट को पार्किंग के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। २५ करोड़ की लागत से यह सराय लगभग १८ महीनों में बनकर तैयार हो जाएगी। उन्होंने बताया कि आधुनिक तकनीक के अनुसार यह इमारत 'ग्रीन बिल्डिंग' द्वारा डिजाइन की गई है।

श्री गुरु रामदास लंगर हाल की इमारत का विस्तार करने हेतु निर्माण-कार्य का शुभारंभ

श्री अमृतसर ११ जुलाई: श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनार्थ देश-विदेश से आने वाली संगत की संख्या में हो रही निरंतर बढ़ोत्तरी के मद्देनजर श्री गुरु रामदास लंगर हाल की मौजूदा इमारत का विस्तार करने हेतु पांच सिंघ साहिबान की उपस्थिति में अरदास करने के बाद शुभारंभ किया गया। शुभारंभ अवसर पर शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ तथा पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल भी उपस्थित थे।

शिलान्यास की रस्म अदा होने के बाद स. प्रकाश सिंघ बादल ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि श्री गुरु रामदास लंगर हाल के विस्तार हेतु आधुनिक सुविधाओं वाली इस इमारत का शुभारंभ किया जाना हमारे लिए गर्व वाली बात है। इस अवसर पर उन्होंने शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष को मुबारकवाद भी दी।

इस मौके पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री गुरु रामदास लंगर हाल के साथ बनाई जा रही इमारत पर २० करोड़ रुपए खर्च होंगे तथा इसके १८ महीने में तैयार हो जाने की संभावना है। उन्होंने बताया कि यह इमारत वातानुकूलित होगी तथा इसमें लंगर तैयार करने के लिए बिजली, गैस तथा जल-आपूर्ति हेतु अति आधुनिक किस्म के उपकरण लगाए जाएंगे तथा प्राकृतिक रोशनी का प्रबंध भी होगा। गरम पानी के इस्तेमाल तथा बिजली की बचत हेतु सोलर सिस्टम का इस्तेमाल किया जाएगा।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२०११